



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 169]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 29, 2007/आषाढ़ 8, 1929

No. 169]

NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 29, 2007/ASADHA 8, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 जून, 2007

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. एवं थाईलैंड के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित बायस टायरों के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/9/2005-डीजीएडी.-1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए ।

2. चूंकि ऑटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) (जिसे एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान), उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष एक आवेदन पत्र दाखिल किया है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य और थाईलैंड (जिन्हें एतदपश्चात् "संबद्ध देश" अथवा चीन और थाईलैंड कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित बस एवं लॉरी/ट्रकों के लिए बायस टायरों (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु अथवा बायस टायर कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया था और इन संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए पाटनरोधी जांच शुरू करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 5(5) के अनुसार पाटन के आरोप की प्राप्ति के संबंध में चीन जन. गण. और थाईलैंड के दूतावासों को सूचित किया।

3. और चूंकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर पर्याप्तता एवं यथार्थता के संबंध में इसकी जांच करने के पश्चात् दिनांक 30 दिसम्बर, 2005 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया था जिसे भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित किया गया था जिसमें कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा एवं प्रभाव और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि जिसे यदि लगाया जाता है तो वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी, की अनुशांसा करने की जरूरत का निर्धारण करने के लिए नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी ।

4. और चूंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 31 जुलाई, 2006 की अधिसूचना सं. 14/09/2005-डीजीएडी के द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित किया और चीन जन. गण. एवं थाइलैण्ड के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की।

क. प्रक्रिया

5. इस जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है :

- (i) 30 दिसम्बर, 2005 को निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी भी कहा गया है) ने उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत चीन जन. गण. तथा थाइलैण्ड (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित बायस टायर्स के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए एक जांच शुरूआत अधिसूचना जारी की जो भारत के राजपत्र में प्रकाशित हुई। घरेलू उद्योग की ओर से उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन के बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाले ऑटोमोटिव टायर मैन्बूफैक्चरर एसोसिएशन (एटीएमए) (जिसे एतदपश्चात आवेदक कहा गया है) से प्राप्त आवेदन के बाद पाटनरोधी प्रक्रिया शुरू की गई थी। आवेदन में उक्त उत्पाद के पाटन संबंधी साक्ष्य तथा उससे हुई क्षति से संबंधित साक्ष्य थे जिन्हें प्रक्रिया की शुरूआत को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त माना गया था।
- (ii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप- नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले आवेदक द्वारा दिए गए पाटन संबंधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देश के राजदूतावास को सूचना दी थी।
- (iii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उक्त जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां नियम 6 के उप नियम (2) के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावास, ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों तथा आवेदक को भेजी थीं और उन्हें लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया था।
- (iv) प्राधिकारी ने नियम 6 के उप नियम (3) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों एवं चीन जन. गण. तथा थाइलैण्ड के राजदूतावासों को आवेदन पत्र के अगोपनीय अंश की प्रतियां उपलब्ध करायी थीं। नियम 6 के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों तथा चीन जन. गण. और थाइलैण्ड के दूतावासों को संगत प्रश्नावली की प्रति प्रदान की थी। नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य और थाइलैण्ड के राजदूतावासों को जांच शुरूआत के संबंध में इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई थी कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को विनिर्दिष्ट समय के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने की सलाह दें। निर्यातकों के नाम एवं पतों के साथ निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्रों एवं प्रश्नावली की एक प्रति भी उनको भेजी गई थी।
- (v) आवेदक ने प्राधिकारी को वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ चीन को एक गैर- बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानने का अनुरोध किया था। जांच शुरूआत के प्रयोजनार्थ आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार श्रीलंका को एक उपयुक्त तीसरे बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मान लेने के बाद श्रीलंका में संबद्ध वस्तुओं की कीमत के आधार पर चीन जन. गण. में सामान्य मूल्य पर विचार किया गया था। प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को यह सूचित किया था कि यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- 1 के पैरा 7 एवं 8 के आलोक में आवेदक के दावे की जांच किए जाने का प्रस्ताव है। इसलिए चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों को पैराग्राफ 8 के उप- पैराग्राफ (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी ताकि प्राधिकारी यह विचार कर सकें कि

क्या उन सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जाना चाहिए जो यह प्रदर्शित कर सकते थे कि वे उक्त पैराग्राफ में निर्धारित मानकों को पूरा करते हैं। बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने के लिए एक प्रश्नावली चीन में सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों और चीन जनवादी गणराज्य के राजदूतावास को अग्रेषित की गई थी।

- (vi) प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी;

चीन:

1. येलो सी टायर्स
डोंग हाई रोड क्विंगडाओ, चीन
2. शैंगडोंग हांगशेंग रबड़ कं. लि.
डावांग इंडस्ट्री जोन, गुआंगराओ,
शैंगडोंग, चीन पी. सी.- 257335
3. क्विंगडाओ डबलस्टार टायर इंडस्ट्रियल कं.,
नं. 95, क्विंगडाओ रोड, जिआओनान,
डेवलपमेंट एरिया, चीन
4. क्विंगडाओ तेंगजियांग टायर कं. लि.
नं. 425 बिल्डिंग सी, क्विंगडाओ वर्ल्ड ट्रेड सेंटर,
एच. के. मिडल रोड,
क्विंगडाओ, चीन- 266071
5. शैंगडोंग चेंगशान टायर कं.
11, रोंगएन रोंगचेंग सिटी, शैंगडोंग प्रोविन्स, चीन
6. चायोंग लांग मार्च टायर कं. लि.
नं. 1, जियांगयेंग रोड, लोंगचेंग डिस्ट्रिक्ट,
चायोंग सिटी, लायनिंग प्रोविन्स, चीन
7. ट्राएंगल टायर कं. लि.
नं. 56, क्विंगडाओ मिडल रोड,
वेहाई, शैंगडोंग, चीन
8. शैंगडोंग जिन्यू टायर कं. लि.
1504 किलीमैन्शन, नं. 2 नानजिंग रोड, क्विंगडाओ, शैंगडोंग, चीन
9. क्विंगडाओ, येलो सी रबड़ ग्रुप कं.
क्विंगडाओ रबड़ इंडस्ट्री पार्क, हांगटैन, चेंग येंग डिस्ट्रिक्ट, क्विंगडाओ, चीन

10. शैंगडोंग योंगटाई केमिकल ग्रुप लि.
डावांग रबड़ इंडस्ट्री एरिया, गुवांगराओ, डोंगयिंग,
शैंगडोंग, चीन जन. गण.
11. शैंगडोंग लिंगलॉग रबड़ लि.
नं. 170 जिनचेंग रोड, झाओयुआन सिटी,
शैंगडोंग, चीन- 265400
12. गुआंगझोऊ पर्ल रिवर रबड़ टायर लि.
तान्बू, हुआङ्ग, गुआंगझोऊ 510828, चीन
13. हेनान टायर कं. लि.
48 जियाओडोंग साऊथ रोड, जियाङ्ग, हेनान, चीन

थाईलैंड

1. हाईहीरो कं. लि.,
408/63-64 फाहोलियोथिन रोड,
समसेन्नाई, फायाथाई डिस्ट्रिक्ट, बी के के 10400, थाईलैंड
2. थाई ब्रिजस्टोन कं. लि.
14/3 फाहोलियोथिन रोड, टी. कलॉगनुएंग,
ए. कलॉग लुआंग, पाथुमथानी, थाईलैंड 12120
3. ओटानी टायर कं. लि.
55 एमयू 7, पेचकासेम के. एम. 37 रोड,
टी कलॉगमाई, ए. सम्प्रान, नाकोरनपैथोम, थाईलैंड

- (vii) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध निर्यातकों में से किसी ने भी विनिर्दिष्ट समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया था। मै. शौगडोंग जिन्यू टायर कं. लि. ने अपना पहला जवाब दिनांक 21 जून, 2006 को दाखिल किया था जो अत्यधिक त्रुटिपूर्ण था। अतिरिक्त सूचना दिनांक 21 जुलाई, 2006 को उपलब्ध करायी गयी थी जो प्रारंभिक जांच परिणाम में दबए गए विवरण के अनुसार अपूर्ण थी। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद उन्होंने पर्याप्त सीमा तक त्रुटियों को दूर करके उत्तर प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर प्राधिकारी ने मौके पर सत्यापन करने का निर्णय लिया। यद्यपि जवाब देर से प्रस्तुत किया गया था, तथापि प्राधिकारी ने उसकी जांच करना उचित समझा। थाईलैंड के थाई ब्रिजस्टोन कं. लि. ने सूचित किया कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया था। थाईलैंड के किसी भी अन्य निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया।

- (viii) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की मांग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों एवं प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली सहित जाँच शुरूआत अधिसूचना की प्रति भेजी गई थीं।

आयातक

मै. चड्ढा टायर ट्रेडर्स
मै. काक्स एंड बिल्स प्रा. लि.
मै. अनिरुद्ध इंडस्ट्रीज
मै. विकास रोड कैरियर्स
मै. इंटरनेशनल ट्रेडर
मै. एएए इम्पेक्स
मै. जमनादास एंड ब्रदर्स

प्रयोक्ता

मै. टाटा मोटर्स लि.
मै. वोल्वो इंडिया प्रा. लि.
मै. अशोक लीलैंड लि.
मै. आयशर मोटर्स लि.

- (ix) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में केवल मै. टाटा मोटर्स जो संबद्ध उत्पाद का एक प्रयोक्ता है, ने जवाब दिया है। लेकिन कंपनी ने प्रश्नावली का कोई जवाब दाखिल नहीं किया है, न ही उन्होंने संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पाद का आयात किया है। टाटा मोटर्स के अलावा, आटोमोटिव टायर इम्पोर्टर्स एसोसिएशन (एटीआईए), ऑल इंडिया टायर डीलर्स फेडरेशन (एआईटीडीए), आल इंडिया कन्फेडरेश ऑफ गुड्स व्हीकल ऑनर्स एसोसिएशन (एसीओजीओए) ने अपने निवेदन दाखिल किए हैं। मै. इंटरनेशनल ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली; एस. के. इंटरनेशनल, नई दिल्ली; मै. विकास रोड कैरियर्स, नई दिल्ली; मै. काक्स एंड बिल्स प्रा. लि., नई दिल्ली, आयातक ने प्रश्नावली के प्ररूप में उत्तर दिया है। एटीआईए, एआईटीडीए और एसीओजीओए अथवा उनके सदस्यों ने भी प्रश्नावली में सूचना दाखिल नहीं की है लेकिन उन्होंने पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के विरुद्ध अपना तर्क दिया है जिस पर इन जांच परिणामों में विचार किया गया है। तथापि, याचिकाकर्ता ने इस आधार पर वर्तमान जांच में इन एसोसिएशनों की स्थिति के संदर्भ में विवाद किया है कि इन एसोसिएशनों ने हितबद्ध पक्षकार के रूप में अपनी स्थिति को निर्धारित नहीं किया है।
- (x) प्राधिकारी ने दिनांक 31 जुलाई, 2005 की अधिसूचना के जरिए प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित किया और हितबद्ध पक्षकारों से अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख के 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से लिखित में अवगत कराने का अनुरोध किया। घरेलू उद्योग के अलावा निम्नलिखित पक्षकारों ने प्रारंभिक जांच परिणामों का उत्तर देते हुए अपनी टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं -

- शेंडॉग जिन्यु टायर कं. लि., चीन
 - टाटा मोटर्स
 - ऑटोमोटिव टायर इम्पोर्टर्स एसोसिएशन (एटीआईए)
 - ऑल इंडिया टायर डीलर्स एसोसिएशन (एआईटीडीएफ)
 - ऑल इंडिया कंफेडरेशन ऑफ गुड्स व्हेकल्स ओनर्स एसोसिएशन (एसीओजीओए)
 - थाई ब्रिजस्टोन कं. लि., थाइलैंड
- (xi) अनन्तिम जांच परिणामों के बाद प्राधिकारी ने दिनांक 19 सितम्बर, 2006 को शुद्धिपत्र जारी किया। केन्द्र सरकार ने दिनांक 9 अक्टूबर, 2006 की अधिसूचना सं. 106/2006 के द्वारा अनन्तिम शुल्क लगाया।
- (xii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों की बात को मौखिक रूप से सुनने के लिए 26 सितम्बर, 2006 को सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें कई हितबद्ध पक्षकारों ने भाग लिया था। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से प्रकट किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। इस प्रकार हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित प्रस्तुतीकरणों पर प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में विचार किया है। पक्षकारों से अन्य पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों पर अपना प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने का भी अनुरोध किया गया था।
- (xiii) प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने से पूर्व हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दे, जिन्हें प्रारंभिक जांच परिणामों में शामिल किया गया था, को संक्षिप्तता के लिए यहाँ दोहराया नहीं गया है। तथापि, प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद दिए गए तर्कों पर इस जांच परिणाम में विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान प्रकटन विवरण पर हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में पर्याप्त रूप से विचार किया गया है।
- (xiv) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक, घरेलू उद्योग, चीन के निर्यातक तथा एआईटीडीएफ द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का मौके पर सत्यापन किया।
- (xv) आवेदक से क्षति के संबंध में अतिरिक्त सूचना की माँग की गई थी, जो प्राप्त भी हुई थी।
- (xvi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया था जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा गया है।
- (xvii) इस अधिसूचना में *** गोपनीय आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा नियमावली के अंतर्गत विचार की गई सूचना को दर्शाता है।
- (xviii) नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों में विचार किए गए आवश्यक तथ्यों/आधार को 11 जून, 2007 को हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट किया गया था और उस पर प्राप्त उनकी टिप्पणियों पर इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- (xix) जांच 1 अप्रैल, 2004 से शुरू होकर 30 जून, 2005 तक की अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में जांच की प्रवृत्तियों में अप्रैल, 2001 से जांच अवधि तक की अवधि (जिसे क्षति अवधि भी कहा गया है) शामिल थी।
- (xx) विशेष परिस्थितियों में जाँच को पूरा एवं अंतिम जांच परिणामों को अधिसूचित करने के लिए केन्द्र सरकार से छह महीने के अतिरिक्त समय की माँग करना आवश्यक समझा गया था। केन्द्र सरकार द्वारा विशेष परिस्थितियों में जाँच को पूरा एवं अंतिम जांच परिणामों को अधिसूचित करने के लिए छह महीने का अतिरिक्त समय प्रदान किया गया था।
- (xxi) प्राधिकारी ने पाटन एवं परिणामी क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापन किया। सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के

आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत और भारत में संबद्ध वस्तुओं को बनाने और इनकी बिक्री करने की लागत का परिकलन किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

- (xxii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) तथा वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस), कोलकाता से पिछले तीन वर्षों तथा जांच अवधि के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। तथापि, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था।
- (xxiii) जहाँ कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना प्रदान नहीं की अन्यथा उसे जुटाने से मना किया है या जांच में अत्यधिक बाधा डाली है, प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जांच परिणाम दर्ज किया है।
- (xxiv) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों के उत्पादन लागत और बिक्री कीमत से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय माना है क्योंकि इससे उनके प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलेगा। किसी अन्य सूचना को तब तक गोपनीय नहीं माना गया है, जब तक कि उत्तर देने वाले पक्षकार ने उसे गोपनीय रखने के लिए पर्याप्त औचित्य नहीं दिया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

6. विचाराधीन उत्पाद चीन जन. गण. और थाइलैंड के मूल के अथवा, वहां से निर्यातित नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक नॉन रेडियल बायस टायर्स, ट्यूब्स और रबड़ की पट्टियाँ हैं जिनका प्रयोग बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में किया जाता है। बायस टायरों को तकनीकी रूप से डायगोनल प्लाई अथवा क्रास प्लाई टायरों के रूप में जाना जाता है। किसी वाहन में टायर का प्रयोग एक ट्यूब और एक पट्टी के साथ किया जाता है। एक टायर, एक ट्यूब और एक पट्टी को एक साथ एक "टायर सेट" के रूप में बेचा जाता है। "टीटीएफ" शब्द उद्योग में एक "टायर सेट" को निर्दिष्ट करने के लिए प्रचलित है। टायर, ट्यूब और पट्टी संयुक्त रूप से किसी वाहन के "टायर" का कार्य करते हैं। टायरों के अन्दर ट्यूब में हवा भरी जाती है और पहिये और ट्यूब के बीच एक पट्टी का प्रयोग किया जाता है ताकि पहियों के साथ संसंजन के कारण ट्यूब के फटने से बचा जा सके। टायर, ट्यूब एवं पट्टी का उत्पादकों द्वारा अलग-अलग उत्पादन किया जाता है। टायर, ट्यूब और पट्टी की बिक्री मुख्यतः "टीटीएफ" अथवा "टायर सेट" आधार पर की जाती है। तथापि, उन्हें अलग-अलग भी बेचा जाता है। इस उत्पाद का आयात टीटीएफ आधार पर और अलग-अलग भी बेचा जाता है। इस उत्पाद का आयात टीटीएफ आधार पर और अलग-अलग इकाइयों दोनों आधारों पर किया जाता है और यह किसी भी संयोजन में किया जा सकता है। बसों और लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त टायर, ट्यूब और पट्टी इस बात का लिहाज किए बिना विचाराधीन उत्पाद हैं कि क्या वे टीटीएफ रूप में हैं अथवा टायर, ट्यूब और पट्टी के रूप में अलग-अलग हैं।

7. इस उत्पाद के कार्यक्षेत्र में केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त बायस टायर हैं। उनका ट्रक, बस, लॉरी, हल्के वाणिज्यिक वाहन, यात्री कार, जीप, ट्रैक्टर, दुपहिया, तिपहिया, पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले वाहन, अर्थमूवर्स, औद्योगिक टायरों, वायुयानों आदि में प्रयोग के लिए उत्पादन किया जाता है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद वह किस्म है जिसका प्रयोग केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में किया जाता है। टायरों की अन्य सभी किस्में विचाराधीन उत्पाद और वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र से परे हैं।

8. टायरों की दो श्रेणियां अर्थात् रेडियल और नॉन- रेडियल हैं। नॉन- रेडियल श्रेणी बायस अथवा डायगोनल प्लाई टायरों के रूप में जानी जाती है। यह वर्गीकरण भारतीय मानकों द्वारा विनिर्दिष्ट भार-फुलाव के दबाव के संबंध पर आधारित है। इस उत्पाद के कार्यक्षेत्र में केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त नान- रेडियल अथवा बायस टायर शामिल हैं।

9. टायरों, ट्यूबों और पट्टियों का अलग- अलग उत्पादन किया जाता है। तथापि, वे अध्याय 40 में सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 40112090 और ट्यूब एवं पट्टी क्रमशः 40131020 और 4012049 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि, ये सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और किसी भी तरह जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं हैं।

10. हितबद्ध पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में अपनी टिप्पणियां दाखिल की हैं। उन्होंने तर्क दिया है कि :-

- (क) उत्पाद का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक छोड़ा गया है क्योंकि इसमें अलग- अलग आकार शामिल हैं। उत्पाद का वर्णन आयात किए जा रहे उत्पाद के अनुरूप नहीं है। इस उत्पाद में लग, अर्द्ध रिब, रिब आदि शामिल हैं और टायरों को आमतौर पर इनके आकार से अभिज्ञात किया जाता है।
- (ख) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई सूचना में भारी वाणिज्यिक वाहनों (एचसीवी) और हल्के वाणिज्यिक वाहनों (एलसीवी) में विभेद नहीं किया गया है, हालांकि ट्रक एवं बस के टायरों में एचसीवी और एलसीवी दोनों शामिल हैं।
- (ग) आयातित टायर गुणवत्ता में घटिया हैं और मुख्य रूप से फिर से तला लगाए गए टायरों के बदले में इस्तेमाल किए जाते हैं।
- (घ) आयातित टायरों का उत्पादन क्ले एवं फिर से तला लगाए गए टायरों का अधिक प्रयोग करके किया जाता है।
- (ङ) इस उत्पाद के वर्णन को आकारों के अनुसार संशोधित किए जाने की जरूरत है।
- (च) ओईएमएस को उपलब्ध कराए गए टायरों और खुदरा बाजार को उपलब्ध कराए गए टायरों में अत्यधिक अन्तर है। घरेलू उद्योग की क्षति की जांच करते समय इसका विभाजन किया जाना अपेक्षित है।

11. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार तर्क दिया है :-

- (क) याचिका तथा जांच शुरूआत नोटिस में विचाराधीन उत्पाद का दायरा सुपरिभाषित है और इस संबंध में भ्रम की कोई स्थिति नहीं है।
- (ख) यह सही है कि टायरों के विभिन्न प्रकार हैं और ये मूल्य की तुलना के प्रयोजनार्थ सुसंगत हैं। जहां तक विचाराधीन उत्पाद के दायरे का प्रश्न है, विभिन्न प्रकार के ये टायर विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर ही हैं।
- (ग) इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि इसके दायरे में एलसीवी टायरों को भी शामिल किया जाए। तथापि, इन पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों को देखते हुए यह सुनिश्चित करने के लिए कि अव्योचित उत्पाद शुल्कों के दायरे में शामिल न हो जाएं, प्राधिकारी द्वारा टायरों के साइज तथा अन्य मानदण्डों को भी निर्दिष्ट किया जा सकता है।

- (घ) घरेलू उत्पादकों द्वारा उत्पादित सम्बद्ध उत्पाद तथा सम्बद्ध देशों से आयातित उत्पादों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। विशेषताओं के रूप में यथा भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया (व प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, गुणवत्ता, उत्पाद विनिर्देशन, मूल्य संरचना, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से उनकी परस्पर तुलना की जा सकती है।
- (ङ) आयातित एवं घरेलू उत्पाद दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से परस्पर प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता दोनों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं।
- (च) बसों तथा लॉरियों के लिए अभिप्रेत टायर तथा अन्य प्रयोगों के लिए अभिप्रेत टायरों को अलग-अलग सीमाशुल्क उपशीर्ष के तहत वर्गीकृत किया गया है। ऐसी स्थिति में यह वक्तव्य पूरी तरह सही नहीं है कि आयातित टायर बसों एवं लॉरियों के लिए अभिप्रेत टायर नहीं हैं।
- (छ) टायरों के उत्पादन के लिए न्यूनतम तकनीकी अपेक्षा होती है। पुनः तला लगाए गए टायर या क्ले की किसी मात्रा के बिना संबद्ध वस्तु का उत्पादन संभव नहीं है।
- (ज) चीनी टायरों की जांच रिपोर्ट स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि टायर के संघटन के मामले में हितबद्ध पक्षकारों का दावा सही नहीं है।
- (झ) चीन के निर्यातक, शेंगडॉंग जिंग्यु द्वारा कई देशों को टायरों का निर्यात किया जा रहा है, जिसमें अमेरिका जैसे कई विकसित देश भी शामिल हैं। उन देशों को चीन की निर्यात कीमत 120 डॉलर प्रति टायर है जो कि 30-40 अम. डॉ. प्रति टायर, जिस पर भारत को इस अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का निर्यात किया गया है, से बहुत अधिक है।
- () घटिया गुणवत्ता का दावा तर्कसंगत नहीं है।
- (ट) घरेलू उद्योग दो बाजार खण्डों अर्थात् घरेलू आफ्टर मार्केट तथा घरेलू मूल उपकरण विनिर्माताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। आवेदनकर्ताओं ने कहा है कि घरेलू आफ्टर मार्केट, जो टायरों की लगभग 77% बिक्री करता है, में आयात अब भी हो रहा है। अतः आयातित सामग्री तथा घरेलू उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा है। भारतीय उत्पादक सीधे अथवा अपने डीलरों के माध्यम से इन व्यापारियों/रीसेलर्स से उसी सामान्य श्रेणी के उपभोक्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। आवेदक कम्पनियों द्वारा रीसेलर्स के माध्यम से उल्लेखनीय मात्रा में बिक्री (लगभग 77%) की जाती है। सभी रीसेलर्स चाहे वे घरेलू उत्पाद बेचते हों अथवा आयातित, उत्पाद की आपूर्ति सामान्य श्रेणी के उपभोक्ता को ही करते हैं। ओ ई एम अथवा आफ्टर मार्केट को आपूर्तित टायरों की गुणवत्ता में कोई अन्तर नहीं है। टायरों का बी आई एस प्रमाणीकरण स्वैच्छिक स्वरूप का है अतः बीआईएस प्रमाणीकरण युक्त अथवा रहित टायरों की आपूर्ति ओईएम तथा आफ्टर मार्केट दोनों को की जा रही है।
- (ठ) यद्यपि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में टायर, ट्यूब्स एवं फ्लैट्स शामिल हैं, तथापि प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रचालनात्मक पैरा के कारण कुछ भ्रम की संभावना है। अतः प्राधिकारी द्वारा उत्पाद के दायरे को अंतिम जांच परिणाम में स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- (ड) विचाराधीन उत्पाद को प्रारंभिक जांच परिणाम में निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

" बसों तथा लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त होने वाले 16" से अधिक न्यूनतम रिम व्यास कोड वाले, ट्यूब और/या रबड़ के फ्लैप सहित या उसके बिना नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक नॉन रेडियल बायस टायर्स । "

इससे ऐसा आभास मिलता है जैसे विचाराधीन उत्पाद का दायरा केवल टायर तक है और इसे सही किया जाना अपेक्षित है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

12. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के दायरे का प्रश्न है, प्राधिकारी ने पाया है कि याचिका तथा जांच शुरुआत सूचना में विचाराधीन उत्पाद के दायरे का उल्लेख स्पष्ट रूप से कर दिया गया है। विचाराधीन उत्पाद में विभिन्न प्रकार के बायस टायर, जिन्हें लग्स कहा जाता है, सेमी रिब, रिब आदि शामिल हैं। तथापि, ये पात्र विविध प्रकार के विचाराधीन उत्पाद हैं। यह स्पष्ट किया जाता है कि एलसीवी के टायर विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। हितबद्ध पक्षों के तर्कों को देखते हुए यह सुसंगत तथा आवश्यक प्रतीत होता है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को परिभाषित करने के प्रयोजन से टायरों के साइज को भी विनिर्दिष्ट किया जाए। इस संबंध में प्राधिकारी ने यह पाया है कि किसी खास अनुप्रयोग हेतु विशिष्ट आकार के टायर ही प्रयुक्त किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए छोटी रिम के 16" डायर कोड वाला टायर एचसीवी में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता; इसी प्रकार छोटी रिम वाला 20" डायर कोड का टायर एलसीवी में प्रयुक्त किया जा सकता।

13. हितबद्ध पक्षों के तर्कों पर ध्यान देते हुए प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में यह उचित माना है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में टायरों के साइज को भी शामिल किया जाए। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद को "ट्यूब सहित अथवा ट्यूब रहित एवं/अथवा रबड़ के फ्लैप युक्त नया/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल टायर, जिसे बसों अथवा लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त किया जाता है और जो न्यूनतम रिम वाला, 16" डायर कोड से अधिक हो" के रूप में परिभाषित किया जाता है। जांच के दायरे में व्यक्तिगत रूप से तथा एक-दूसरे के साथ आयातित टायर, ट्यूब तथा फ्लैप शामिल हैं। प्रारंभिक जांच परिणामों में शुल्क की सिफारिश भी तदनुसार की गई थी। जहां तक इस तर्क का प्रश्न है कि ओईएम तथा प्रतिस्थापन बाजार हेतु बने उत्पाद अलग-अलग हैं, प्राधिकारी ने नोट किया है कि इस दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग के परिसर में किए गए सत्यापन में देखा गया है कि ओईएम तथा आफ्टर मार्केट के लिए बना उत्पाद एक ही है।

समान वस्तु

14. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में समान वस्तु को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

"समान वस्तुओं का तात्पर्य एक ऐसी वस्तु से है जो जांच की जा रही वस्तु से हर दृष्टिकोण में समान अथवा समरूप है अथवा ऐसी वस्तु अभाव में अन्य ऐसी वस्तु से तात्पर्य है जो सभी दृष्टि से समान नहीं है, परंतु उसमें जांच की जा रही वस्तुओं से मिलते-जुलते सभी गुण मौजूद हैं।"

15. घरेलू उद्योग के तर्क -

(क) याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु चीन जन.गण. एवं थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तु हैं।

(ख) आयातित टायरों की गुणवत्ता के संबंध में वेतरीब ढंग से विस्तृत निवेदन किए गए हैं। पक्षकार, निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह समझाने में भी सफल नहीं हो सके कि खराब गुणवत्ता से उनका क्या अर्थ है न ही ये पक्षकार यह प्रदर्शित कर सके कि गुणवत्ता में कथित अंतर, वर्तमान जांचों के लिए किस तरह संगत हैं।

(ग) समान वस्तुओं पर कोई विवाद नहीं है। चीन के निर्यातक ने इस बात की पुष्टि की है समान वस्तु के संबंध में कोई विवाद नहीं है। किसी भी पक्षकार ने स्थिति का खण्डन नहीं किया है। केवल

एक ही तर्क दिया गया था कि आयातित उत्पाद निम्न गुणवत्ता वाले हैं और उन्हें सस्ते बाजार में इस्तेमाल किया जाता है।

(घ) बसों एवं लॉरियों के लिए प्रयुक्त होने वाले टायरों एवं अन्य उपयोग हेतु टायरों को अलग-अलग सीमाशुल्क उपशीर्ष के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। ऐसी स्थिति में, यह वक्तव्य तथ्यात्मक रूप से असत्य है कि आयातित उत्पाद बसों एवं लॉरियों के लिए प्रयुक्त होने वाले टायर नहीं थे।

16. निर्यातक एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्क

(क) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायर तथा चीन से आयातित टायर एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं और आपस में प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायर भारतीय ट्रकों (टाटा एवं अशोक लेलैंड) द्वारा उपयोग में लाए जाते हैं जिन्हें भारी वजन हेतु पंजीकृत किया गया है और शान्डॉंग जिन्यू टायर कं.लि. द्वारा निर्यातित टायर माप में छोटे हैं और सस्ते अनुप्रयोगों हेतु अर्थात् ट्रेक्टर, ट्रॉली अनुप्रयोग/चार पहिया, आर्मी डिस्पोसल ट्रकों एवं पुनः व्यापार किए जाने वाले टायरों के प्रतिस्थापन के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायर, अंतरराष्ट्रीय टायरों से माप में बड़े होते हैं और उन्हें 8 टन के निर्धारित माप की तुलना में 30 टन तक वजन उठाने के लिए विशेष रूप से निर्मित किया जाता है। तदनुसार इन दोनों टायरों के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं है क्योंकि दोनों को अलग-अलग प्रकार के उपभोक्ताओं/प्रयोक्ताओं द्वारा इस्तेमाल किया जाता है।

(ख) विशेष रूप से शान्डॉंग जिन्यू टायर कं.लि. द्वारा निर्यातित टायर तथा सामान्यतः चीन के उत्पादकों द्वारा निर्यातित टायर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायरों से काफी कम गुणवत्ता वाले होते हैं, उत्पाद भार, भारतीय उत्पाद की तुलना में कम होता है और इसे निर्धन ग्रामीणों द्वारा ट्रेक्टर, ट्रैलरों में इस्तेमाल किया जाता है जहाँ टायरों का कार्य निष्पादन उत्तम होना एक महत्वपूर्ण अपेक्षा नहीं होता है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु चीन जन.गण. से निर्यातित वस्तु से कहीं उच्च गुणवत्ता वाली होती है और उन्हें बाजार में अच्छी कीमत प्राप्त होती है। प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.4 और अनुबंध-1 के पैरा 6(i) के तहत किए गए प्रावधानों के अनुसार समायोजन किया जाना चाहिए। टायरों के ट्रेड वियर तथा उनकी कार्यक्षम अवधि, वजन उठाने की क्षमता, टायर का टिकाऊ होना, बिना शर्त वारंटी एवं गारंटी, बिक्री की शर्तें, पुनः व्यापार की क्षमता तथा कीमत तुलनीयता के संबंध में समायोजन किया जाना आवश्यक है। यदि आवश्यक हो तो सरकारी प्रयोगशाला में चीन के टायरों की जांच की जानी चाहिए। चीन से आयातित टायर ट्रैक्टर ट्रॉलियों हेतु तथा रिट्रैडेड अथवा सुधारे गए टायरों के प्रतिस्थापन के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं और पूर्णतः भिन्न बाजार में रखे जाते हैं जहाँ घरेलू उत्पादक न तो उपस्थित होते हैं और न ही वहाँ उनका कोई हित निहित होता है।

(ग) भारत में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायर उच्च गुणवत्ता के साथ विनिर्मित टायर होते हैं जिन्हें विस्तृत अनुसंधान पश्चात् बहुत अधिक गति में कार्य करने, उच्च कार्य निष्पादन और वजन उठाने की क्षमता हेतु विकसित और उत्पादित किया जाता है। जबकि चीन से आयातित टायर निम्न गुणवत्ता वाले होते हैं और उन्हें ऐसे उपयोगों के लिए निर्मित किया जाता है जहाँ उनका कार्य निष्पादन उत्तम होना अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता है जैसे ट्रैक्टर ट्रैलरों अथवा बैलगाड़ियों के लिए अथवा रिट्रैडेड टायरों के प्रतिस्थापन के रूप में।

(घ) भारत में घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन विशिष्ट विनिर्देशन द्वारा उच्च ग्रेड के रबड़ तथा ढांचा विनिर्माण के साथ किया जाता है। चूँकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायरों को अत्यधिक

वजन उठाने और तेज गति में कार्य करने के लिए डिजाइन किया जाता है इसलिए मुख्यतः उन्हें बनाने में महंगे प्राकृतिक रबड़ का इस्तेमाल किया जाता है ताकि भारी वजन और तेज गति से सृजित उष्मा के प्रभाव से बचाव हो सके। चीन से भारत को आयातित टायरों को निम्न ग्रेड की सस्ती कच्ची सामग्री द्वारा वैल्यू लाइन पद्धतियों और ढांचा विनिर्माण के साथ उत्पादित किया जाता है। इसमें ऊपर उल्लिखित बाजार जहां गुणवत्ता की मांग अधिक नहीं होती है और उच्च कार्य-निष्पादन अपेक्षित नहीं होती है की मांग को पूरा करने के लिए लागत में कटौती के कारण प्राकृतिक रबड़ की कम मात्रा का इस्तेमाल किया जाता है।

(ड.) टायरों के उत्पादन के लिए घरेलू उद्योग केवल उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक रबड़ का ही इस्तेमाल करता है जबकि चीन के उत्पादक सस्ती कच्ची सामग्री जैसे रिक्लेम्ड रबड़, कैल्शियम कार्बोनेट, रिक्लेम्ड कार्बन ब्लैक और क्ले फाइलर्स का इस्तेमाल करते हैं ताकि उसके उपयोग के अनुसार उन्हें सस्ता और किफायती बनाया जा सके।

(च) घरेलू उद्योग अपने उत्पादों के संवर्धन और बिक्री एवं वितरण प्रणाली के निर्धारण हेतु अपने ब्राण्ड एवं बाजार उपस्थिति को स्थापित करने के लिए अत्यधिक धन का व्यय करते हैं जिससे संबद्ध वस्तुओं की लागत और बढ़ जाती है। इसके अलावा घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित सभी टायर किसी विकार के विकसित हो जाने की स्थिति में वारंटी एवं प्रतिस्थापन गारंटी के साथ आते हैं जिससे संबद्ध वस्तुओं की लागत में वृद्धि होती है और वे और अधिक महंगे हो जाते हैं। दूसरी ओर चीन की कम्पनियां इस प्रकार का कोई व्यय नहीं करती हैं और कोई वारंटी अथवा प्रतिस्थापन गारंटी नहीं देती हैं जिससे उन्हें अपनी लागत कम करने में और सहायता मिलती है।

(छ) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा गुणवत्ता के मुद्दे की जांच की जानी चाहिए और गुणवत्ता में अंतर हेतु उचित समायोजन किया जाना चाहिए जिसके लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी हेतु आवश्यक सूचना पहले ही रिकॉर्ड में उपलब्ध करा दी गई है।

(ज) विचाराधीन उत्पाद बाजार में विभिन्न वजनों एवं मॉडलों में उपलब्ध है। समान आकार समूहों में घरेलू उद्योग की कीमत 32-50 प्रतिशत की कीमत रेंज में बहुत अधिक भिन्न है। चूंकि आयातित टायर निम्न ग्रेड के हैं इसलिए उच्च ग्रेड के टायरों के साथ उनकी तुलना किए जाने पर तुलना त्रुटिपूर्ण होगी। वस्तु सूची में वृद्धि अत्यधिक उत्पादन एवं बहुत अधिक आपूर्ति के कारण हुई है।

(झ) आयातक एसोसिएशन ने अपने निवेदनों में यह दावा भी किया है कि आयातित उत्पाद कम गुणवत्ता के हैं।

() क्रॉस प्लाई ट्रकों/ट्यूब टायरों के आयात से छोटे परिवहन प्रचालकों को कम दूरियों और विधिसंगत वजनी वस्तुओं हेतु विकल्प प्राप्त हुआ है। यह श्रेणी मितव्ययी प्रयोक्ताओं के लिए है जो अब तक इस्तेमाल किए जा चुके/रिट्रेडेड टायरों का उपयोग करते आए थे। घरेलू टायर विनिर्माता प्रमुखतः ऐसे टायरों का उत्पादन करते हैं जो निर्धारित एक्सिल वजन की सीमा से अधिक वजन उठा सके।

(ट) आयातित टायर 'कैश एंड कैरी' आधार पर विनिर्माण में किसी त्रुटि पर किसी वारंटी के बिना बेचे जाते हैं, जबकि घरेलू उद्योग उच्च गुणवत्ता युक्त पद्धति से निर्मित होते हैं और उसकी कीमत में उच्च बिक्री, विवरण एवं विपणन व्ययों का अधिक परिमाण भी शामिल होता है जिसके कारण वे

आयातित टायरों की तुलना में महंगे होते हैं। लग प्रद्वति 20% से 25% के बीच होती है। आयातित टायर, कच्ची सामग्री, विनिर्माण प्रक्रिया तथा अन्य परिवर्तन लागत के आधार पर भिन्न होते हैं। यहां तक की समान आकार के दो टायर भी लागत एवं कीमत में भिन्न हो सकते हैं।

(ठ) एआईटीडीएफ ने दावा किया था कि घरेलू कम्पनियां चीन के विनिर्माताओं से टायर प्राप्त कर रही हैं और भारत को छोड़कर अन्य देशों में इस तर्क के आधार पर उसका निर्यात कर रही हैं कि चीन से आउटसोर्सिंग के कारण उन्हें कीमत में काफी लाभ प्राप्त हो रहा है।

(ड़) घरेलू उद्योग द्वारा क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ चीन एवं भारत के टायर, निर्माण, इंजीनियरिंग, व्यास, चौड़ाई एवं अन्य तकनीकी मानदण्डों जैसी विशेषताओं के आधार पर दो स्वतंत्र उत्पाद हैं। एकपक्षीय नौकरशाही प्रक्रिया के बदले प्राकृतिक न्याय एवं समानता का कानून, अपनाया जाना चाहिए।

(ढ़) घरेलू उद्योग के तर्क आधारहीन हैं और टायरों की श्रेणियों के संबंध में भ्रामक हैं। चीन से आयातित टायर बसों एवं लॉरियों हेतु प्रयुक्त होते हैं और कम वजन उठाने वाले वाहनों के परिवहन के सस्ते उपयोग हेतु इनका इस्तेमाल किया जाता है।

(ण) यद्यपि भारतीय टायर बड़े आयामों वाले/वजनी/अत्यधिक प्रक्रियाओं के पश्चात विनिर्मित तथा 200 से 400% तक वजन उठाने हेतु बनाए जाते हैं परंतु चीन के टायर ऐसे नहीं होते हैं।

(त) दिनांक 25/04/2007 को इकोनॉमिक टाइम्स में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसके अनुसार हमारे माननीय वित्त मंत्री स्वयं टायर उद्योग में उत्पादक संघों द्वारा उत्पन्न की जा रही उलझनों से चिंतित हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. सर्वप्रथम प्राधिकारी द्वारा "विचाराधीन उत्पाद" को अभिज्ञात किए जाने की आवश्यकता है, जैसा उपर विनिर्दिष्ट है। विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित करने के पश्चात प्राधिकारी द्वारा भारत में उत्पादित की जा रही समान वस्तु को अभिज्ञात किया जाना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू एवं आयातित उत्पाद आधारभूत भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं में समान हैं। दोनों के समान कार्य एवं उपयोग है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चीन के टायरों को अनिवार्यतः निम्न गुणवत्ता वाला नहीं कहा जा सकता क्योंकि चीन के निर्यातकों ने स्वयं दावा किया है कि वे अमरीका जैसे कुछ देशों को उच्च ग्रेड के गुणवत्तायुक्त टायरों का निर्यात कर रहे हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि टायरों की गुणवत्ता कच्ची सामग्री के मिश्रण पर निर्भर करती है जिसे सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा स्वीकार किया गया है। अतः किसी ऐसे दावे के औचित्य को कि कोई निश्चित टायर कम गुणवत्ता का है, प्रयुक्त कच्ची सामग्री के मिश्रण द्वारा दर्शाया जाना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप वस्तुतः कम गुणवत्ता वाले टायर का उत्पादन होता है। इस प्रयुक्त कच्ची सामग्री के मिश्रण को संयंत्र के रिकॉर्डों और उत्पादकों द्वारा रखी जाने वाली लेखा पुस्तिकाओं द्वारा सत्यापित किया जा सकता है। इसे कम्पनी के कैटलॉग द्वारा भी सत्यापित किया जा सकता है जिसमें उत्पाद के विभिन्न प्रयोगों और गुणवत्ता मानदण्डों/विशेषताओं को दर्शाया जाता है।

(क) मौके पर सत्यापन के दौरान, चीन के निर्यातक अर्थात् शान्डॉंग जिन्यू टायर कं.लि. के परिसर में दावा किए गए कम गुणवत्ता संबंधी मुद्दे, की इस संदर्भ में जांच की गई थी कि क्या निर्यात उत्पाद,

निर्यातक द्वारा अपने बाजार अथवा तीसरे देशों में बिक्री हेतु उत्पादित वस्तुओं से भिन्न हैं और क्या वे कम गुणवत्ता के हैं। इस बात को साबित करने के लिए कि चीन के निर्यातकों द्वारा उत्पादित वस्तु निम्न गुणवत्ता/ग्रेड की है, उत्तर देने वाले निर्यातक से भारत को निर्यातित ग्रेडों तथा घरेलू बाजार में बेचे जाने वाले ग्रेडों में प्रयुक्त कच्ची सामग्री का मिश्रण दर्शाने वाले संयंत्र के रिकॉर्ड को उपलब्ध नहीं कराया गया। अतः चीन का निर्यातक यह साबित करने के लिए लेखा पुस्तिका अथवा संयंत्र के रिकॉर्ड से कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं करवा सका कि भारत को निर्यातित वस्तु कम गुणवत्ता की है। चीन के निर्यातक ने दावा किया है कि वे अमरीका जैसे कुछ देशों को उच्च गुणवत्ता (ग्रेड-1) वाले टायरों तथा भारत सहित एशियाई देशों के कम गुणवत्ता वाले टायरों (ग्रेड-3) का निर्यात कर रहे हैं। तथापि भारत को निर्यातों के निर्यात बीजक में ऐसी कोई ग्रेडिंग दर्शाई नहीं गई है। मौके पर सत्यापन के दौरान निर्यातक से भारतीय आयातकों का खरीद ऑर्डर दिखाने का अनुरोध किया गया था ताकि यह मालूम हो सके कि भारतीय आयातकों द्वारा अपेक्षित टायर निम्न गुणवत्ता के हैं, परंतु कम्पनी ऐसा कोई खरीद ऑर्डर उपलब्ध नहीं करवा सकी और उनके द्वारा यह कहा गया है कि सभी ऑर्डर दूरभाष द्वारा दिए जाते हैं। सत्यापन के पश्चात इन मुद्दों के विषय में निर्यातक को सूचना दी गई और उनसे इन बातों पर टिप्पणी करने के लिए कहा गया। तथापि संयंत्र रिकॉर्डों/लेखा पुस्तकों को प्रस्तुत न करने के विषय में कोई विशेष टिप्पणी नहीं की गई है। तथापि यह पुनः दोहराया गया कि चीन के टायर निम्न गुणवत्ता के हैं। मौके पर सत्यापन के पश्चात उन्होंने घरेलू बाजार, अमरीका और भारत में बेचे जाने वाले टायरों के बारे में उत्पादन लागत संबंधी विवरण प्रस्तुत किया है, तथापि इन्हें संयंत्र के रिकॉर्डों/लेखा पुस्तकों द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सका क्योंकि इन्हें मौके पर सत्यापन के समय उपलब्ध नहीं कराया गया था। निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट 5 से 9 में प्रयुक्त कच्ची सामग्री तथा अन्य दावों की मौके पर सत्यापन के दौरान जांच नहीं की जा सकी क्योंकि इन आंकड़ों के संबंध में कोई मूल रिकॉर्ड अथवा समर्थनकारी दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए गए थे। इन मूल रिकॉर्डों, समर्थनकारी दस्तावेजों/वर्किंग शीटों के अभाव में प्राधिकारी द्वारा लेखा पुस्तिका से लागत संबंधी दावों का सत्यापन किया जाना संभव नहीं था। उत्पाद ब्रोशर में भी उच्च गुणवत्ता वाले टायरों तथा कथित रूप से निम्न गुणवत्ता वाले टायरों के बीच कोई अंतर नहीं दर्शाया गया है। इसके विपरीत मै0 जिन्यू के उत्पाद ब्रोशर में अन्य बातों के साथ-साथ यह कहा गया है कि "कम्पनी के पास अत्याधुनिक विनिर्माण उपस्कर हैं। कुल 8 सीरीजों, 107 आकारों, 256 प्लाई रेटिंग्स एवं पद्धतियों वाले जिन्यू, गोल्डन रोड जॉयकिन ब्राण्ड टायरों के निर्माण हेतु नवीनतम प्रौद्योगिकी के साथ सर्वोत्तम सामग्रियों का चुनाव किया जाता है। गुणवत्ता को इस उद्यम का प्राण मानते हुए पिछले दस वर्षों में कम्पनी ने विदेशी एवं घरेलू आपूर्तिकर्ताओं से अत्याधुनिक मशीनें खरीदी हैं और संपूरक गुणवत्ता वारंटी प्रणाली स्थापित की है। उत्पादों को सीसीसी, गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली प्रमाणन आईएसओ 9001 : 2000 मानक, डीओटी, इनमेट्रो, ईसीई एवं अन्य लागू मानकों द्वारा प्रमाणित किया गया है। शान्डांग जिन्यू टायर कं.लि. एक आधुनिक कम्पनी के रूप में विकसित हुई है जो टायर विनिर्माण, प्रौद्योगिकी अनुसंधान एवं विकास तथा व्यापार में सही तालमेल रखती है। उत्पादों का विवरण, चीन जनवादी गणराज्य में दक्षिण कोरिया, अमरीका, भारत, ब्राजील इत्यादि 60 देशों एवं क्षेत्रों को शामिल करते हुए विस्तारपूर्वक किया जाता है।"

(ख) अतः निर्यातक के इस दावे को कि भारत को निर्यातित टायर निम्न गुणवत्ता के हैं, साक्ष्य/संयंत्र रिकॉर्डों/लेखा पुस्तक/बीजकों द्वारा साबित नहीं किया जा सका। निम्न गुणवत्ता/वारंटी रहित/आर एण्ड डी रहित आदि दावों को भी जिन्यू टायर के उत्पाद ब्रोशर द्वारा समर्थन नहीं मिल सका। चीन के किसी भी अन्य निर्यातक ने जांच में सहयोग नहीं किया है और गुणवत्ता के मामले में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। किसी अन्य आयातक/प्रयोक्ता संगठन में इस संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है, यद्यपि यह तर्क दिया गया है कि चीन के टायर निम्न गुणवत्ता के हैं। एआईटीडीएफ के दौरे के

दौरान, एसोसिएशन ने दावा किया था कि चीन से आयातित टायर निम्न गुणवत्ता के हैं परंतु इसे किसी दस्तावेजी साक्ष्य द्वारा साबित नहीं किया जा सका। अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचने की स्थिति में नहीं हैं कि चीन के टायर निम्न गुणवत्ता के हैं। अत्यधिक भार उठाने की क्षमता संबंधी तर्कों के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि वजन उठाने की क्षमता प्रयुक्त कच्ची सामग्री के मिश्रण पर निर्भर होती है, जिसे मौके पर सत्यापन के दौरान साबित नहीं किया जा सका। एआईटीडीएफ के दौरे के समय एसोसिएशन ने दावा किया कि चीन से आयातित टायर निम्न गुणवत्ता के हैं परंतु इसे किसी दस्तावेजी साक्ष्य द्वारा साबित नहीं किया जा सका।

(ग) समान वस्तुओं के संबंध में थाईलैंड से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने थाईलैंड से आयातित उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में कोई तर्क/साक्ष्य नहीं दिया है।

18. दावों की जांच करने के पश्चात, प्राधिकारी का मानना है कि चीन एवं थाईलैंड से आयातित संबद्ध उत्पाद एवं घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु में कोई अंतर नहीं है। आयातित उत्पाद को भी उपभोक्ताओं की एक ही श्रेणी द्वारा उपयोग में लाया जाता है। वे तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उत्पादों की मूल भौतिक एवं तकनीकी विशेषताएं तथा उनके कार्य और उपयोग एक समान हैं। तदनुसार प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पाद तथा चीन जन.गण. एवं थाईलैंड द्वारा आयातित उत्पाद समान वस्तु हैं।

ग. घरेलू उद्योग

19. नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

"घरेलू उद्योग का तात्पर्य ऐसे घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण में और उससे जुड़े कार्यकलापों में पूर्ण रूप से कार्यरत हैं या जिनका उक्त वस्तु का संचयी उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख भाग हैं बशर्त कि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित न हों या वे स्वयं उसका आयात न कर रहे हों, ऐसे मामले में इस प्रकार के उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाएगा।"

20. मै0 अपोलो टायर्स लि0 तथा मै0 सिएट लि0 द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का उपयोग करते हुए घरेलू उद्योग की ओर से ऑटोमोटिव टायर्स, मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) द्वारा याचिका दायर की गई है। इस याचिका को मै0 जे.के. टायर्स (जेके इंडस्ट्रीज लि0) मै0 बिरला टायर्स (केसोराम इंडस्ट्रीज लि0) और मै0 एमआरएफ लि0 ने समर्थन प्रदान किया है। प्रारंभिक जांच के बाद प्राधिकारी ने सहायक कम्पनियों से भी क्षति संबंधी जानकारी मांगी थी। इसके प्रत्युत्तर में जेके टायर्स एवं बिरला टायर्स ने जांच में हिस्सा लेने हेतु अपनी इच्छा व्यक्त की है और निर्धारित ढंग एवं पद्धति में प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित सूचना उपलब्ध कराई है। प्रारंभिक जांच में प्राधिकारी ने जांच करने के पश्चात नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर अपोलो टायर्स, बिरला टायर्स, सिएट टायर्स तथा जेके टायर्स को घरेलू उद्योग माना था।

21. प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद प्राधिकारी ने निम्नलिखित अन्य भारतीय उत्पादकों अर्थात् :-

- (क) मै0 एमआरएफ चेन्नई,
- (ख) मै0 गुडईयर इंडिया लि0,

- (ग) मै0 बालकृष्णा इंडस्ट्रीज लि0 मुम्बई,
- (घ) मै0 वियर वेल मध्य प्रदेश,
- (ङ.) मै0 मल्होत्रा रबर्स लि0, नई दिल्ली,
- (च) मै0 टायर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (टीसीआईएल), कोलकाता

से जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं हेतु संगत लागत एवं क्षति संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। इन भारतीय उत्पादकों का ध्यान रिलायन्स इंडस्ट्रीज मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों की ओर भी आकृष्ट किया गया था। इसके उत्तर में मै0 एमआरएफ लि0 द्वारा वर्ष 2003-04 तथा वर्ष 2004-05 हेतु लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। गुडइयर के संबंध में वर्ष 2004 एवं 2005 के लिए लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टें, कम्पनी कार्य विभाग से एकत्र की गई थी। तथापि यह नोट किया गया है कि उपलब्ध कराई गई जानकारी, गैर-क्षतिकारी कीमत एवं क्षति विश्लेषण के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन कम्पनियों को घरेलू उद्योग में शामिल करने हेतु सर्वथा अपर्याप्त है। इन कम्पनियों ने उत्पादन, बिक्री मात्रा, उत्पादन लागत, बिक्री कीमत, लाभ/हानि आदि दर्शाते हुए लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टें, उपलब्ध कराई हैं। तथापि प्राधिकारी अनेक कारणों से इन जानकारी का इस्तेमाल करने में असमर्थ है, इन कारणों में शामिल हैं :-

- (क) लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टों में वित्तीय वर्ष से संबंधित सूचना होती है और प्राधिकारी द्वारा विचाराधीन जांच अवधि एवं पूर्ववर्ती वर्षों के लिए सूचना उपलब्ध नहीं है।
- (ख) विचाराधीन उत्पाद के लिए अलग से सूचना उपलब्ध नहीं है।
- (ग) क्षति रहित कीमत के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद के भार सहित सभी संगत सूचना अनुपलब्ध है।

22. अतः प्राधिकारी गुडइयर एवं एमआरएफ के संबंध में उपलब्ध कराई गई/एकत्र की गई सूचना का उपयोग करने में असमर्थ है। चूँकि उपलब्ध कराई गई सूचना सभी मामलों में पूर्ण नहीं है, इसलिए प्राधिकारी ने उसका उपयोग नहीं किया है।

23. अन्य भारतीय उत्पादकों ने निम्नानुसार उत्तर दिया :-

मै0 टायर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि0 (टीसीआईएल), कोलकाता ने उत्तर दिया है कि वे मूल कच्ची सामग्री की आपूर्ति करने वाली अन्य टायर कम्पनियों के लिए 100% कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनुरोध किया है कि इसके संदर्भ में उनका नाम इस पाटनरोधी जांच हेतु अपेक्षित आंकड़े प्रस्तुत करने की अनिवार्यता हेतु शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

मै0 मल्होत्रा रबड़ लिमिटेड, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) ने उत्तर दिया है कि उन्होंने ट्यूब वाले अथवा ट्यूब रहित तथा/अथवा रबड़ फ्लैप वाले, बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त होने वाले 16" से उच्च, मामूली रिम व्यास वाले नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक नॉन रेडियल बायस टायरों का उत्पादन नहीं करते हैं। उन्होंने आगे कहा है कि वे हल्के वाणिज्यिक वाहन टायरों, पैसेंजर कार टायरों तथा दोपहिया/तिपहिया टायरों का उत्पादन करते हैं।

मै0 वियरवेल टायर एवं ट्यूब इंडस्ट्रीज प्रा0लि0 मोपोल ने उत्तर दिया है कि उनकी कम्पनी बन्द हो चुकी है और वे अब व्यापार नहीं करते हैं।

मै0 बालाकृष्ण टायर्स ने प्राधिकारी को कोई उत्तर नहीं दिया है। तथापि, घरेलू उद्योग ने कम्पनी की वेबसाइट से इंटरनेट सूचना की एक प्रति प्रस्तुत की है, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि मै0 बालाकृष्ण टायर्स ट्रक एक बस हेतु प्रयुक्त बायस टायर जो विचाराधीन उत्पाद है का उत्पादन नहीं करते हैं। इस स्थिति के मद्देनजर, जांच अवधि के दौरान बायस ट्रक/बस टायरों का उत्पादन निम्नानुसार रहा है :-

कम्पनी का नाम	संख्या में उत्पादन	भारतीय उत्पादन में प्रतिशत
घरेलू उद्योग		
अपोलो टायर्स लि0	35,53,599	26.24
जे.के. इंडस्ट्रीज लि0	31,20,654	23.04
सिएट लि0	22,47,243	16.59
बिरला टायर्स	12,54,596	9.26
कुल घरेलू उद्योग	101,76,092	75.14
समर्थक		
एमआरएफ लि0	28,28,846	20.89
घरेलू उद्योग एवं समर्थक	130,04,938	96.02
अन्य		
गुडईयर इंडिया लि0	5,38,649	3.98
कुल भारतीय उत्पादन	135,43,587	100.00

प्राधिकारी नोट करते हैं कि (क) चार विनिर्माताओं अर्थात् अपोलो टायर्स लि0, सिएट लि0, जे के टायर्स (जेके इंडस्ट्रीज लि0) तथा बिरला टायर्स (केसोराम इंडस्ट्रीज लि0) के उत्पादन, भारतीय उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा हैं; (ख) याचिका का खुले तौर पर समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सा है (ग) याचिका घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उनकी ओर से दायर की गई थी,

24. प्राधिकारी को उत्तर देने एसोसिएशनों ने इस बात पर विवाद नहीं उठाया है कि याचिका घरेलू उत्पादकों के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करने वाले घरेलू उद्योग की ओर से दायर की गई है और न ही उन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई है कि प्रतिभागी कम्पनियां घरेलू उद्योग हैं। तथापि अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि -

(क) याचिकाकर्ता चीन से संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक/निर्यातक से संबंधित है और यह बात निर्दिष्ट प्राधिकारी को गुमराह करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा छिपाई गई है।

(ख) एक ओर घरेलू उद्योग चीन जन.गण. से सस्ते और कम कीमत पर आयातों के कारण शिकायती रूख अपना रहा है और दूसरी ओर वह चीन के उत्पादकों से संबद्ध वस्तुओं की सर्विसिंग द्वारा तथा इन विनिर्माताओं के साथ संबद्ध हो कर चीन की तरह इस निम्न उत्पादन लागत का फायदा उठाने के लिए व्यापार संबंधी कार्यनीति भी तैयार कर रहा है। घरेलू उद्योग की वेबसाइट चीन के उत्पादकों के साथ

उनके संबंध और संबद्ध वस्तुओं की सर्विसिंग एवं कार्यनीतिक संबद्धता करने संबंधी सभी मुद्दों को दर्शाती है। उनका आपसी संबंध उनकी वार्षिक रिपोर्टों से भी प्रदर्शित होता है। घरेलू उद्योग अनेक प्रयोक्ताओं और भारत में अपने उपभोक्ताओं को शामिल न किए जाने के अपने निजी लाभ के लिए कम लागत उत्पादन का फायदा उठा रहा है। ऐसे संबंधों का आधार चीन में निम्न उत्पादन लागत का होना है। चीन के उत्पादक मितव्ययी हैं।

(ग) घरेलू उद्योगों ने चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है। घरेलू उद्योग ने यह कह कर कि उन्होंने भारत को टायरों का आयात नहीं किया है प्राधिकारी को भ्रमित किया है। विनिर्माता भारतीय बाजार में अत्यधिक आपूर्ति की स्थिति के कारण समस्याओं का सामना कर रहे हैं। प्रारंभिक जांच परिणाम के पैरा 70 में प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि यद्यपि टायर कम्पनियों ने बाजार से कुछ वस्तुओं की खरीद की है तो भी यह निर्धारित नहीं है कि ये खरीद आयातित वस्तुओं में से की गई है। जेके इंडस्ट्रीज एवं अपोलो टायर्स की वार्षिक रिपोर्ट में व्यापार उपकरणों, आउटसोर्सिंग इत्यादि का उल्लेख है जिससे स्पष्ट रूप से यह पता चलता है कि इन कम्पनियों ने चीन से टायर की खरीद की है। प्राधिकारी का ध्यान भी ऐसे कुछ समाचारों की ओर आकृष्ट किया गया है जहां घरेलू उद्योग में आने वाली कम्पनियों ने संबद्ध वस्तुओं की आउटसोर्सिंग तथा चीन की कम्पनियों के साथ अपनी संबद्धता/भविष्य में संबद्धता के बारे में उल्लेख किया है। मै0 अपोलो इंटरनेशनल लि0 की वेबसाइट की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया गया है। इसमें उल्लेख किया गया है कि टायर टेक ग्लोबल ने चीन से टायरों की सोर्सिंग प्रारंभ की है। यह भी दर्शाया गया है कि अपोलो इंटरनेशनल लि0 और जिन्यू टायर कम्पनी शान्डांग ने आपूर्ति के संबंध में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

25. प्रारंभिक जांच परिणाम से पूर्व प्राधिकारी ने उन याचिकाकर्ताओं से इस बात का स्पष्टीकरण मांगा था जिन्होंने यह प्रमाणित किया था कि कोई भी प्रतिभागी कम्पनियां, निर्यातक देश में किसी पक्षकार से संबंधित नहीं है। मै0 अपोलो इंटरनेशनल लि0 ने यह भी प्रमाणित किया कि कम्पनी की भारतीय बाजारों को विचाराधीन उत्पाद के निर्यात अथवा आयात के लिए चीन अथवा थाईलैंड में विचाराधीन उत्पाद के किसी विनिर्माता/निर्यातक के साथ कोई व्यापारिक संबद्धता नहीं है तथा कम्पनी ने जांच अवधि के दौरान ऐसे किसी संभावित व्यापार संबद्धता के अंतर्गत चीन अथवा थाईलैंड से भारत को विचाराधीन उत्पाद का आयात/निर्यात नहीं किया है। इसके अलावा, याचिका के अनेक हिस्सों में याचिकाकर्ताओं द्वारा इस संबंध में उल्लेख किया गया है। यह निर्धारित नहीं किया गया है कि ये घोषणाएं त्रुटिपूर्ण हैं।

26. प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से चीन के साथ संबंधों और वस्तुओं के आयात के बारे में विस्तृत तथ्यात्मक सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। घरेलू उद्योग ने इस मामले का निम्नानुसार स्पष्टीकरण दिया है :-

(i) सिएट लि0 ने अन्य बातों के साथ-साथ उत्तर दिया है कि :-

(क) हम चीन से रेडियल टायरों की आउटसोर्सिंग की संभावनाओं की जांच कर रहे हैं। यह अब भी प्रारंभिक स्थिति में है। आगे हम यह पुष्टि करते हैं कि हमने चीन से टायरों का निर्यात नहीं किया है। हम इस बात की भी पुष्टि करते हैं कि हमने चीन में कोई वित्तीय निवेश नहीं किया है।

(ख) कम्पनी, ट्रकों/बसों हेतु रेडियल टायरों के उत्पादन हेतु भारत में ग्रीनफील्ड परियोजना की स्थापना की संभावनाओं की जांच कर रही है। तथापि परियोजना के आकार एवं लागत के बारे में कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है। यहां हम यह भी स्पष्ट करते हैं कि कम्पनी ने बायस टायरों के लिए चीन में न निवेश किया है और न ही उसकी ऐसी कोई योजना है।

(ग) हम एक बार पुनः दोहराते हैं कि कम्पनी ने चीन से बायस/रेडियल टायरों का कोई आयात नहीं किया है।

(ii) अपोलो टायर्स लि० ने अन्य बातों के साथ-साथ यह उत्तर दिया है कि :-

(क) अपोलो टायर्स ने पूर्व में भारत में रेडियल टायरों के उत्पादन हेतु एक संयुक्त उपक्रम की स्थापना हेतु नवम्बर, 2003 में मिशलिन, फ्रांस के साथ एक कार्यनीतिक समझौता किया था। इस संयुक्त उपक्रम से संबंधित कोई भी प्रचालन बसों एवं ट्रक हेतु बायस टायरों के उत्पादन हेतु नहीं था।

(ख) रेडियल टायरों के उत्पादन हेतु परियोजना का कार्यान्वयन न होने तक, मिशलिन अपोलो टायर्स प्रा० लि० ने भारत में बिक्री हेतु रेडियल टायरों का आयात शुरू किया है। कृपया नोट करें कि ये आयात रेडियल टायरों के थे।

(ग) चीन में अधिग्रहण के बारे में बिजनेस लाइन में प्रकाशित एक समाचार में कम्पनी द्वारा चीन में, टायर विनिर्माण फैक्ट्री-पहले से मौजूद अथवा नई, खरीदने के प्रयासों का उल्लेख किया गया है। यह स्पष्ट किया जाता है कि न तो अपोलो टायर्स लि०, और न ही अपोलो इंटरनेशनल लि०, न ही इन दोनों कम्पनियों से संबद्ध किसी कम्पनी ने चीन में अब तक किसी टायर विनिर्माण फैक्ट्री की खरीद की है। अपोलो इंटरनेशनल लि० चीन के बाजार में विभिन्न किस्म के टायरों की खरीद कर तीसरे देश के बाजारों में उनकी बिक्री करता है। चीन के इन टायरों में से किसी का भी अपोलो टायर्स लि० द्वारा भारत को आयात नहीं किया गया है।

(iii) अपोलो इंटरनेशनल लि० ने अन्य बातों के साथ-साथ यह उत्तर दिया है कि :-

(क) 'प्रोडक्ट्स' में स्थित वेबसाइट में अपोलो टायर्स लि० एवं चीन से टायरों की 'सोर्सिंग' का उल्लेख किया गया है। जांच अवधि अर्थात् अप्रैल, 2004 से जून, 2005 की अवधि के दौरान कम्पनी द्वारा खरीदे गए विभिन्न प्रकार के टायरों की बिक्री भारत के बाहर की गई थी।

(ख) जैसा कि टायर टेक ग्लोबल से संबंधित वेबसाइट में उल्लिखित है, यह अपोलो इंटरनेशनल लि० का टायर निर्यात प्रभाग है।

(ग) यह स्पष्ट किया जाता है कि न तो अपोलो टायर्स लि०, और न ही अपोलो इंटरनेशनल लि०, न ही इन दोनों कम्पनियों से संबद्ध किसी कम्पनी ने चीन में अब तक किसी टायर विनिर्माण फैक्ट्री की खरीद की है। अपोलो इंटरनेशनल लि० चीन के बाजार में विभिन्न किस्म के टायरों की खरीद कर तीसरे देश के बाजारों में उनकी बिक्री करता है। नमों से किसी भी चीनी टायर का जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात नहीं किया गया है।

(घ) पूर्व में ***** के साथ बैठक के कार्यवृत्त पर हस्ताक्षर किए गए थे । यह तीसरे देश के बाजार में चीन के टायरों का निर्यात करने हेतु टायर व्यापार के बारे में था । उक्त कार्यवृत्त में (क) अमरीका को टायरों के निर्यात हेतु *** की खरीद (ख) ट्रक एवं बस रेडियल (ग) तीसरे देशों को बायस ट्रक टायर के निर्यात का संदर्भ दिया गया है ।

(iv) जेके इंडस्ट्रीज लि० ने अन्य बातों के साथ-साथ यह उत्तर दिया है कि :-

(क) बिजनेस लाइन में चीन के साथ समझौते के विषय में प्रकाशित समाचार में चीन के विनिर्माताओं से टायर खरीदने हेतु हमारी कम्पनी अथवा सहायक कम्पनियों द्वारा किए गए प्रयासों का उल्लेख किया गया है । यह स्पष्ट किया जाता है कि हमारी कम्पनी/सहायक कम्पनियों ने अब तक चीन में कोई वित्तीय निवेश नहीं किया है । हमारी एक सहायक कम्पनी चीन के विनिर्माताओं से विभिन्न किस्म के टायर खरीद कर, तीसरे देश में उनकी बिक्री करती है; इनमें से कोई भी टायर भारत में नहीं लाया जाता है ।

(ख) समूह का निर्यात व्यापार बढ़ाने के लिए, हमारी सहायक कम्पनी **** ने चीन के विनिर्माता से टायरों की खरीद की थी जिसकी बिक्री अंतरराष्ट्रीय बाजार में की गई है । यह व्यवस्था तीसरे देशों में बिक्री हेतु आउटसोर्सिंग के रूप में है न कि भारत में बिक्री के लिए ।

(ग) यह स्पष्ट किया जाता है कि हमने चीन के घरेलू बाजार में टायरों की बिक्री नहीं की है ।

(घ) चीन के अतिरिक्त किसी अन्य देश से कोई आउटसोर्सिंग संबंधी अनुबन्ध मौजूद नहीं है ।

(ङ.) क्षमता का विस्तार करने के लिए संयंत्रों का अधिग्रहण करने की योजना है - व्यवसाय के विस्तार की सामान्य प्रक्रिया में यह सतत कार्यवाही है ।

(च) वर्तमान अवस्थिति में ट्रक एवं यात्री लाइन रेडियल टायरों के लिए संयंत्र के विस्तार हेतु 150 करोड़ रु. के निवेश की योजना थी ।

(छ) तुलन पत्र में दिए गए वक्तव्य वैश्विक टायर बाजार में संभावित भावी घटनाओं की उम्मीद की ओर केंद्रित हैं । अतः तथ्यात्मक स्थिति इन वक्तव्यों से अलग है । वास्तविक स्थिति यह है कि जे के इंडस्ट्रीज या उसकी सहायक कंपनियों द्वारा भारतीय घरेलू बाजार में कोई आयात नहीं किया गया है । परीक्षण के प्रयोजनार्थ चीन से केवल छह बायस टायरों का आयात किया गया था ।

(v) बिरला टायर के संबंध में किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने संबंध एवं आयात संबंधी मुद्दों पर कोई तर्क नहीं दिया है ।

27. प्राधिकारी द्वारा जांच

(क) डीजीसीआईएंडएस के आयात संबंधी विवरण की सौदे- वार जांच की गई थी । यह पाया गया था कि घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया गया था । तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर यह पाया गया है कि जे के इंडस्ट्रीज तथा अपोलो टायर्स की सहायक कंपनियों द्वारा चीन से टायर खरीद कर उन्हें तीसरे देशों को बेचा जा रहा है । अतः यह

निर्धारण करना महत्वपूर्ण है कि क्या आयातित वस्तुएं देश के वाणिज्य में प्रवेश कर रही हैं। चूंकि वर्तमान प्रयोजन के लिए केवल भारत में आयात प्रासंगिक है इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान प्रयोजन के लिए अन्य देशों को निर्यात के लिए चीनी टायरों की खरीद प्रासंगिक नहीं है क्योंकि वह देश के वाणिज्य में प्रवेश नहीं कर रहा है। पहले की जांचों में भी जहां कहीं भी घरेलू उद्योग ने निर्यात के दायित्व के अंतर्गत शुल्क मुक्त लाइसेंस के तहत संबद्ध वस्तु का आयात किया है, प्राधिकारी ने ऐसी कंपनियों को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर नहीं निकाला है क्योंकि आयात देश के वाणिज्य में प्रविष्ट नहीं हो रहे होते हैं। अतः ऐसी स्थिति जिसमें किसी देश से वस्तु खरीद कर भारत में उसका आयात किए बिना तीसरे देश को उसका सीधे निर्यात कर दिया जाता है, की तुलना ऐसी स्थिति से की जा सकती है जिसमें निर्यात दायित्व के साथ भारत में शुल्क मुक्त आयात किए जाते हैं। दोनों ही स्थितियों में वस्तुएं देश के वाणिज्य में प्रवेश नहीं करती हैं।

(ख) प्राधिकारी की जानकारी में लाई गई किसी भी सूचना से यह स्थापित नहीं होता है कि इनमें से किसी भी कंपनी द्वारा भारतीय बाजार में चीनी बायस टायरों का आयात किया जा रहा है। इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि भारतीय उत्पादकों ने चीन स्थित उत्पादन सुविधाओं में निवेश किया है।

(ग) प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि नियमों में ऐसी किसी कंपनी को स्वतः ही बाहर कर देने का प्रावधान नहीं है जिसने स्वयं उत्पाद का आयात किया है या जो ऐसे किसी उत्पादक से संबंधित है। कोई भी हितबद्ध पक्षकार यह स्थापित नहीं कर पाया है कि यह मानते हुए कि किसी घरेलू उद्योग ने चीनी टायरों का आयात किया है, उसे घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर क्यों निकाल दिया जाए।

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि खण्ड 2(ख) के प्रयोजनार्थ

(i) किसी उत्पादक को केवल तभी निर्यातक या आयातक से संबंधित माना जाएगा यदि-

- (क) उनमें से एक द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे को नियंत्रित किया जाता हो; या
- (ख) दोनों का नियंत्रण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा किया जाता हो; या
- (ग) दोनों मिल कर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी तीसरे व्यक्ति को नियंत्रित करते हों बशर्ते यह मानने या संशय करने का कारण हो कि ऐसे संबंध का प्रभाव ऐसा है कि उससे उत्पादक असंबंधित उत्पादकों से अलग तरह का व्यवहार करते हों।

(ii) एक उत्पादक को दूसरे उत्पादक को नियंत्रित करता हुआ माना जाएगा जब पहला कानूनी या प्रचालनात्मक रूप से दूसरे को रोकने या अपने अनुसार चलाने की स्थिति में हो।

29. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने रिकॉर्ड में कोई ऐसी सामग्री दर्ज नहीं कराई है जिससे उपर्युक्त परिभाषा के भीतर संबंध स्थापित हो। अतः, यह स्थापित नहीं किया जा सका कि भारतीय उत्पादक चीन या थाइलैंड के उत्पादकों से संबंधित हैं ताकि उन्हें घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जा सके।

30. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि यह स्थापित नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग के किसी घटक को आयातों और/या संबंध के आधार पर बाहर रखा जाना अपेक्षित है। प्राधिकारी मानते हैं कि नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर अपोलो टायर्स, जे के टायर्स, सिएट लि. तथा बिरला टायर्स घरेलू उद्योग हैं।

घ. पाटन मार्जिन- सामान्य मूल्य

थाइलैंड

आवेदक का दावा

31. आवेदक ने दावा किया कि थाइलैंड के उत्पादक भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन कर रहे हैं। थाइलैंड के घरेलू बाजार में विद्यमान संबद्ध वस्तु की कीमतों के बारे में सूचना प्राप्त करने के प्रयास किए गए थे। तथापि, उनके घरेलू बाजार में संबद्ध उत्पाद की वास्तविक सौदा- बिक्री कीमत (किसी उत्पादक एवं थोक विक्रेता/वितरक के बीच) के बारे में कोई उचित, प्रमाणित एवं सटीक सूचना प्राप्त नहीं की जा सकी। उपर्युक्त को देखते हुए आवेदकों ने थाइलैंड में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए उत्पादन लागत के अनुमानों का प्रयोग किया है।

निर्यातकों/उत्पादकों का उत्तर

32. प्रारंभिक जांच परिणामों के जारी होने तक किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने उत्तर नहीं दिया था। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद मै. थाई ब्रिजस्टोन कं. लि., बैंकॉक ने अन्य बातों के साथ- साथ उत्तर दिया कि :-

यह आरोप लगाया गया है कि हमने उक्त बायस टायरों का भारत को निर्यात किया है जो हमारी कंपनी के मामले में सही नहीं है। ऐसे आरोप के उत्तर में हम यह सलाह देना चाहेंगे कि जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों में दावा किया गया है, हमने कभी भी भारत को बसों एवं लॉरियों/ट्रकों के बायस टायरों का निर्यात नहीं किया है। फिर भी, आरोप का निराकरण करने के लिए हम आपकी जांच को पूरा करने में आपको सहयोग करने के इच्छुक हैं। अतः हम चाहते हैं कि हमारी आगे की टिप्पणियों के लिए आप हमें संबंधित मामले में शिपिंग संबंधी दस्तावेजों के साक्ष्य और वस्तुओं की फोटो उपलब्ध कराएं।

33. घरेलू उद्योग से थाई ब्रिजस्टोन कं. लि. द्वारा निर्यात को दर्शाने वाले साक्ष्य प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। तथापि, उन्होंने यह कहते हुए साक्ष्य प्रस्तुत करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की कि उनके पास संगत सूचना उपलब्ध नहीं थी।

34. थाइलैंड के किसी भी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है।

35. धारा 9क(1)(ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

(i) समान वस्तु के लिए व्यापार की साधारण प्रक्रिया में तुलनीय कीमत जब वस्तु निर्यातक देश या सीमा क्षेत्र में उपभोग के लिए हो जैसा कि उप- धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारण किया गया है; या

(ii) जब निर्यातक देश या सीमा क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की साधारण प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्रियां न हों अथवा जब निर्यातक देश या सीमा क्षेत्र के घरेलू बाजार में बाजार की विशेष

स्थिति या बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों से उचित तुलना की अनुमति न मिले, सामान्य मूल्य या तो

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधि कीमत होगी, जब वस्तु निर्यातक देश या सीमा क्षेत्र या किसी उपयुक्त तीसरे देश से निर्यात की गई हो जैसा कि उप- धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारण किया गया है; या

(ख) प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों के लिए यथोचित वृद्धि के साथ- साथ उद्गम के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत और लाभों के लिए जैसा कि उप- धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्धारण किया गया है;

36. आवेदक ने दावा किया कि थाइलैंड के उत्पादक भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन कर रहे हैं। थाइलैंड के घरेलू बाजार में विद्यमान संबद्ध वस्तु की कीमतों के बारे में सूचना प्राप्त करने के प्रयास किए गए थे। तथापि, उनके घरेलू बाजार में संबद्ध उत्पाद की वास्तविक सौदा- बिक्री कीमत (किसी उत्पादक एवं थोक विक्रेता/वितरक के बीच) के बारे में कोई उचित, प्रमाणित एवं सटीक सूचना प्राप्त नहीं की जा सकी। उपर्युक्त को छोड़कर थाइलैंड के किसी भी उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया है या थाइलैंड में लागतों या कीमतों के बारे में प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है।

37. निर्दिष्ट प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैंड के किसी भी उत्पादक या निर्यातक ने वर्तमान जांच में सहयोग नहीं किया है। ऐसी परिस्थिति में निर्दिष्ट प्राधिकारी धारा 9(क)(ग)(i), जिसमें व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में घरेलू बाजार में उत्पाद की कीमत के संबंध में पर्याप्त सूचना अपेक्षित है, के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा प्राधिकारी धारा 9(क)(ग)(ii)(क), जिसमें तीसरे देशों को निर्यातों के संबंध में पर्याप्त सूचना अपेक्षित है, के अनुसार भी सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं कर सकते हैं। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए उचित रूप से समायोजित, परिकलित उत्पादन लागत के अनुमानों के आधार पर थाइलैंड में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

चीन जन. गण.

आवेदकों के दावे

38. आवेदकों ने दावा किया कि चीन को गैर- बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जाना चाहिए। आवेदकों ने सहोदर देश के रूप में श्रीलंका पर विचार करने का सुझाव दिया। प्रारंभिक जांच परिणामों के बाद याचिकाकर्ताओं ने इंगित किया कि

(क) उन्होंने पाया कि श्रीलंका की कंपनी द्वारा विभिन्न प्रकार के टायरों का उत्पादन एवं बिक्री की गई थी, परिकलन उत्पादित एवं बिक्री किए गए टायरों की सभी किस्मों/आकारों पर आधारित नहीं था।

(ख) उपलब्ध कराया गया परिकलन केवल टायरों के संबंध में था और उसमें ट्यूब्स एवं फ्लैप्स शामिल नहीं थे।

(ग) सूचना संकुचित अनन्तिम लेखों पर आधारित थी और उस समय तक लेखों की लेखा परीक्षा नहीं की गई थी ।

(घ) सूचना केवल 2004-05 पर आधारित थी, जबकि जांच अवधि अप्रैल 2004- जून, 2005 थी ।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ता ने अपने पूर्व में दावा किए गए 94.20 अम. डॉ. में संशोधन करके श्रीलंका के आधार पर सामान्य मूल्य के अपने दावे को 135.58 अम. डॉ. किया ।

39. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित तर्क भी दिए :-

(क) चीन से समय पर कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ । चीन के निर्यातक ने अपर्याप्त सूचना प्रस्तुत करने में भी 4-5 महीने का विलम्ब किया । विलम्ब से प्रस्तुत किए गए उत्तर को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए ।

(ख) प्रारंभिक जांच परिणाम के समय निर्धारित किए गए सामान्य मूल्य में त्रुटियाँ हैं और उसमें सुधार किए जाने की आवश्यकता है ।

(ग) जांच अवधि के बाद खड़ की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है और भारतीय उत्पादकों के पास अपनी कीमत बढ़ाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है । पूर्व में सिफारिश किया गया बेंचमार्क अब भारतीय उत्पादकों द्वारा कीमत वृद्धि में मुख्य बाधा है ।

(घ) मै. शेंगडॉंग जिन्गु टायर कं. लि., चीन द्वारा विलम्ब से उत्तर दिए जाने के कारण प्राधिकारी को उनका उत्तर स्वीकार नहीं करना चाहिए । किसी भी स्थिति में चीन सरकार के स्वामित्व एवं निविष्टियों तथा उत्पाद की कीमतों में उनके हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि में उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जा सकता है ।

(ड.) श्रीलंका में लागत या कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के परिकलन में त्रुटि है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को सामान्य मूल्य की उचित समीक्षा करनी चाहिए । आकलित सामान्य मूल्य पूरी तरह से कम है ।

निर्यातक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों का दावा

40. (क) शेंगडॉंग जिन्गु टायर कं. लि. (एसजेटीसीएल) ने निवेदन किया कि अपना उत्तर प्रस्तुत करने में विलम्ब इस कारण से हुआ कि उन्हें जांच शुरुआत के बारे में बहुत देर से पता चला । कंपनी ने इस कारण को बताने और स्वयं को दाग से बचाने तथा जांच में सहयोग करने का विकल्प प्रस्तुत किया । तथापि, एक बार जांच में सहयोग करने का निर्णय करने के बाद उन्होंने पूर्ण सूचना प्रस्तुत की है और वे मौके पर सत्यापन के लिए इच्छुक थे । उपर्युक्त को देखते हुए उन्होंने दावा किया कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैरा 1- 6 के अनुसार उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था तथा व्यक्तिगत व्यवहार प्रदान किया जाए ।

(ख) एसजेटीसीएल ने यह भी अनुरोध किया कि चूंकि उन्होंने सम्स्त सूचना प्रस्तुत की है, अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी को उनके लिए सकारात्मक या ऋणात्मक पाटन मार्जिन निर्धारित करना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा गुणवत्ता के मुद्दे की जांच की जानी चाहिए और गुणवत्ता में अंतर, जिसके लिए आवश्यक सूचना प्राधिकारी के रिकॉर्ड में उपलब्ध है, के लिए उचित समायोजन किया जाना चाहिए।

(ग) यह अनुरोध किया गया है कि एसजेटीसीएल ने प्रकथनों एवं प्रस्तुतीकरणों की सत्यता को दोहराया है। यह भी निवेदन किया गया है कि निर्यातक (एसजेटीसीएल) राज्य के नियंत्रण या हस्तक्षेप से मुक्त एक निजी लिमिटेड कंपनी है और यह बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर प्रचालन करती है।

(घ) याचिकाकर्ताओं द्वारा यह तर्क दिया गया है कि कच्ची सामग्रियों की लागत टायर की उत्पादन लागत का एक बड़ा हिस्सा है। यह निवेदन किया गया है कि यद्यपि घरेलू उद्योग के मामले में यह सही हो सकता है, तथापि उनके द्वारा विशेष टायरों का उत्पादन किया जा रहा है जिन्हें अधिक प्रतिरोध-सह और निष्पादनोन्मुख बनाने के लिए उन्हें अतिरिक्त प्राकृतिक रबड़ से ढका जाता है और उनमें अधिक इंजीनियरी होती है। परन्तु चीन के मामले में यह सही नहीं है जहां उत्पादक/निर्यातक लागत में कमी करने के लिए निम्न श्रेणी की सामग्री से टायर का उत्पादन एवं निर्यात कर रहे हैं। आम तौर पर चीन के उत्पादकों और विशेष रूप से एसजेटीसीएल द्वारा निर्यातित टायर पुनः-प्रयुक्त तथा पुनः तला लगाए गए टायरों के साथ तुलनीय हैं और उनका प्रयोग ट्रैक्टर ट्रॉलियों में किया जाता है जहाँ निष्पादन बहुत महत्वपूर्ण कारक नहीं होता है।

(ङ.) भारतीय टायर कंपनियाँ टायरों के उत्पादन में पुनः प्राप्त रबड़ का उपयोग नहीं करती हैं जबकि चीन की कंपनियाँ अपने टायरों के उत्पादन में इनका अत्यधिक प्रयोग करती हैं जिससे उनकी कीमतें और कम हो जाती हैं।

(च) यह आरोप कि चीन के उत्पादक रबड़ का उत्पादन करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, आधारहीन, गलत और अपात्र है।

(छ) याचिकाकर्ताओं ने आरोप लगाया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों के समय सामान्य मूल्य का निर्धारण त्रुटिपूर्ण था क्योंकि उसमें कुछ त्रुटियाँ थी परन्तु उन्होंने उन त्रुटियों को गुप्त रखा है।

(ज) चीन जन. गण. तथा थाइलैंड के आयातों पर पाटन मार्जिन को बढ़ाने के लिए याचिकाकर्ता द्वारा सामान्य मूल्य से संबंधित आंकड़ों को अन्तर्वेशित किया गया है। यह निवेदन किया गया है कि भारतीय प्रथाओं के अनुसार शुल्क पाटन मार्जिन या क्षति मार्जिन जो भी कम हो, उस पर लगाया जा सकता है। उपर्युक्त का देखते हुए यह निवेदन किया गया है कि टायर संघटन और विनिर्माण प्रक्रिया में अंतर के कारण याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त, वे प्रशासनिक बिक्री तथा सामान्य व्ययों जैसे ऊपरी खर्चों पर अत्यधिक व्यय करते हैं जिससे उनकी उत्पादन लागत और बढ़ जाती है। तथापि, यह चीन के लिए सत्य नहीं है क्योंकि वे न्यूनतम लागत के आधार पर काम करते हैं और वितरण नेटवर्क की ऐसी स्थापना पर व्यय नहीं करते हैं जिससे विचाराधीन उत्पादन की उनकी लागत कम हो जाती है।

प्रयोक्ताओं एवं आयातकों के एसोसिएशनों की टिप्पणियाँ

41. सामान्य मूल्य के प्रयोजनार्थ श्रीलंका को समुचित सहोदर देश मानने का प्रतिवाद करते हुए उत्तरदाता एसोसिएशनों ने तर्क प्रस्तुत किए हैं। चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने के याचिकाकर्ता के अनुरोध के विरुद्ध उन्होंने कोई ठोस साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। एसोसिएशन ने यह दावा किया है कि श्रीलंका के बाजार में पर्याप्त प्रतिस्पर्धा का अभाव होने और श्रीलंका के उत्पादक के एक भारतीय उत्पादक से संबंधित होने के कारण श्रीलंका को समुचित सहोदर देश नहीं माना जा सकता। घरेलू उद्योग द्वारा ओईएम तथा खुदरा क्षेत्र को आपूर्ति तायरों में भिन्नता है। यह भी दावा किया गया है कि थाईलैण्ड के मामले में सामान्य मूल्य की संरचना हेतु आंकड़ों का उपयोग करते समय ओईएम खण्ड में घरेलू उद्योग की लागत की गणना करने की आवश्यकता होगी।

42. प्राधिकारी ने नोट किया है कि शेंगडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. (जिसे एतदपश्चात् जिन्यू टायर कहा गया है) को छोड़कर चीन अथवा थाईलैण्ड के किसी भी उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं भेजा है। शेंगडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. को छोड़कर चीन के उत्पादकों में से किसी ने भी बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा देने का दावा नहीं किया है और न ही निर्धारित प्रश्नावली में उत्तर प्रस्तुत किए हैं। शेंगडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. ने दावा किया है कि उनकी कम्पनी को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जाना चाहिए। जिन्यू टायर ने पहला उत्तर दिनांक 21 जून, 2006 को प्रस्तुत किया, जिसमें भारी कमियाँ थीं। इसके अलावा, यह भी पाया गया कि प्रस्तुत किए गए उत्तर में प्रश्नावली से संबंधित परिशिष्ट शामिल नहीं है जिनके बारे में कहा गया कि इन्हें अलग से प्रस्तुत किया जा रहा है। अतिरिक्त सूचना भी दिनांक 21 जुलाई, 2006 को उपलब्ध कराई गई और यह भी अपूर्ण थी। यद्यपि, उत्तर निर्धारित समय सीमा से बहुत बाद में प्राप्त हुए तथापि, प्राधिकारी ने इनकी जांच करना उचित समझा। उत्तरों की जांच में यह देखा गया कि बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा देने की दृष्टि से ये अपूर्ण और अपर्याप्त हैं। प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित किए जाने के बाद जिन्यू टायर्स ने यह दावा करते हुए उत्तर प्रस्तुत किया कि उन्हें बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जाए। प्राधिकारी ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किए जाने के उनके दावे सहित जिन्यू टायर का मौके पर सत्यापन करने का निर्णय लिया।

जिन्यू टायर्स का सत्यापन

बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) संबंधी प्रश्नावली

43. (क) निर्यातक द्वारा यह स्पष्ट किया गया था कि शेंगडॉंग जिन्यू टायर फैक्टरी की स्थापना **** को की गई थी। फैक्टरी की शुरुआत के समय उसका नाम डॉंगयिंग जिन्यू टायर फैक्टरी था।

(ख) सत्यापन दौरे के दौरान निर्यातक कंपनी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने विभिन्न रिकॉर्डों जैसे भुगतान की गई पूंजी के स्रोत, मशीनें किस प्रकार प्राप्त की गईं और इसका साक्ष्य तथा निगमन के समय से कंपनी की संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हों, के साक्ष्य की माँग की। कंपनी से अचल सम्पत्ति रजिस्टर तथा अन्य वित्तीय दस्तावेज प्रस्तुत करने को भी कहा गया। पूंजीगत योगदान के कारण कंपनी के खातों में रकम प्राप्त होने को दर्शाने वाला कोई दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जा सका। पूंजीगत योगदान के स्रोत के संबंध में निबंधन एवं शर्तों और रकम के वास्तविक प्रवाह को दर्शाने वाला कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया। निर्यातक से दस्तावेजी साक्ष्य सहित यह स्पष्ट करने को कहा गया कि मशीनें किस प्रकार प्राप्त की गई थीं। तथापि, उनके द्वारा मशीनों की प्राप्ति, प्राप्ति की प्रक्रिया और कि क्या उन्हें उचित बाजार कीमत पर प्राप्त किया गया था, इस संबंध में कोई

दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जा सका। कंपनी ने माना कि कंपनी का नाम डॉंग रिंग जिन्यू टायर फैक्टरी से बदल कर शेंगडॉंग जिन्यू टायर कं. लि. किया गया था और कंपनी की किस्म को सामूहिक उद्यम से बदल कर लिमिटेड देयता कंपनी किया गया था। उनसे सामूहिक उद्यम और लिमिटेड देयता कंपनी के बीच के अंतर को स्पष्ट करने को कहा गया था जिसे वे न तो वैचारिक रूप से स्पष्ट कर सके और न ही दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत कर सके। यह भी स्पष्ट नहीं किया गया था कि किन परिस्थितियों में कंपनी का प्रकार बदला गया और इसका क्या प्रयोजन था।

(ग) कंपनी से *** के बाद के लेखा बही, वित्तीय लेखे, तुलन पत्र आदि प्रस्तुत करने को कहा गया था जिसे प्रस्तुत करने में उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त की और इसलिए अवल परिसम्पत्तियों तथा अनुपालन की गई प्रक्रिया का सत्यापन नहीं किया जा सका।

(घ) वर्ष **** की पूंजीगत संरचना यह दर्शाती है कि शेंगडॉंग जिन्यू टायर कं. लि. की श्रमिक यूनियन के पास **** मिलियन आरएमबी की प्रदत्त पूंजी थी जो कि *** मिलियन आरएमबी की प्रदत्त पूंजी का *** हिस्सा है। निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार यह दावा किया गया था कि वह एक निजी लिमिटेड कंपनी है जबकि सत्यापन के दौरान कंपनी ने **** शेयरधारकों की एक सूची प्रस्तुत की, जो सभी स्वतंत्र शेयरधारक हैं। तथापि, कोई दस्तावेजी साक्ष्य और शेयरों के मूल्यांकन सहित अनुपालन की गई प्रक्रिया का विवरण कंपनी प्रस्तुत नहीं कर सकी। निधि के स्रोत को भी प्रकट नहीं किया गया था। कंपनी से आयकर आकलन रिकॉर्ड, बैट विवरण रिकॉर्ड, सरकार से प्राप्त किया गया कोई अन्य अनुमोदन, जिससे पूंजी संरचना, कंपनी के प्रकार, शेयरधारिता पैटर्न आदि को दर्शाया जा सके जैसा कोई अन्य सरकारी रिकॉर्ड प्रस्तुत करने को भी कहा गया था परन्तु कंपनी प्राधिकारी के लिए संतोषजनक कोई रिकॉर्ड प्रस्तुत नहीं कर सकी। कंपनी से चीन के सीमाशुल्क प्राधिकरण के पास दर्ज अपनी कंपनी पहचान सं. प्रस्तुत करने को भी कहा गया था, जिसे प्रस्तुत नहीं किया गया था। घरेलू उद्योग ने भारत को चीन से विद्यारधीन उत्पाद के निर्यात को दर्शाते हुए एक विवरण प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार **** में भी मै. शेंगडॉंग जिन्यू टायर कं. लि. सामूहिक स्वामित्व वाला उद्यम बना हुआ है। इसका सत्यापन करने के लिए कंपनी से पहचान सं. की मांग की गई जिसे वे प्रस्तुत नहीं कर सके। तथापि, उन्होंने अस्वीकार किया कि वे अब भी सामूहिक स्वामित्व वाला उद्यम हैं और कहा कि व्यवसाय लाइसेंस के अनुसार वे सीमित देयता वाली कंपनी हैं।

(ङ.) प्राधिकारी ने नोट किया है कि कंपनी की संरचना, शेयरधारिता का पैटर्न, शेयरधारकों की निधि का स्रोत, कंपनी द्वारा परिसम्पत्तियों का अधिग्रहण, उसमें पालन की गई प्रक्रिया, अधिग्रहण की कीमत बाजार कीमत को दर्शाती है या नहीं, इन सब को सत्यापन दौरे के दौरान दस्तावेजी साक्ष्यों द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सका।

संबंधित पार्टी सौदे

(च) सत्यापन दौरे के दौरान प्राधिकारी द्वारा यह भी देखा गया कि कच्चे माल की खरीद के संबंध में निर्यातक कंपनी के कुछ अप्रकट संबंधित पार्टी सौदे हुए हैं। चूंकि निर्यातक के उत्तर में संबंधित पार्टी सौदों को प्रकट नहीं किया जा सका था, इसलिए सौदों के औचित्य को सत्यापित नहीं किया जा सका। कंपनी से ऐसे संबंधित पक्षों के साथ सौदों का ब्यौरा और ऐसे संबंधित पक्षों का लेजर खाता प्रस्तुत करने को कहा गया था, जो प्रस्तुत नहीं किया गया था।

बिक्री

(छ) कंपनी ने दावा किया है कि वे भारत तथा अन्य एशियाई देशों को ग्रेड- 3 बायस टायरों का निर्यात कर रहे हैं जबकि घरेलू बिक्री तथा अमेरिका को निर्यात ग्रेड- 1 का है। तथापि, घरेलू बीजकों तथा भारत एवं अन्य एशियाई देशों को निर्यात के बीजकों के अध्ययन से यह पाया गया था कि उनमें ग्रेड का उल्लेख नहीं किया गया था और इसलिए घरेलू बाजार एवं अमेरिका की तुलना में भारत को अलग ग्रेड के निर्यात संबंधी निर्यातक के दावे को स्थापित नहीं किया जा सका। निर्यातक के दावे का समर्थन साक्ष्यों से नहीं किया गया है। कंपनी ने दावा किया है कि भारत को निर्यातित उत्पाद की गुणवत्ता निम्न श्रेणी की है। कंपनी से भारत को निर्यातित तथा घरेलू बाजार में बेचे गए ग्रेडों के लिए कच्चे माल की खपत को दर्शाने वाले संयंत्र रिकॉर्ड उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था परन्तु ऐसा कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं कराया गया। अतः यह स्थापित नहीं किया जा सका कि कंपनी द्वारा किए गए दावे के अनुसार ग्रेड- 1 तथा ग्रेड- 3 अलग- अलग उत्पाद हैं। यह भी देखा गया था कि जांच अवधि के दौरान उत्पाद की कीमतें लगभग एक समान बनी रही थीं जबकि निर्यातक के प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार उत्पाद लागत में परिवर्तनों के अनुसार कीमतें निर्धारित की जाती हैं। तथापि, इस संबंध में कुछ भी प्रमाणित नहीं किया जा सका जबकि कच्चे माल की कीमतों में कमी- बेशी हुई थी। यह दर्शाता है कि माँगी गई कीमतें उत्पादन लागत के अनुसार नहीं हैं और वे लागत को नहीं दर्शाती हैं। कंपनी द्वारा दिया गया एकमात्र स्पष्टीकरण यह था कि जब भी कच्ची सामग्रियों की कीमतों में परिवर्तन हुआ, वे कच्ची सामग्रियों के मिश्रण में इस प्रकार परिवर्तन करते हैं कि उन्हें हमेशा लाभ होता है। कंपनी की वस्तु सूची यह दर्शाती है कि ये मानक उत्पाद हैं और इसलिए सामान्य शैली में कच्चे माल के खपत के पैटर्न में परिवर्तन नहीं हो सकता है। तथापि, कंपनी ने अपना यह मत बनाए रखा कि वे ऐसा कर रहे हैं परन्तु उसे दस्तावेजों से प्रमाणित नहीं कर सके। कंपनी से निर्यात के शिपिंग बिलों की प्रतियाँ प्रस्तुत करने को भी कहा गया जिसके बारे में उन्होंने न होने का दावा किया। तथापि, उन्होंने भारत तथा अन्य एशियाई देशों को निर्यातों के बीजकों की प्रति प्रस्तुत की।

लेखांकन संबंधी मुद्दे

(ज) कंपनी से निदेशकों की रिपोर्ट तथा नकद प्रवाह विवरण सहित वार्षिक लेखों की विभिन्न अनुसूचियों को दर्शाने वाले उनके वार्षिक लेखों का सम्पूर्ण सेट प्रस्तुत करने को कहा गया था। तथापि, कंपनी ने यह मत बनाए रखा कि उनके पास जो भी उपलब्ध था, निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में प्रस्तुत कर दिया गया था। वार्षिक लेखों के अध्ययन पर यह इंगित किया गया था कि वे कच्चे माल की खपत, श्रमिक, अनुप्रयोज्यता, फ़ैक्टरी ऊमरी व्यय, बिक्री खर्च जैसे विभिन्न संघटकों के लिए अलग- अलग ब्यौरे के बिना कुल व्यवसाय प्राप्तियाँ, कुल व्यवसाय खर्च और लाभ दर्शाते हैं। कंपनी कोई ब्यौरा प्रस्तुत नहीं कर सकी। अतः ऐसे ब्यौरों की अनुपस्थिति तथा सत्यापन यात्रा के पूर्व प्रकट न किए गए नए कार्यकलापों के कारण विभिन्न कार्यकलापों के लिए व्ययों के आवंटन को सत्यापित नहीं किया जा सका। अचल परिसम्पत्तियों से संबंधित अद्यतन रजिस्टर भी प्रस्तुत नहीं किया गया। कंपनी से लेखा परीक्षकों की नियुक्ति के बारे में स्पष्टीकरण देने को कहा गया था और उन्होंने कहा कि उनकी नियुक्ति प्रबंधन द्वारा की जाती है। तथापि, वे बोर्ड की बैठक का कोई कार्यवृत्त रिकॉर्ड में प्रस्तुत नहीं कर सके। चीन के कंपनी कानून के अध्ययन पर यह दर्शाया गया कि लेखापरीक्षकों की नियुक्ति शेयरधारकों द्वारा की जानी होती है। तथापि, यह उत्तर दिया गया था कि उन्हें ऐसे किसी उपबंध की जानकारी नहीं थी और उन्हें शेयरधारकों द्वारा भी नियुक्त किया जा सकता था। इस संबंध में दस्तावेजी साक्ष्य सहित कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं दिया गया था। निर्यातक प्रश्नावली में विशेष रूप से यह अपेक्षा की गई है

कि प्रबंधकीय व्यक्तियों के वर्तमान पद से पूर्व के पद को प्रकट किया जाना आवश्यक है। तथापि, उत्तर में इसे प्रस्तुत नहीं किया गया है और सत्यापन के दौरान भी इसे प्रस्तुत नहीं किया गया था। सत्यापन के दौरान निदेशकों की सूची भी प्रस्तुत नहीं की गई थी। कंपनी से इस विषय में विस्तार से स्पष्टीकरण देने को कहा गया था, जो वे प्रस्तुत नहीं कर सके थे। तुलन पत्र में प्रदर्शित परिसम्पत्तियाँ, भूमि अधिग्रहण संबंधी अधिकार शीषों के अंतर्गत आने वाले निबंधन एवं राशि को स्पष्ट नहीं किया गया था।

(झ) कंपनी से यह स्पष्ट करने को कहा गया था कि क्या विनियम दर निर्धारित थी या बाजार स्थिति के अनुसार उसमें परिवर्तन होता था। कंपनी ने स्पष्ट किया था कि पूरी जांच अवधि में यह 1 अम. डॉ. बराबर 8.28 आरएमबी की थी और वह बाजार संकेतकों को दर्शाने वाले परिवर्तनों के अधीन नहीं थी।

लागत संबंधी सूचना का सत्यापन- परिशिष्ट 5 से 9

() कंपनी मूलभूत वित्तीय रिकॉर्ड प्रस्तुत नहीं कर सकी। यहाँ तक कि परिशिष्ट में दर्शाए गए आंकड़ों के परिकलन हेतु बैंक अप कागजात भी प्रस्तुत नहीं किए जा सके। इन बैंक अप कागजातों/कार्यकारी शीटों की अनुपस्थिति में परिशिष्ट में दी गई सूचना का सत्यापन करना संभव नहीं था। जब यह पूछा गया कि क्या परिशिष्ट में दी गई सूचना लेखा बही से ली गई थी, यह स्पष्ट किया गया था कि उन्होंने प्रति इकाई राशि का अनुमान लगाकर उसे परिशिष्ट में दर्शाया है।

44. सत्यापन के बाद निर्यातक को सत्यापन रिपोर्ट उसकी टिप्पणी के लिए भेजी गई थी। उन्होंने अपनी घरेलू बिक्री, भाड़े की दर, घरेलू बाजार, अमेरिका तथा भारत में बेचे गए टायरों की लागत के विवरण संबंधी कुछ अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत की। तथापि, उनके द्वारा प्रस्तुत किसी भी सूचना का सत्यापन नहीं किया जा सका क्योंकि उन्होंने यह सूचना सत्यापन दौरे के बाद प्रस्तुत की थी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

45. निर्यातक को मौके पर सत्यापन के बारे में अग्रिम सूचना दी गई थी। निर्यातक को लेखा बही, दस्तावेज, कार्यकारी शीट आदि तैयार रखने तथा सत्यापन के दौरान उन्हें प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी। नियमों में किए गए निर्धारण के अनुसार, मौके पर सत्यापन का मुख्य प्रयोजन दी गई सूचना या/और व्यौरों का सत्यापन करना है। जैसा कि ऊपर विवरण दिया गया है, यद्यपि निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार, गुणवत्ता, घरेलू बाजार में बिक्री कीमत, निविष्टियों की बाजार कीमत का प्रदर्शन आदि प्रदान किए जाने का दावा किया है, परन्तु इनमें से किसी भी दावे को सत्यापन दौरे के दौरान सत्यापित नहीं किया जा सका। यह विशेष रूप से देखा गया था कि कंपनी की संरचना, शेरधारिता का पैटर्न, शेरधारकों की निधि का स्रोत, कंपनी द्वारा परिसम्पत्तियों का अधिग्रहण, उसमें पालन की गई प्रक्रिया, क्या अधिग्रहण कीमतें बाजार कीमतों को दर्शाती हैं आदि को दस्तावेजी साक्ष्य से प्रमाणित नहीं किया जा सका और इसलिए प्राधिकारी बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने की स्थिति में नहीं हैं। तदनुसार, प्राधिकारी ने निर्यातक को गैर- बाजार अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रचालन करता हुआ माना है। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी चीन की किसी भी कंपनी पर नियम के अनुबंध के पैरा 8 को लागू करने की स्थिति में नहीं हैं और उन्होंने नियम के अनुबंध के पैरा- 7 के अनुसार कार्यवाही की है।

46. इन नियमों के अनुसार, चीन के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नांकित में से किसी आधार पर किया जा सकता है :-

- (क) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश की कीमत के आधार पर; या
- (ख) बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में परिकल्पित मूल्य के आधार पर; या
- (ग) भारत सहित अन्य देशों को ऐसे तीसरे देश की कीमत के आधार पर ।
- (घ) यदि ऊपर उल्लिखित विकल्पों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता, तो निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी अन्य न्यायोचित आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित कर सकते हैं, जिसमें समान उत्पाद के लिए वास्तव में प्रदत्त कीमत अथवा भारत में देय कीमत शामिल हैं, जिसमें लाभ की समुचित मार्जिन का समायोजन भी किया गया हो ।

47. प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित करते समय चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए श्रीलंका को समुचित सहोदर देश के रूप में विचार करने के संबंध में याचिकाकर्ता के प्रस्ताव की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई थी । यह पाया गया कि चीन के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु श्रीलंका को एक समुचित तीसरा देश होने के आवेदक के दावे को अस्वीकार करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं । वास्तव में यह नोट किया गया कि भारत में देय कीमत जिसमें लाभ की मार्जिन का समायोजन भी शामिल है, पर विचार करने से सामान्य मूल्य की राशि का निर्धारण अधिक हो सकता था । रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य पर विचार करने के बाद प्रारंभिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ आवेदक द्वारा प्रस्तुत श्रीलंका में संरचित कीमत (जो दिए गए विकल्पों में सबसे कम थी) के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करना प्राधिकारी द्वारा उचित पाया गया । प्रारंभिक जांच परिणाम के पश्चात आवेदक द्वारा सामान्य मूल्य संबंधी दावे में संशोधन कर लिया गया, जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है ।

48. प्रारंभिक जांच परिणाम में श्रीलंका को सहोदर देश मानने का कारण यह था कि उसका सामान्य मूल्य भारतीय कीमतों/लागत की तुलना में कम था । श्रीलंका को सहोदर देश मानने के आधार पर सामान्य मूल्य में संशोधन करके उसे बढ़ाने तथा निर्यातक के परिसर के सत्यापन दौर के समय पर्याप्त जानकारी की अनुपलब्धता के मद्देनजर प्राधिकारी द्वारा समुचित सहोदर देश के चयन की जांच की गई । श्रीलंका के बारे में आवेदक द्वारा उपलब्ध कराई गई अधिक सूचना के आधार पर निम्नलिखित कारणों से श्रीलंका को समुचित सहोदर देश के रूप में विचार में नहीं लाया गया :-

(क) श्रीलंका की कम्पनी (सीएट केलानी) की घरेलू बिक्री का स्तर बहुत कम है । जांच अवधि के दौरान कम्पनी द्वारा उत्पादन तथा बिक्री की मात्रा 71000 नग टायर है ।

(ख) प्राधिकारी द्वारा पहले प्रति टीटीएफ अर्थात् टायर के सेट, ट्यूब तथा फ्लैप के रूप में निर्धारित *** डॉलर (घरेलू उद्योग के **** डॉलर के दावे के बदले) के बदले याचिकाकर्ता ने सामान्य मूल्य के अपने दावे में उल्लेखनीय संशोधन करते हुए इसे लगभग **** डॉलर कर दिया है । यद्यपि याचिकाकर्ता का दावा न्यायोचित है, तथापि यह देखा जा सकता है कि श्रीलंका का चयन भारत के मुकाबले चीन के उत्पादकों के लिए अधिक लाभदायक होगा ।

(ग) हितबद्ध पक्षों ने श्रीलंका को समुचित अर्थ-व्यवस्था वाला तीसरा देश मानने पर आपत्ति की है क्योंकि सीएट केलानी, जिन्होंने श्रीलंका के आंकड़े प्रस्तुत किए हैं, याचिकाकर्ता अर्थात् सीएट लिमिटेड से संबंधित हैं ।

(घ) श्रीलंका में केवल एक उत्पादक है। भारतीय उत्पादकों की तुलना में उस कम्पनी का पैमाना बहुत छोटा (71000 नग) है और भारतीय उत्पादन के 1% से भी कम है। चीन के उत्पादकों की तुलना में भी यह बहुत कम हो सकता है (सही उत्पादन ज्ञात नहीं है, परंतु यह भी उल्लेखनीय होना चाहिए क्योंकि एकमात्र उत्पादक, जिन्होंने उत्तर दिया है, की क्षमता 1 मिलियन टायर के उत्पादन की है)।

49. थाइलैंड निम्नलिखित कारणों से उपयुक्त प्रतीत नहीं होता :-

(क) थाई उत्पादकों ने प्राधिकारी को उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। इस प्रकार थाइलैंड के मामले में सामान्य मूल्य उत्पादन की संरचित लागत पर आधारित है।

(ख) चीन से निर्यातों की तुलना में थाइलैंड से निर्यात बहुत ही कम हैं।

50. तदनुसार, प्राधिकारी द्वारा सभी हितबद्ध पक्षों को दिनांक 19 जनवरी, 2007 को एक पत्र भेजा गया जिसमें यह अभिमत व्यक्त किया गया कि चीन में संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भारत में विधिवत समायोजित उत्पादन लागत ही समुचित आधार होगी। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसरण में सभी हितबद्ध पक्षों से अपनी टिप्पणियाँ प्राधिकारी के विचारार्थ भिजवाने का अनुरोध किया गया।

51. पत्र के संदर्भ में हितबद्ध पक्षों ने निम्नलिखित उत्तर दिया है :-

(क) भारतीय विनिर्माताओं द्वारा टायरों की लागत/कीमत निर्धारण निविष्टियों अथवा अन्य विनिर्माण लागत में वास्तविक वृद्धि पर आधारित नहीं होता। अतः भारत में देय कीमतों पर आधारित सामान्य मूल्य सही नहीं है। चूँकि अनन्तिम जाँच परिणाम में टायर, ट्यूब व फ्लैप पर शुल्क अलग-अलग था, अतः आवेदक यह दावा कैसे कर सकता है कि ट्यूब व फ्लैप की लागत को छोड़ दिया गया।

(ख) जाँच के अंतिम चरण में सामान्य मूल्य में संशोधन करने का दावा न्यायोचित नहीं है और ऐसा करना अनुचित साधनों के प्रयोग से अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राधिकारी को गुमराह करना है। चूँकि वर्ष 2004-05 से संबंधित आंकड़ों की लेखा परीक्षा इन्हे प्राधिकारी को प्रस्तुत करने से पहले ही कर ली गई होगी, अतः इससे आंकड़ों की विश्वसनीयता पर गम्भीर संदेह होता है।

(ग) सीएट केलानी घरेलू उद्योग की एक कम्पनी से संबंधित है और चूँकि घरेलू उद्योग ने आंकड़े टायर ट्यूब तथा फ्लैप के आधार पर प्रदान किए थे। अतः यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि सीएट केलानी ने ट्यूब व फ्लैप की लागत को छोड़ दिया है। प्राधिकारी के लिए यह अत्यंत अनुचित है कि उन्होंने अनन्तिम परिणाम में इस त्रुटि का उल्लेख नहीं किया और मामले की शुरुआत अप्राधिकृत एवं असत्यापित सूचना के आधार पर प्रमाणीकरण प्रति प्राप्त किए बगैर ही कर दी गई।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

52. प्रारम्भिक जाँच परिणाम में श्रीलंका को सहोदर देश के रूप में मानने के आधार पर सामान्य मूल्य अपनाने का कारण यह था कि यह भारतीय कीमत/लागत से कम था। याचिकाकर्ता ने यह स्वीकार करते हुए कि कोई त्रुटि हो गई थी, मूल्य में संशोधन किया है। जैसा कि ऊपर उल्लेख है, कि यदि

संशोधित दावे के आधार पर सामान्य मूल्य अपनाया जाता है तो यह चीन के उत्पादकों के लिए लाभदायक होगा और परिणामस्वरूप पाटन मार्जिन अधिक होगी। घरेलू उद्योग के दावे का खण्डन करते समय किसी भी हितबद्ध पक्ष ने किसी अन्य उचित सहोदर तीसरे देश का सुझाव नहीं दिया। अतः भारत में उत्पादन लागत, जिसमें लाभ की मार्जिन को विधिवत समायोजित किया गया है, के आधार पर चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य के निर्धारण को प्राधिकारी उचित मानते हैं।

ड. निर्यात कीमत

53. प्रयोक्ताओं तथा आयातकों के एसोसिएशन ने तर्क दिया है कि अप्रैल, 2005 - जून, 2005 तिमाही के संबंध आईबीआईएस के अनुसार आयात संबंधी जानकारी को प्राधिकारी द्वारा स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए था। यह दावा किया गया कि शीर्ष 40112090 के अंतर्गत आयातों में कतिपय अन्य टायर भी शामिल हैं, जिन्हें छोड़ दिया जाना चाहिए।

54. अपने आवेदन में आवेदकों ने कहा है कि आवेदन प्रस्तुत करते समय अप्रैल, 05 - जून, 05 अवधि के लिए डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा प्रदत्त आयातों संबंधी सौदेवार सूचना उपलब्ध नहीं थी, अतः इस अवधि के लिए आवेदक आईबीआईएस आंकड़ों पर निर्भर रहे। आवेदकों ने यह भी तर्क प्रस्तुत किया कि प्राधिकारी ने अनेक जांचों में आयातित सामग्री की मात्रा व मूल्य के बारे में आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सूचना पर विचार किया है और न ही उत्तरदाता पक्षों ने कोई कारण दिया है कि आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सूचना गलत व अविश्वसनीय होगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जब सम्पूर्ण अवधि के लिए डीजीसीआई एण्ड एस के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं तो आईबीआईएस की सूचना का उपयोग करना अनुचित प्रतीत नहीं होता।

55. शुरुआत के उपरांत डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा सम्पूर्ण जांच अवधि के संबंध में सौदा-दर-सौदा आयात संबंधी सूचना उपलब्ध करा दी गयी। तदनुसार आयात की मात्रा व निर्यात कीमतों का निर्धारण इसी आधार पर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि शेनडांग जीन्यू टायर कम्पनी लि० के उत्तर को छोड़कर किसी भी संबद्ध निर्यातक ने कोई सहयोग नहीं दिया और न ही इस संबंध में कोई अन्य सूचना प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की गयी।

सहयोगी निर्यातक शेनडांग जीन्यू टायर कम्पनी के संबंध में सीआईएफ निर्यातक कीमत का निर्धारण उनके द्वारा प्रस्तुत निर्यात आंकड़ों के आधार पर किया गया है। चीन जन.गण. के असहयोगी निर्यातकों के मामले में निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएस से जांच अवधि के लिए प्राप्त सौदेवार आंकड़ों में से निर्यातों की मात्रा व मूल्य घटाकर किया गया है। सहयोगी निर्यातक की कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए इस प्रकार निर्धारित निर्यात कीमतों का समायोजन समुद्री मालभाड़े तथा समुद्री बीमें में करने का प्रस्ताव है। जहां तक असहयोगी निर्यातकों का प्रश्न है, निवल निर्यात कीमत की गणना समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमें, कमीशन, अन्तर्देशीय मालभाड़े, पत्तन व्ययों, बैंक प्रभारों, अप्रत्यक्ष करों एवं उधार लागतों पर किए गए व्यय, जिनका दावा याचिकाकर्ता ने किया है, को घटाने के बाद की गई है। समायोजनों के पश्चात निवल निर्यात कीमत सहयोगी निर्यातकों के लिए **** अम.डॉ. प्रति टीटीए तथा चीन जन.गण. के असहयोगी निर्यातकों के लिए **** अम.डॉ. प्रति टीटीएफ निर्धारित की गई है।

च. पाटन मार्जिन

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत की तुलना व्यापार के सभी स्तरों पर उचित तुलना होनी चाहिए। प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत, दोनों का निर्धारण कारखाना-द्वार-स्तर पर किया है। यह नोट किया जाता है कि इस उत्पाद का आयात टायर, ट्यूब व फ्लैप (टीटीएफ) के सैट, अथवा ट्यूब व टायर (टीटी) के सैट अथवा केवल टायर के रूप में किया जाता है। प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण विभिन्न उत्पाद कॉम्प्लीनेशनों, जिनका आयात किया के लिए अलग-अलग तौर पर किया है और उनकी तुलना की है। सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत दोनों एक ही अवधि से संबंधित है। बिक्री की निबंधनों व शर्तों में कोई ज्ञात भिन्नताएँ नहीं हैं। दोनों कीमतें करों से मुक्त हैं। इस प्रकार प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस प्रकार की गई तुलना उचित तुलना है। ऊपर उल्लिखित तरीके से निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जो निम्नानुसार है :-

	पाटन मार्जिन %
चीन	
जीन्यू	233%
अन्य	294%
थाईलैंड	291%

**छ. घरेलू उद्योग को क्षति
संचयी आकलन**

57. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (iii) में यह प्रावधान है कि यदि एक से अधिक देशों के उत्पाद के आयातों की जांच एक साथ की जा रही हो तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारण हो जाता है कि (क) प्रत्येक देशों से आयातों के लिए निश्चित पाटन की मार्जिन निर्यात कीमत को प्रतिशत के रूप में व्यक्त करने पर दो प्रतिशत से अधिक हो तथा प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों के तीन प्रतिशत से अधिक हो अथवा जहाँ अलग-अलग देशों द्वारा निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो, संचयी आयात समान वस्तु के आयातों से सात प्रतिशत से अधिक हो, और (ख) आयातित वस्तु और घरेलू समान वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के कारण आयातों के संचयी प्रभाव का आकलन करना उचित हो।

58. प्राधिकारी ने इस बात पर विचार किया कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी आकलन उचित होगा। निम्नलिखित कारणों के मद्देनजर प्राधिकारी का यह अभिमत है कि चीन तथा थाईलैंड से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन करना उचित होगा :-

- संबद्ध देशों में से प्रत्येक की पाटन मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है;
- संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है;
- निम्नलिखित कारकों के मद्देनजर संचयी आकलन उचित है :-

(क) शामिल वस्तुएं समान वस्तुएं हैं और उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रही है;

(ख) आयातित उत्पादों की बिक्री वितरण के तुलनीय चैनलों और ग्राहकों के तुलनीय वर्गों के माध्यम से हो रही है;

- (ग) बाजार में दोनों देशों के उत्पाद घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं;
 (घ) दोनों देशों से आयात बढ़ते जा रहे हैं ।

मांग का आकलन

59. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने देश में उत्पाद की मांग तथा खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयातों के योग के रूप में परिभाषित किया है । इस प्रकार आकलित मांग का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

स्रोत	2001-02	2002-03	2003-04	संख्या	
				जांच अवधि वास्तविक	जांच अवधि वार्षिकीकृत
आयात					
आयात (संबद्ध देश)	3,589	16,755	77,538	216,851	173,481
आयात (अन्य देश)	8	14,378	8,697	12,570	10,056
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	4,582,954	5,757,989	6,250,818	7,903,699	6,322,959
अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्रियां	1,916,719	1,671,535	1,991,419	2,651,725	2,121,380
कुल मांग	6,503,270	7,460,657	8,328,472	10,784,845	8,627,876
प्रवृत्ति	100.00	114.72	128.07	132.67	132.67

प्राधिकारी का अभिमत है कि उत्पाद की मांग सकारात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है ।

60. नियम 11(2) तथा उसमें उल्लिखित अनुबंध के अनुसरण में क्षति निर्धारण में निम्नलिखित दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी: (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामकारी प्रभाव ।

पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या आयातों में, निरपेक्ष रूप में अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष उल्लेखनीय वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है । अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का कारण कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक मंदी लाना था अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना था, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ जाती ।

आयात की मात्रा तथा बाजार हिस्सा

61. संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा और भारत में बाजार में बिक्री के संबंध में इसके हिस्से का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
आयात						

संबद्ध देशों से	संख्या	3,589	16,755	77,538	216,851	173,481
अन्य देशों से		8	14,378	8,697	12,570	10,056
कुल आयात	संख्या	3,597	31,133	86,235	229,421	183,537
कुल आयातों में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा	%	99.78	53.82	89.91	94.52	94.52
घरेलू बाजार में कुल मांग	संख्या	6,503,270	7,460,657	8,328,472	10,784,845	8,627,876
आयातों में हिस्सा						
• संबद्ध देश	%	99.78	53.82	89.91	94.52	94.52
• अन्य देश	%	0.22	46.18	10.09	5.48	5.48
मांग में बाजार हिस्सा						
• घरेलू उद्योग	%	70.47	77.18	75.05	73.29	73.29
• अन्य भारतीय उद्योग	%	29.47	22.40	23.91	24.59	24.59
• भारतीय उद्योग का योग	%	99.94	99.58	98.96	97.87	97.87
• संबद्ध देशों से आयात	%	0.06	0.22	0.93	2.01	2.01
• अन्य देशों	%	0.00	0.19	0.10	0.12	0.12
कुल	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00

प्राधिकारी नोट करते हैं कि

- (क) क्षति अवधि में संबद्ध देशों से आयातों में निरपेक्ष रूप में वृद्धि हुई है।
 (ख) भारत में आयातों के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।
 (ग) भारत में कुल मांग के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।

प्राधिकारी का अभिमत है कि क्षति अवधि के दौरान आयातों में अत्यधिक वृद्धि देखी गई है। निर्यातों की निरपेक्ष मात्रा में वृद्धि की परिणति पाटित आयातों के बाजार हिस्सों में वृद्धि तथा क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट में हुई है।

प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि पाटित आयातों का मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

आयातों का कीमत प्रभाव

62. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की गणना करें व शुल्कों को छोड़कर बिक्री कीमत के आधार पर की गई है। आयातों के पहुँच मूल्य के निर्धारण में भारत औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार किया गया है, जिसमें 1% पहुँच प्रभार और लागू आधारभूत सीमाशुल्क शामिल हैं। विभिन्न कीमतों की प्रवृत्ति नीचे तालिका में दर्शाई गई है :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जॉय अवधि
सीआईएफ निर्यात कीमत	रु./सेट	2,414	1,758	1,720	1,990
आयातों की पहुँच कीमत संबद्ध देश	रु./सेट	3,145	2,291	2,067	2,366
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./सेट	****	****	****	****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100.00	101.23	104.79	111.10

कीमत कटौती संबद्ध देश	रु./सेट	****	****	****	****
कीमत कटौती	रेंज %				55 से 60
क्षति रहित कीमत	रु./सेट				****
कम कीमत पर बिक्री	रु./सेट				****
कम कीमत पर बिक्री	रेंज %				60 से 65

नोट किया जाता है कि

(क) संबद्ध देशों से सीआईएफ निर्यात कीमत में आधार वर्ष अर्थात् 2001-2002 की तुलना में गिरावट देखी गई है। पिछले दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान यद्यपि इसमें वृद्धि हुई, तथापि ये 2001-2002 के स्तर से नीचे रहीं। नोट किया जाता है कि पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कीमतों में वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा इसी अवधि में कीमतों में बढ़ोतरी के अनुरूप हो, और यह निविष्टियों की लागत में वृद्धि दर्शाती है। इसके अलावा क्षति की समस्त अवधि में आयात कीमतों बहुत ही कम रहीं।

(ख) संबद्ध देशों से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों तथा क्षति रहित कीमतों से काफी कम थी, जिसकी परिणति कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री में हुई।

(ग) पिछले दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान यद्यपि कीमत में वृद्धि हुई, जो आंशिक रूप से निविष्टि कीमतों में वृद्धि का द्योतक है। कीमत कटौती उल्लेखनीय रूप में

प्राधिकारी का अभिमत है कि आयातों में वृद्धि के कारण कीमत में वृद्धि पर रोक लग गई है जो आयातों के अभाव में अवश्य होती है।

उपर्युक्त पर विचार करते हुए प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदण्ड

63. आवेदकों ने दावा किया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पादों का पाटन वर्ष 2003-04 और जांच अवधि के दौरान अत्यधिक था और आधार वर्ष अर्थात् 2001-02 तथा जांच अवधि से संबंधित विभिन्न मानदण्डों की तुलना करना न तो उचित होगा और न ही इससे घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव प्रदर्शित होगा। आटोमोबाइल उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि एवं इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग पर सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए आवेदकों ने दावा किया कि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन से संबंधित कतिपय मानदण्डों में उक्त अवधि में सुधार देखा गया है। यह उल्लेख किया गया है कि आटोमोबाइल की एक यूनिट द्वारा उत्पादन में वृद्धि से संबद्ध वस्तुओं की 7 से 23 यूनिटों के बीच बिक्री बढ़ जाती है। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी बताया गया कि इस उत्पाद की मांग में आए उल्लेखनीय उछाल और प्रथम दो वर्षों में आयातों का स्तर कम करने के मद्देनजर घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की वर्ष दर वर्ष आधार पर जांच करना जरूरी होगा।

64. प्राधिकारी द्वारा सभी हितबद्ध पक्षों के तर्कों की जांच की गई। बिक्री, लाभ उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश से आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक तथा सम्भावित गिरावट, घरेलू

उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की सीमा, नकद प्रवाह, माल-सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक तथा सम्भावित नकारात्मक प्रभाव के रूप में स्थिति का आकलन करने के उद्देश्य से सभी संगत आर्थिक कारकों का मूल्यांकन निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग

65. इन वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग के वास्तविक उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग निम्नांकित तालिका में यथा प्रदर्शित थे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन हेतु क्षमता का उपयोग अन्य प्रकार के टायरों के उत्पादन में भी हो सकता है। अतः केवल विचाराधीन उत्पाद पर विचार करके क्षमता एवं क्षमता उपयोग का निर्धारण करना उचित नहीं है। प्राधिकारी ने क्षमता एवं क्षमता उपयोग का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-11 के उपबंधों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विभिन्न प्रकार के टायरों पर जिनके लिए क्षमता का एक-दूसरे के लिए प्रयोग किया जा सकता है, विचार करते हुए किया है।

प्रवृत्ति इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिकीकृत
संयंत्र की क्षमता (सं.)	12554305	13133648	14078159	16802293
सूचीबद्ध	100	104.61	112.14	135.80
गैर-संबद्ध वस्तु समेत सभी प्रकार के टायरों का उत्पादन (सं.)	9239853	11871471	13431187	15005212
सूचीबद्ध	100	128.48	145.36	162.40
संयंत्र का उपयोग %	78.60	90.39	95.40	89.30
सूचीबद्ध	100.00	115.00	121.38	113.62
संबद्ध वस्तु का उत्पादन (सं.)	6242468	7218501	7987559	8171154
सूचीबद्ध	100	115.64	127.96	130.90
बिक्रिया (सं०)	5065878	5757989	6272224	6447173
सूचीबद्ध	100	113.66	123.81	127.27
वस्तु सूचियाँ	213309	203028	318699	343584
सूचीबद्ध	100	95.18	149.41	161.07

प्राधिकारी नोट करते हैं कि;

(क) सम्पूर्ण अवधि के दौरान संयंत्र क्षमता, सभी वस्तुओं के, उत्पादन, संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन, घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री एवं संयंत्र उपयोगिता में क्रमशः 39.82%, 53.11%, 49.04%, 37.97% और 9.51% की वृद्धि प्रदर्शित हुई।

(ख) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई। तथापि, क्षमता उपयोग में वृद्धि होने के पश्चात गिरावट आई है।

(ग) यद्यपि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जाँच अवधि में हुए उत्पादन और बिक्री में वृद्धि प्रदर्शित हुई है तथापि भण्डार सूची में वृद्धि और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने जाँच अवधि में बाजार हिस्सा गंवाया है।

(घ) अन्य प्रकार के टायरों के उत्पादन में वृद्धि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि से अधिक है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग ने गैर संबद्ध वस्तुओं के लिए क्षमताओं का अधिक उपयोग किया है।

लाभ और निवेश पर आय

66. पिछले वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग का लाभ और निवेश पर आय निम्नानुसार रही है :-

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संयंत्र क्षमता (संख्या)	13,713,639	15,255,648	16,988,208	23,967,866	19,174,293
सूचीबद्ध	100.00	111.24	123.88	139.82	139.82
सभी प्रकार के टायरों का उत्पादन (संख्या)	10,710,055	13,405,333	14,867,149	20,497,771	16,398,217
सूचीबद्ध	100.00	125.17	138.81	153.11	153.11
संयंत्र उपयोग (%)	78.10	87.87	87.51	85.52	85.52
सूचीबद्ध	100.00	112.51	112.06	109.51	109.51
संबद्ध वस्तु का उत्पादन (संख्या)	5,462,164	7,196,124	7,968,892	10,176,092	8,140,874
सूचीबद्ध	100.00	131.74	145.89	149.04	149.04
घरेलू बिक्री (संख्या)	4,582,954	5,757,989	6,250,818	7,903,699	6,322,959
सूचीबद्ध	100.00	125.64	136.39	137.97	137.97
वस्तु सूची	213,310	203,029	318,700	343,584	343,584
सूचीबद्ध	100.00	95.18	149.41	161.07	161.07

यह देखा गया है कि :-

(क) जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन लागत में वृद्धि हुई थी। यद्यपि वर्ष 2002-2003 में घरेलू उद्योग कन्वर्शन तथा स्थायी लागतें कम करके अपनी कीमतें बढ़ाने में सफल रहा था। तथापि उसके पश्चात घरेलू उद्योग के समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी जहां लागत वृद्धि, कीमत वृद्धि से अधिक हो गई थी।

(ख) यद्यपि वर्ष 2001-2002 और वर्ष 2002-2003 के बीच घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार आया था तथापि, बाद में उसमें गिरावट प्रदर्शित हुई थी। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की प्रति इकाई लाभप्रदता, बिक्री मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद वर्ष 2002-2003 के स्तर से काफी कम रही थी।

(ग) आधार वर्ष और 2002-2003 की तुलना में जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी से आय में गिरावट आई। इस प्रकार उत्पादन तथा बिक्री की मात्रा में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की आय में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई।

(घ) घरेलू उद्योग कनवर्शन तथा टायरों की प्रति यूनिट स्थायी लागत में कमी के माध्यम से अपना लाभ बढ़ाने में सफल रहा है। यह नोट किया गया कि क्षति की समस्त अवधि के दौरान बिक्री कीमतों में वृद्धि निविष्टियों की लागत में वृद्धि से कम थी। यह भी नोट किया गया कि यदि घरेलू उद्योग कनवर्शन तथा टायरों की प्रति यूनिट स्थायी लागत में कम करने में सफल नहीं रहता, तो यह जांच अवधि में वित्तीय घाटे की स्थिति में आ जाता।

(ङ) अपने प्रकटीकरण विवरण में घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि प्राधिकारी ने यह तथ्य प्रकट नहीं किया है कि घरेलू उद्योग के योगदान मार्जिन में लगातार गिरावट आई है। प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना की जांच की गई और यह नोट किया गया कि यद्यपि कीमतों और विभिन्न निविष्टियों की कीमतों में वृद्धि के कारण कच्चे माल की लागत में बढ़ोतरी हुई, तथापि घरेलू उद्योग उत्पादन की प्रति यूनिट उत्पादन की कनवर्शन लागत को कम रखने में सफल रहा है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है। यह नोट किया गया है कि योगदान मार्जिन (बिक्री कीमत तथा कच्चे माल की लागत के अन्तर) में उल्लेखनीय गिरावट आई है।

घरेलू उद्योग	एकक	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
बिक्री कीमत	रु०/सेट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	तालिका	100	101	105	111
कच्ची सामग्री	रु०/सेट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	तालिका	100	106	118	129
उपयोगिता	रु०/सेट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	तालिका	100	109	112	110
अंशदान	रु०/सेट	****	****	****	****
प्रवृत्ति	तालिका	100	93	85	84
वृद्धि	इंडेक्स				
आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि	रु०/सेट		-152	-312	-322

क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के योगदान में निरंतर गिरावट रही है। प्रतिसेट योगदान में यह गिरावट आधार वर्ष की तुलना में **** रहा है। उपरोक्त साक्ष्य से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के लाभ में आधार वर्ष की तुलना में मामूली सुधार हुआ है जिसका मुख्य कारण यह रहा है कि घरेलू उद्योग की अपेक्षाएँ अधिक बिक्री मात्रा और उसकी सामग्र्य की सजह से कनवर्शन को सीमित रखा और टायरों की लागत निर्धारित रही।

भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से में परिवर्तन

67. भारतीय उद्योग और आयातों के बाजार हिस्से नीचे तालिका में दिए गए हैं:

	एकक	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
घरेलू उद्योग	%	70.47	77.18	75.05	73.29
अन्य भारतीय उद्योग	%	29.47	22.40	23.91	24.59
भारतीय उत्पादक	%	99.94	99.58	98.96	97.87
संबद्ध देश	%	0.06	0.22	0.93	2.01
अन्य देश	%	0.00	0.19	0.10	0.12
कुल	%	100.00	100.00	100.00	100.00

उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि:

(क) मामूली सुधार के बाद घरेलू उद्योग के हिस्से में जांच की शेष अवधि के दौरान सतत गिरावट आई। घरेलू उद्योग और भारतीय उद्योग दोनों के हिस्से में गिरावट आई थी।

(ख) पारित आयातों का बाजार हिस्सा जो वर्ष 2001-02 की अवधि के दौरान 0.06% पर नगण्य था, वह जांच अवधि के दौरान 2.03% के उल्लेखनीय स्तर पर पहुँच गया था।

(ग) पारित आयातों के हिस्से में वृद्धि और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के नुक्सान के बीच सहसम्बन्ध है।

रोजगार

68. घरेलू उद्योग की रोजगार स्थिति का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है:

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	15,521	17,839	18,232	18,274	18,274
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100	115	117	118	118

यह देखा गया है कि:

(क) घरेलू उद्योग के कामगारों की संख्या में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

(ख) कामगारों की संख्या में वृद्धि का कारण क्षमता और उत्पादन में वृद्धि होना है।

मजदूरी

69. वेतन और उत्पादन लागत पर उसका प्रभाव नीचे तालिका में दिया गया है। यद्यपि प्रति इकाई उत्पादन के वेतन भुगतान में कमी आई है, लाभ में गिरावट आई है। इसके अलावा, प्रति कामगारों के वेतन भुगतान में 2003-04 तक वृद्धि के बाद गिरावट आई है।

	एकक	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
वेतन	लाख रू०	8,915.88	12,946.30	14,125.69	17,097.31	13,677.85
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100	145	158	153	153
प्रति इकाई उत्पादन के वेतन	रू०/सेट					
		170	187	184	177	177
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100	110	109	104	104

यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान वेतन में वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त से यह स्पष्टतः प्रदर्शित होता है कि लागत में वृद्धि और लाभ में गिरावट से फलकित, घरेलू उद्योग सभी वृद्धियों को नियंत्रित करने के लिए प्रयास कर रहा है। जहाँ प्रति कर्मचारी को देय वेतन में वृद्धि होना चाहिए, इसमें जांच अवधि में गिरावट आई है।

उत्पादकता

70. अवधियों के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता, नीचे तालिका में दी गई है।

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	15,521	17,839	18,232	18,274	18,274
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100	115	117	118	118
उत्पादन	संख्या	5,462,164	7,196,124	7,968,892	10,176,092	8,140,874
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100.00	131.74	145.89	149.04	149.04
प्रति कर्मचारी उत्पादन	संख्या	352	403	437	445	445
सूचीबद्ध	सूचीबद्ध	100	115	124	127	127

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित होता है। तथापि, उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग के लाभों में सुधार के पश्चात् गिरावट प्रदर्शित हुई है।

71. घरेलू कीमत पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले कारक

संबद्ध देशों से आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही है। आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। इस संबंध में स्थिति नीचे तालिका में दी गई है।

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कीमत कटीती					
• चीन					
• थाईलैंड		35 से	50 से	55 से	55 से
संबद्ध देश	रैंज %	45	60	65	65

72. प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत की तुलना, आयातों की पहुँच कीमत के साथ करके कम कीमत पर बिक्री की सीमा का निर्धारण किया है। यह तुलना निम्नानुसार है:-

जांच अवधि के दौरान रेंज	
चीन	55 से 65%
थाईलैंड	55 से 65%
संबद्ध देश	55 से 65%

यह नोट किया गया है कि:

(क) चीन और थाईलैंड से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अत्यधिक कम है जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटीती हो रही है।

(ख) चीन और थाईलैंड से आयातों की पहुँच कीमतें घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हो रही है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग इनपुट कीमत में वृद्धि की तुलना में अपनी कीमत बढ़ाने में समर्थ नहीं हुआ है, जो कि नीचे तालिका से देखा जा सकता है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
कच्ची सामग्री लागत	****	****	****	****
इंडेक्स	100	106	118	129
बिक्री कीमत	****	****	****	****
इंडेक्स	100	101	105	111
आधार वॉ की तुलना में वृद्धि				
➤ कच्ची सामग्री लागत		192	559	890
➤ बिक्री कीमत		64	279	594

ऑकड़े रु./सेट में हैं

कच्ची सामग्री के लागत में वृद्धि के कारण की और जांच की गई। इस उद्देश्य से, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के क्षति अवधि की तुलना में इनपुट कीमत को एक माना तथा जांच अवधि के लिए उपयोग के घटक पर विचार करते हुए, उत्पादन लागत की तुलना में इनपुट कीमत में वृद्धि पर प्रभाव का निर्धारण किया। परिणाम नीचे प्रदर्शित होती है:-

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि कच्ची सामग्री के लागत में वृद्धि पूरी तरह इनपुट लागत में वृद्धि के कारण हुई थी।

नियम 18 के उप नियम (2) में उल्लिखितानुसार, कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, नियमावली में यह प्रावधान है कि प्राधिकारी यह विचार करेगा कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमत ह्रास को काफी करना था अथवा कीमत वृद्धि को रोकना था जो कि अन्यथा काफी बढ़ जाता। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामलों में आयात कीमत में वृद्धि जो इनपुट कीमत में वृद्धि के कारण बढ़ना चाहिए को रोक रहा है।

भण्डार सूची

73. घरेलू उद्योग की तैयार वस्तुओं की भण्डार सूची से निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है।

	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
भण्डार सूची (सं०)	213,309	203,028	318,699	343,584
सूचीबद्ध	100	95	149	161

यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की भण्डार सूची में अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। भण्डार सूची में यह वृद्धि क्षमता उपयोग में गिरावट के बावजूद हुई है। यह भी देखा गया है कि आयातों में वृद्धि के साथ भण्डार सूची में वृद्धि 2003-04 से शुरू हुआ। यह देखा गया है कि वास्तव में भण्डार सूची में वृद्धि आयातों में वृद्धि से कम है। जहाँ क्षति अवधि की तुलना में भण्डार सूची में 130275 की वृद्धि हुई, उसी अवधि में आयात में वृद्धि 169892 हुई। दूसरे शब्दों में, आयात न होने की स्थिति में घरेलू उद्योग भण्डार सूची को कम कर लेने में समर्थ हो गया होता। यह भी नोट करना चाहिए कि उत्पादन की काफी मात्रा डीलरों के माध्यम से बेची जाती है। इसलिए, उत्पादन आदेश के विपरित नहीं हो सकता है। उत्पादन का काफी भाग प्रत्याशित बिक्रियों के प्रतिकूल है।

निवेश जुटाने की क्षमता

74. घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि यदि पाटन लगातार जारी रहा तो, पूंजी एकत्र करने में कठिनाई आएगी, जो विशेष रूप से उस स्थिति में काफी महत्वपूर्ण होता है जहाँ घरेलू उद्योग के संघटक महत्वपूर्ण निवेश करने की योजना बना रहे हैं।

नकद प्रवाह

75. घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह और नकद लाभ स्थिति में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई थी:

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
नकद लाभ	लाख रु०	*****	*****	*****	*****	*****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100.0 0	164.29	131.12	135.38	135.38
नकद लाभ प्रति इकाई बिक्री पर	रु०/से ट	*****	*****	*****	*****	*****
सूचीबद्ध	प्रवृत्ति	100.0 0	130.76	96.14	98.13	98.13

प्रति इकाई बिक्री नकद लाभों में वर्ष 2002-03 तक वृद्धि हुई और उसके बाद उसमें गिरावट आई जो वर्ष 2001-02 के दौरान प्राप्त किए गए स्तर से भी कम थी। परिणामस्वरूप वर्ष 2002-03 में कुल नकद लाभ में वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई।

वृद्धि

76. विभिन्न मापदंडों के आधार पर वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग की वृद्धि का विश्लेषण किया गया था और निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ पायी गई:

	इकाई	2002-03	2003-04	जांच अवधि वार्षिक
	%	25.64	8.56	1.15
उत्पादन में वृद्धि	%	31.74	10.74	2.16
क्षमता उपयोग में वृद्धि	%	9.77	(0.36)	(4.08)
बिक्री कीमत में वृद्धि	%	1.19	3.92	5.52
उत्पादन लागत में वृद्धि	%	(0.47)	6.12	5.40
उत्पादन में वृद्धि	%	31.74	10.74	2.16
लाभ में वृद्धि (पीबीटी)	%	40.88	(33.43)	8.90
नकद लाभ में वृद्धि	%	64.29	(20.19)	3.25
लगायी गई पूंजी पर आय में वृद्धि	%	(0.23)	(4.68)	0.83

यद्यपि, उत्पादन और बिक्री मात्रा जैसे मात्रा संबंधी मानदण्डों से सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है, यह पाया गया है कि वृद्धि दर में गिरावट आ रही है।

घरेलू उद्योग क क्षति के विरोध में तर्क

77. प्रयोक्ताओं चीन के निर्यातकों और आयातकों को उत्तर देने वाली एसोसिएशनों द्वारा निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, जिसमें यह कहा गया है कि घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई है।

(क) यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की वास्तविक क्षति नहीं हुई है। घरेलू उद्योग ने लगभग सभी मानदण्डों में सुधार प्रदर्शित किया है। वर्षों के दौरान संबद्ध देश से आयात अत्यन्त मामूली रहे हैं। घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है क्योंकि उनका उत्पादन, क्षमता उपयोग, निवेश पर आय, बिक्री कीमत, बाजार हिस्से, रोजगार, वेतन और लाभ में वृद्धि हुई है।

(ख) याचिकाकर्ता ने जानबूझकर 15 महीने की जांच अवधि ठहराई है जिसमें दो व्यस्त काल शामिल हैं। यह निवेदन स्वयं घरेलू उद्योग में किया गया था कि फरवरी और जून माह के बीच की अवधि में उत्पाद की अधिकतम खपत होती है। इन अवधियों के दौरान की स्थितियों की जांच में शामिल किया गया है और पूर्णतः गलत अनुमानों के निर्धारण हेतु उन्हें वार्षिकीकृत किया गया है।

(ग) ओईएम खण्ड और आफ्टर मार्केट के लिए उत्पादों का विभेदीकरण किया जाना आवश्यक है क्योंकि ओईएम खण्ड के उत्पाद, आफ्टर मार्केट के उत्पादों से पूर्णतया अलग हैं।

(घ) गुणवत्ता के संदर्भ में संबद्ध देशों से आयातित टायर की तुलना घरेलू उत्पादों से नहीं की जा सकती है क्योंकि आयातित उत्पाद खराब गुणवत्ता वाले होते हैं और किसी भी तरह से घरेलू उत्पाद से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं। अतः संबद्ध देशों से आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हो, के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। विचाराधीन उत्पाद बाजार में विभिन्न भारों और मॉडलों में उपलब्ध है। घरेलू उद्योग में उसी आकार के कीमत 32-50 प्रतिशत तक का महत्वपूर्ण अंतर है। चूँकि आयातित टायर खराब श्रेणी का है, अतः उसकी तुलना अच्छी ग्रेड वाली टायर से करने में तुलना भ्रामक होगी।

(ङ) घरेलू उत्पादकों के बीच किसी प्रकार की कड़ी प्रतिस्पर्धा नहीं है।

(च) अन्य देशों में आमूल परिवर्तन से बायर टायरों के घरेलू उत्पादकों को अच्छे निर्यात अवसर प्राप्त हुए हैं। टायर उद्योग के उत्पादन में वृद्धि बस और ट्रक खण्ड के अनुरूप नहीं हो पायी है। टायर निर्यात की वृद्धि दर वर्ष 2004-05 में स्थिर बनी रही और उसमें वृद्धि हो रही है। निर्यातों में वृद्धि के कारण घरेलू ओईएम और रिप्लेसमेंट बाजारों के लिए टायरों की उपलब्धता में कमी आ रही है।

(छ) टायर विनिर्माताओं ने पिछले दो वर्षों के दौरान टाटा मोटर्स के साथ पांच कीमत वृद्धियों का सहारा लिया है। समयानुवर्ती कीमत निर्धारण को बड़ी वृद्धि का कारण माना जा सकता है। इसके अलावा, मै० टाटा मोटर्स को घरेलू उद्योग की ओर से होने वाली आपूर्ति अनियमित रही है। यद्यपि, घरेलू उद्योग ने अत्यधिक कीमत कटौती का दावा किया है, फिर भी इससे घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत प्रभावित नहीं हुई है। कीमत कटौती के बावजूद, घरेलू उद्योग अपनी कीमत बढ़ाने में सफल रहा है।

(ज) ट्रक टायर की कीमत का देश में वस्तुओं के संचलन पर प्रभाव पड़ता है। चूँकि ट्रक परिवहन एक प्रमुख परिवहन प्रणाली है इसलिए यह आवश्यक है कि वस्तुओं की कीमत को उचित रखने के लिए उसे सस्ता रखा जाए। डीजल के पश्चात्, टायर की लागत, वाइकों के लिए सबसे अधिक लागत वाला संघटक है।

(झ) याचिकाकर्ता ने किसी सोच विचार के बिना सभी सूचनाओं की गोपनीयता का दावा किया है। याचिकाकर्ता ने लागत संबंध सूचना का सूचीबद्ध रूपान्तर उपलब्ध नहीं कराया है। याचिकाकर्ता ने खरीद नीति, बिक्री नीति, भण्डार लेखों, गुणवत्ता नियंत्रण और जांच जैसे कुछेक महत्वपूर्ण प्रश्नों को अपनी याचिका में अनदेखा कर दिया है।

() भारतीय उत्पादकों को हुई किसी प्रकार की वास्तविक क्षति विदित नहीं है।

(ट) भारत के लिए कोई विभेदकारी कीमत नहीं है क्योंकि विदेशी निर्यातक उसकी कीमत पर अन्य तीसरे देशों को निर्यात कर रहे हैं।

(ठ) अपोलो के खण्ड संबंधी परिणाम तथा प्रपत्र IV-क में स्पष्ट विरोधाभास है। अपोलो की वर्ष 2004-05 से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट में इस उत्पाद की मांग में गिरावट आने का उल्लेख है जबकि प्रपत्र मांग में वृद्धि दर्शाता है।

(ड) अपोलो के लिए किसी प्रकार का कीमत ह्रास नहीं हुआ है। घरेलू उद्योग ने लागत वृद्धि का बोझ ग्राहकों पर डाल दिया है।

(ढ) घरेलू उद्योग ने उन कंपनियों जिन्होंने जांच के बाद अपने आँकड़े उपलब्ध करा दिए हैं, के संबंधों में उनकी क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध नहीं कराई है।

(ण) निदेशक रिपोर्ट को तथा जांच के उद्देश्य के लिए कंपनी के प्रचालन के संबंध में सामग्री रिकार्ड को प्राधिकारी के सामने अधिमान्य साक्ष्य के रूप में माना जा रहा है। प्राधिकारी के अंतिम निष्कर्ष, रिकार्ड सामग्री (वार्षिक रिपोर्ट) के सारांश पर विचार किया अथवा चयनात्मक विचार किये बिना, को माननीय सेसटर ने अपने निर्णय में गलत मान लिया गया है। आंध्रा पेट्रो केमिकल्स लि० वनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2006 (201) ई.एल.टी. 481 (ड्राइ.डीईएल)/वार्षिक रिपोर्ट के निष्कर्ष के महत्वपूर्ण तथ्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता है तथा ऐसे तथ्यों के प्रभाव को प्राधिकारी द्वारा अपनी जाँच परिणाम में सम्मिलित करना अनिवार्य है। अपोलो ड्रायस ने अपने संबंधित वार्षिक रिपोर्ट में खंड (ट्रक/बस टायर) में उत्कृष्ट परिणाम प्रदर्शित किया है।

(त) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति सहित कोई क्षति नहीं हुई है तथा पाटनरोधी शुल्क लगाने की कोई आवश्यकता यनहीं है तथा वर्तमान जांच को तत्काल प्रभाव से समाप्त कर देना चाहिए ।

(थ) प्राधिकारी को क्षति रहित कीमत की गणना करने के लिए सभी उद्योगों के आँकड़ों को लेना चाहिए ।

(द) यह स्वीकार किया गया है कि ओईएम की बिक्री के कारण घरेलू उद्योग को हुई राजस्व को घाटे की क्षतिपूर्ति केवल रिप्लेसमेंट मार्केट से हुआ है । उनके द्वारा ओईएम से कम प्राप्ति को निवेश अथवा विज्ञापन लागत समझा जाता है इसलिए उनकी स्वयं के स्वलकारोक्त से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग के समग्र निम्न लाभ का मुख्य कारण यह है कि ओईएम से भारित कीमत रिप्लेसमेंट बाजार बिक्री से भारित कीमत से कम है । दूसरी ओर, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि ओईएम तथा रिप्लेसमेंट बाजार को खण्डित किये जाने की आवश्यकता नहीं है और इस संबंध में डब्ल्यूटीओ के पैनल रिपोर्ट का उद्धरण दिया है । घरेलू उद्योग ने यह भी बताया है कि रिप्लेसमेंट बाजार और ओईएम के लिए लेखा रिकार्ड/ कीमत रिकार्ड अलग-अलग नहीं रखे जाते हैं और इसलिए घरेलू उद्योग ने बताया है कि वे ओईएम और रिप्लेसमेंट बाजार के संबंध में उत्पादन लागत, बिक्री कीमत और लाभ/ हानि का अलग-अलग सूचना तैयार करने की स्थिति में नहीं है ।

(घ) आयात घरेलू उद्योग के संबद्ध उत्पादों के कुल उत्पादन का केवल 2% और भारतीय उत्पादकों के उत्पादन का केवल 1% है । आयात की इतनी कम मात्रा घरेलू उद्योग को, उस स्थिति में जबकि घरेलू और आयातित टायरों का ग्राहक आधार भिन्न है, वास्तविक क्षति नहीं पहुँचा सकता है ।

(न) घरेलू उद्योग का बिक्री कीमत निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत के समतुल्य है । यदि घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत को प्राप्त करने में समर्थ है तो यह कैसे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान कथित पाटित आयातों से क्षति हुआ है ।

(प) संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के आचरण में कोई सह संबंध नहीं है । इसलिए, यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर रहा है । दोनों कीमतें अलग-अलग आचरण कर रही हैं ।

(फ) घरेलू उद्योग ने उनके द्वारा उत्पादित सभी प्रकार के टायरों के उत्पादन के संबंध में गलत उत्पादन आँकड़ा उपलब्ध कराया है । वास्तव में, जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है ।

(ब) जांच अवधि के पश्चात् की अवधि में घरेलू उद्योग सहित भारतीय उत्पादकों की उत्कृष्ट वृद्धि उनके द्वारा कीमत में वृद्धि किये बिना संभव नहीं होता और उससे यह स्पष्टता स्थापित

होती है कि आयातों की घरेलू कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। दोनों स्वतंत्र रूप से बढ़ रहे हैं। इसके अतिरिक्त, वित्तीय वर्ष (2005-06) जांच अवधि के भाग की प्रथम तिमाही की शुरुआत से काफी परिवर्तन हुआ है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

78. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत इन निवेदनों की जांच की है और यह नोट किया है कि:-

(क) जांच से पूर्व सत्यता और औचित्य हेतु याचिका की जांच की गई थी। यह निर्धारित हो जाने के पश्चात् ही घरेलू उद्योग को प्रथम दृष्टया क्षति पहुँची है, की जांच की शुरुआत की गई थी।

(ख) यह सत्य है कि आयात मुख्य रूप से बाजार पश्चात् घटक में हो रहे हैं। तथापि, इससे क्षति विश्लेषण विकृष्ट नहीं हुआ है। इसके विपरीत, यदि बाजार पश्चात् की घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा को लिया जाएगा तो वह मात्रा में घरेलू उद्योग को अधिक मात्रा में हुई क्षति को दर्शाएगी। प्राधिकारी ने ओईएम तथा रिप्लेसमेंट बाजार में भारीत औसत बिक्री कीमत पर विचार करते हुए कीमत कटौती का निर्धारण किया। यदि कीमत कटौती का निर्धारण सिर्फ रिप्लेसमेंट बाजार पर विचार करते हुए किया जाता तो, कीमत कटौती की मात्रा बढ़ सकती थी।

(ग) यह स्थापित नहीं किया गया है कि आयातित उत्पाद और घरेलू उत्पाद की गुणवत्ताएँ इतनी भिन्न हैं कि घरेलू उत्पाद आयातित उत्पाद के समान वस्तु नहीं हैं। साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि यद्यपि रिप्लेसमेंट बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है तथापि आयात में वृद्धि हुई है। प्रारंभिक जांच के बाद, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह विशेष रूप से जांच की कि क्या प्रतिवादी चीन के निर्यातकों द्वारा बेचे गये टायर की गुणवत्ता निम्न थी। निर्यातक ने संयंत्र रिकार्ड से यह सिद्ध नहीं कर सका कि उत्पाद की गुणवत्ता निम्न थी। इस पर पहले ही कही और विचार कर लिया गया है।

(घ) विचार की गई जांच अवधि की जांच की तारीख के नजदीक रखने के लिए निदेशालय द्वारा अपनायी गयी प्रणाली कानूनी प्रावधानों के संगत नहीं है। किसी भी मामलों में दो सर्वोत्तम मौसमों को शामिल करने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की सीमा प्रदर्शित हुई है।

(ङ) उत्पाद में या ओईएम घटक तथा बाजार पश्चात् घटक के लिए फैक्टरी उत्पादन लागत में कोई अंतर नहीं है क्योंकि ओईएम और रिप्लेसमेंट बाजार के लिए उत्पाद अलग-अलग नहीं हैं तथा वे समान उत्पादन रेखा में उत्पादित किये जाते हैं।

(च) यह नोट किया जाता है कि भारतीय उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की उपस्थिति का अर्थ पाटित आयातों से कोई क्षति न होना नहीं है। यह पाया गया है कि आंतरिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद घरेलू उद्योग वर्ष 2001-2002 और 2002-2003 के बीच सुधान लाने में सफल रहा था। वर्ष 2003-2004 जब बाजार में आयात होना शुरू हो गया, तब से स्थिति खराब

होनी शुरू हो गई । जाँच अवधि में जब पाटित आयातों में वृद्धि हुई, तब प्रचालानात्मक लाभप्रदता में और गिरावट आई ।

(छ) यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि प्रदर्शित हुई है । तथापि, यह देखते हुए कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई थी, किसी साक्ष्य की अनुपस्थिति में यह स्थापित नहीं किया जा सकता है कि मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपना उत्पादन बढ़ाने में समर्थ नहीं था - (वस्तुतः यह पाया गया है कि आयात प्रमुख रूप से बाजार पश्चात में होते हैं और समग्र ओईएम मांग की पूर्ति भारतीय उत्पादकों द्वारा की जाती है) या बाजार में उत्पाद की उपलब्धता में कमी आई थी । घरेलू उद्योग की माल सूची में वस्तुतः वृद्धि हुई है ।

(ज) यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग में जाँच अवधि के दौरान अपनी कीमत में वृद्धि की है । तथापि, यह पाया गया है कि बिक्री कीमत में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है । यह उत्पादन लागत में वृद्धि बिक्री कीमत में वृद्धि में काफी अधिक रहा है । दूसरे शब्दों में, घरेलू उद्योग इनपुट लागत में वृद्धि के साथ अपने कीमत को सामग्री कीमत में वृद्धि के अनुपात में वृद्धि करने में समर्थ नहीं रहा है ।

(झ) अनियमित आपूर्ति संबंध तर्क को साक्ष्य से स्थापित नहीं किया गया है । यह भी पाया गया है कि जाँच अवधि के दौरान भण्डार सूची में वृद्धि हुई है ।

() आवेदक ने गोपनीयता के दावे के लिए स्पष्टीकरण दिया है जिसकी प्राधिकारी द्वारा जाँच की गई थी और यह पाया गया था कि आवेदक ने नियमों के अनुरूप गोपनीयता का दावा किया है ।

(ट) जब कि टायर कंपनियों ने बाजार में वस्तुओं को खरीदा है । यह स्थापित नहीं है कि ये क्रय आयातित वस्तुओं का था । जाँच से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि घरेलू उद्योग का कोई घटक जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात किया है ।

(ठ) घरेलू उद्योग को हुई क्षति ' सम्पूर्ण घरेलू उद्योग को हुई क्षति ' के रूप में देखा जाना जरूरी है न कि अलग-अलग कंपनियों को हुई क्षति के रूप में । सम्पूर्ण घरेलू उद्योग के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों की वजह से क्षति हुई है । जैसा कि नियमावली के तहत प्रावधान है और माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया था, घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को उन अलग-अलग कंपनियों के लिए अलग से नहीं देखा जा सकता है जो घरेलू उद्योग का हिस्सा हों । यह भी नोट किया जाता है कि किसी भी इच्छुक पक्षकार ने यह सिद्ध नहीं किया है कि अपोलो टायर्स को क्षति नहीं हुई है ।

(ड) इस तर्क पर कि प्राधिकारी को भूक्षतिकारी कीमत की गणना के प्रयोजनार्थ सम्पूर्ण उद्योग के आंकड़ों को हिसाब में लेना चाहिए, प्राधिकारी ने ' घरेलू उद्योग ' नामक शीर्षक के तहत इस मामले पर विस्तार से विचार कर लिया है । एमआरएफ लि. और गुडइयर इण्डिया लि. से प्राप्त अपर्याप्त सहयोग के मद्देनजर प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी का प्रयोग किया

है और अक्षतिकारी कीमत की गणना के लिए प्राधिकारी ने अपोलो टायर्स लि., जे. के. इण्डस्ट्रीज लि., बिरला टायर्स तथा सीयट लि. के भारित औसत आंकड़ों का प्रयोग किया है।

ढ. किसी इच्छुक पक्षकार ने इस आशय का कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि आयात ओईएम बाजार में हो रहे हैं जिसका अर्थ यह है कि आयात केवल प्रतिस्थापन बाजार में ही हो रहे हैं, घरेलू उद्योग ने यह बात भी स्वीकार की है कि ओईएम के लिए बिक्री- कीमत प्रतिस्थापन बाजार की तुलना में कम है। किन्तु, प्रतिस्थापन बाजार में बिक्री लागतें अपेक्षतया ऊँची हैं जो प्रतिस्थापन बाजार में अपेक्षतया ऊँची कीमत होने का एक कारण है। किन्तु किसी भी पाटनरोधी जांच में प्राधिकारी से सह अपेक्षा होती है कि वह क्षति संबंधी जांच " विचाराधीन उत्पाद " और " सम्पूर्ण घरेलू उद्योग " के संबंध में करे। तदनुसार, मौजूदा जांच भी संबद्ध उत्पाद और सम्पूर्ण घरेलू उद्योग के संबंध में है न कि घरेलू उद्योग के एक भाग, क्षेत्र अथवा खण्ड के संबंध में किसी भी इच्छुक पक्षकार ने यह भी प्रदर्शित नहीं किया कि आयातित माल का प्रयोग ओईएम क्षेत्र में नहीं किया जा सकता। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने ओईएम तथा प्रतिस्थापन बाजार को अलग- अलग नहीं किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि प्रारंभिक जांच निष्कर्ष में ओईएम तथा प्रतिस्थापन बाजार को आयातों के मात्रा- प्रभाव को दर्शाने के लिए अलग- अलग किया गया था क्योंकि इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया था कि आयात केवल प्रतिस्थापन बाजार में ही हो रहे हैं।

ण. जांच से पता चलता है कि आयातों में समग्र रूप और भारत में उत्पादन/खपत की तुलना में काफी वृद्धि हुई है। इसके अलावा, आयात- वृद्धि की दर भी न केवल क्षति- अवधि बल्कि जांच- अवधि में भी काफी रही है। अतः आयात- मात्रा कम नहीं रही है।

त. प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग की अक्षतिकारी कीमत और निवल बिक्री वसूली कीमत में अन्तर है।

थ. लैण्डेड मूल्य तथा बिक्री कीमत को अलग- अलग देखना उपयुक्त नहीं होगा। आयात- मात्रा, लैण्डेड कीमत, बिक्री- कीमत और उत्पादन- लागत को एक साथ देखा जाता है। जांच से यह विदित हुआ है कि आयातों की लैण्डेड कीमत में वर्ष 2002-03 और 2003-04 में गिरावट आई जिसके फलस्वरूप आयात- मात्रा में वृद्धि हुई। आयातों की लैण्डेड कीमत में गिरावट और आयातों की पहले से ही चल रही कम लैण्डेड कीमत की वजह से घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत में वृद्धि की सीमा तक अपनी कीमतें बढ़ाने से रूकावट आ रही थी और घरेलू उद्योग संबद्ध माल की कम दाम पर बिक्री कर रहा था।

द. प्रारंभिक जांच में गलत उत्पादन तथा क्षमता उपयोग संबंधी आंकड़ों के बारे में प्राधिकारी ने अब घरेलू उद्योग के वार्षिक लेखाओं तथा अन्य साक्ष्यों से प्राप्त सत्यापित आंकड़ों/क्षमता- आंकड़ों का प्रयोग किया है। इस संबंध में प्रारंभिक जांच निष्कर्षों में हुई त्रुटि को अब ठीक कर दिया गया है जिससे पता चलता है कि क्षमता उपयोग में सुधार के बाद गिरावट आयी है।

ध. प्राधिकारी नोट करता है कि जांच अवधि पश्चात हुई गतिविधियां मौजूदा जांच के संगत नहीं हैं। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया कि जांच अवधि पश्चात आयात मात्रा अपेक्षतया काफी अधिक रही है। किन्तु, प्राधिकारी नोट करता है कि जांच अवधि पश्चात के संदर्भ में किसी भी गतिविधि पर विचार हेतु उन विभिन्न मानदण्डों संबंधी पूरी जानकारी अपेक्षित होगी जिससे पूरी जांच की जा सके।

क्षति के संबंध में निष्कर्ष

79. पूर्वोक्त को देखते हुए, यह मान लिया जाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप में और भारत में संबद्ध माल के कुल आयातों तथा मांग के संदर्भ में काफी वृद्धि हुई है। यह बात भी तय की जाती है कि संबद्ध देशों से संबद्ध माल के पाटित आयातों की मात्रा में भी भारत में घरेलू उत्पादन के संदर्भ में वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से हुए आयातों की लैण्डेड कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत तथा अक्षतिकारी कीमत से भी काफी कम रही जिसके फलस्वरूप कीमत कटौती और कम दाम पर बिक्री का होना रहा। संबद्ध देशों से पाटित संबद्ध माल की लैण्डेड कीमतों में घरेलू उद्योग की उत्पादन-लागत में वृद्धि के बावजूद (जांच अवधि को छोड़कर) सतत गिरावट रही है और इससे कीमत दबाव रहा है। इस प्रकार, संबद्ध देशों से संबद्ध माल के पाटित आयातों के कारण मात्रा तथा कीमत दोनों पर काफी प्रभाव रहा है। हालांकि कुल मांग, बिक्रियों तथा उत्पादन में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से जैसे कारकों में कोई गिरावट ता दर्ज नहीं की गई है लेकिन क्षमता उपयोग सुधार के बाद गिरावट दर्शायी गई है। संबद्ध देशों से यथा निर्धारित पाटन मार्जिन काफी पाया गया है। इसके अलावा, उत्पादन तथा बिक्रियों में हुई वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की प्रति यूनिट बिक्रियों पर लाभ वर्ष 2002-03 में हुई वृद्धि के बाद जांच अवधि में घट गया। लाभ में आयी इस गिरावट के फलस्वरूप नकद लाभ तथा लगायी गई पूंजी पर आय में गिरावट आ गई। यह निर्णय किया जाता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों की वजह से वास्तविक क्षति हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध तथा अन्य कारकों का विश्लेषण कारणात्मक संबंध नहीं होने के बारे में इच्छुक पक्षकारों के तर्क

80. कारणात्मक संबंध नहीं होने के पक्ष में निम्नलिखित कारक सुझाए गए हैं -

(क) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित टायरों के साथ आयात प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे हैं। संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण न तो घरेलू उद्योग की बिक्रियों और न ही उसके बाजार हिस्से पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसके कारण बिक्री कीमत में कोई गिरावट नहीं आयी है जिसमें इसके विपरीत रुक-रुक कर वृद्धि होती रही है। चीन से आयातित टायरों का प्रयोग ट्रैक्टर-ट्रैलरों के लिए किया जाता है और ये टायर रिट्रेडेड टायरों का स्थानपन्न होते हैं जबकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा खति बेचे जाने वाले टायरों का प्रयोग ओईएम द्वारा और पुराने टायरों के प्रतिस्थापन हेतु किया जाना है।

(ख) इस तथ्य से कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियों और बाजार हिस्से में अपनी कीमतों में कमी किए बिना तथा कीमतों में कटौती किए बिना ही वृद्धि कर सका है, स्पष्ट रूप से विदित है कि घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई तथाकथित क्षति तथा चीन जन. गण. से आयातित टायरों के बीच कोई संबंध नहीं है। यह आगे इस तथ्य से भी पुष्ट होता है कि घरेलू उद्योग न केवल भारतीय बाजार में अपना प्रमुख स्थान कायम रख सका बल्कि संबद्ध माल की कीमत में अन्तर्विराम से वृद्धि बनाए रख सका है।

(ग) पिछले वर्ष की तुलना में संबद्ध माल के बड़े हुए आयात के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि हुई।

(घ) हालांकि आयात- मात्रा में पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई लेकिन उसमें भारत में कुल उत्पादन तथा कुल मांग की तुलना में कमी बनी रही ।

(ड.) घरेलू बाजार की कंपनियों के तुलन- पत्र की स्थिति से पता चलता है कि प्रतिस्पर्धा, कच्चे माल की अनुपलब्धता तथा उसकी कीमत में तीव्र वृद्धि, घरेलू उत्पादकों द्वारा प्राकृतिक रबड़ के निर्यात और घरेलू उद्योग द्वारा आयातित प्रमुख कच्चे माल पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण उन्हें तथाकथित क्षति हुई है । बाजार में अत्यधिक सप्लाई हुई जिससे तथाकथित क्षति हुई हो । पाटन/क्षति तथा कारणात्मक संबंध दिखाई नहीं देते हैं ।

च. भारतीय खरीदार रेडियल टायरों के पक्ष में बदलते रहे हैं क्योंकि ये टायर राजमार्गों तथा एक्सप्रेस मार्गों के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त होते हैं । भारतीय उत्पादकों ने ऐसे बड़े- बड़े अवसर भी अभिज्ञात किए हैं जिन्हें रेडियल टायर भारतीय बाजार में आफर करते हैं और वे रेडियल टायरों के पक्ष में बदल गए हैं और उनकी मांग बढ़ती रही है । भारतीय उत्पादक भी अपना- अपना उत्पादन रेडियल टायरों के पक्ष में बदल रहे हैं और वे रेडियल टायरों के उत्पादन के लिए अपनी- अपनी क्षमताएं बढ़ा रहे हैं । इस प्रकार, झुकावदार टायरों से रेडियल टायरों की ओर तदलाव हो रहा है जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण हो सकता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

81(क). प्राधिकारी नोट करता है कि रबड़ के प्रयुक्त अथवा रिट्रीडेड न्यूमैटिक टायर सीमाशुल्क वर्गीकरण 4012 के तहत आते हैं जबकि रबड़ के नए न्यूमैटिक टायर सीमाशुल्क वर्गीकरण 4011 के तहत आते हैं । इस माल को 4011 के तहत क्लीयरेंस के लिए बताया गया न कि 3012 के तहत । जांच में यह नहीं दर्शाया गया कि आयातित उत्पाद ट्रैक्टर ट्रैलर अनुप्रयोग के लिए अथवा रिट्रीडेड टायरों के स्थानापन्न के रूप में आशयित थे । यह नोट किया जाता है कि आयातित टायर "बसों अथवा लारियों में प्रयुक्त एक किस्म के रबड़ के नए न्यूमैटिक टायरों" के लिए आशयित वर्गीकरण के तहत बताये गए ।

(ख) जैसाकि पहले विश्लेषण किया गया है, यह कहना गलत है कि घरेलू उद्योग अपना बाजार हिस्सा बढ़ाने में समर्थ रहा है । इसके विपरीत, यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है जबकि आयातों के हिस्से में वृद्धि हुई है । जांच से पता चलता है कि इन आयातों की वजह से घरेलू उद्योग की कीमतों में काफी कटौती होती रही जिसके परिणामस्वरूप इसके बाजार हिस्से में गिरावट आई, इसी मालसूची में वृद्धि हुई, आयातों से कीमत वृद्धि में रूकावट आई और लाभ/हानि में गिरावट आई तथा पूंजीनिवेश की आय तथा नकद लाभ में गिरावट आई ।

(ग) कीमतों में वृद्धि का आशय यह नहीं है कि "आयातों के कारण कोई क्षति नहीं हुई ।" इसके विपरीत, नियमावली के तहत प्राधिकारी से यह जांच किए जाने की अपेक्षा है कि क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों पर इतनी सीमा तक अन्यथा दबाव पड़े अथवा उससे कीमत उस सीमा तक वृद्धि रूक जाए जो अन्यथा हो जाती ।

(घ) पाटन के बावजूद बिक्रियों में वृद्धि होने का यह आशय नहीं है कि "कोई क्षति नहीं हुई अथवा कोई भी कारणात्मक संबंध मौजूद नहीं है ।" इसके विपरीत नियमावली के तहत प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वह इस बात पर विचार करें कि क्या पाटित आयातों में काफी वृद्धि हुई है । चाहे वह समग्र रूप में

हो अथवा वह भारत में उत्पादन अथवा खपत की दृष्टि से हो। इसके अलावा, प्राधिकारी से इस बात की जांच किए जाने की अपेक्षा है कि क्या घरेलू उद्योग के वास्तविक अथवा संभाव्य बिक्रियों अथवा बाजार हिस्से हिस्से में गिरावट आई है, इस प्रकार, ऐसी स्थिति में जहां कुल बिक्रियों में वृद्धि हो, बाजार हिस्से में गिरावट आई, से स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

(ड.) यद्यपि यह बात सत्य है कि पाटित आयातों की मात्रा भारत में हो रहे उत्पादन अथवा खपत की तुलना की तुलना में अधिक नहीं रही किन्तु, इस संबंध में यह नोट किया जाना चाहिए कि आयातों की वृद्धि पर काफी अधिक रही है।

(च) इस बारे में कि क्या क्षति अन्य कारकों अथवा पाटित आयातों के कारण हुई, प्राधिकारी नोट करता है कि इच्छुक पक्षकारों ने यह साबित करने हेतु कोई पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया कि पाटन के अलावा अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई। जहाँ तक निविष्टियों की कीमतों में वृद्धि होने का संबंध है, उपलब्ध जानकारी से यह नोट किया जाता है कि ये निविष्टि कीमत वृद्धियां सार्वभौमिक रही हैं। जहाँ तक आन्तरिक प्रतिस्पर्धा का संबंध है, यह बात नोट की जाती है कि इसी प्रकार की आन्तरिक प्रतिस्पर्धा में घरेलू उद्योग को पहले भी अपने लाभ में वृद्धि हुई थी।

(छ) प्राधिकारी नोट करता है कि इस अवधि में झुकावदार टायरों की माँग तथा बिक्रियों में वृद्धि रही है। अतः यद्यपि रेडियल टायरों की माँग में वृद्धि भी रही हो किन्तु यह बात साबित नहीं की गई है कि रेडियल टायरों की वजह से झुकावदार टायरों की माँग/बिक्रियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

82. प्राधिकारी ने इस तथ्य की जांच की कि क्या अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। इस संबंध में निम्नलिखित कारकों का विश्लेषण किया गया -

(क) तीसरे देशों से आयात - अन्य देशों से संबद्ध उत्पाद का आयात या तो नगण्य (न्यूनतम से कम) है अथवा निर्यात कीमत बहुत अधिक है। अन्य देशों से आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति प्रतीत नहीं होती है।

(ख) माँग में कमी - संबद्ध वस्तु की माँग में वृद्धि हुई है। मात्रा में संभावित कमी से घरेलू उद्योग को क्षति प्रतीत नहीं होती है।

(ग) खपत का पैटर्न - खपत के पैटर्न में किसी विशेष अंतर को नोटिस नहीं किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पाद की सीधी प्रतिस्पर्धा संबद्ध देशों से आयातित वस्तु के साथ हो रही है। विचाराधीन उत्पाद की माँग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है और ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि खपत के पैटर्न से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

(घ) प्रतिस्पर्धा की दशाएं- प्रतिस्पर्धा की दशाओं या व्यापार बाधक प्रथाओं से घरेलू उद्योग की क्षति होने का कोई साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

(ङ.) प्रौद्योगिकी विकास - क्षति अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में कोई ऐसा विशेष परिवर्तन प्रतीत नहीं होता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो और न ही प्रौद्योगिकी विकास के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई साक्ष्य प्राधिकारी के नोटिस में लाया गया है।

(च) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन - आवेदक के निर्यात निष्पादन में कोई गिरावट नहीं आई है। वस्तुतः घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि प्रदर्शित हुई है। लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग को निर्यात निष्पादन बँटा हुआ है और घरेलू बाजार में संबंधित उत्पाद के लिए क्षति का आकलन करते समय केवल घरेलू निष्पादन पर विचार किया गया है।

(छ) **उत्पादकता** - उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। अतः उत्पादकता में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग की क्षति का संभव कारण नहीं है।

कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

83. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन के विश्लेषण से प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग का कार्य निष्पादन गड़बड़ा गया है। यह बात निम्नलिखित तथ्य साबित होती है।

(क) संबद्ध देशों से आयातों का लैण्डेड मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन लागत से बहुत कम था जिससे अत्यधिक कीमत कटौती हुई। प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग लागत वृद्धि की सीमा तक बिक्री प्राप्ति में असमर्थ रहा। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग कीमत वृद्धि दर्शाने की सीमा तक बिक्री वूसली नहीं कर पाया।

(ख) घरेलू उद्योग द्वारा सामना की गई सकारात्मक कीमत कटौती और अनुवर्ती कीमत ह्रास का परिणाम लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में गिरावट के रूप में हुआ।

(ग) अत्यधिक सकारात्मक कीमत कटौती का परिणाम संबद्ध देशों से हुए आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के रूप में हुआ। इसके सीधे परिणाम के रूप में जहाँ भारत में माँग में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई, वहीं घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई।

(घ) अत्यधिक कीमत कटौती होने और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अनुवर्ती गिरावट का परिणाम एक ऐसी स्थिति बनी जहाँ अधिक बाजार माँग के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी बिक्री और उत्पादन मात्रा बढ़ाने में असमर्थ था।

84. यदि विश्लेषण जैसाकि ऊपर किया गया है ठीक है, जिसमें पाटित आयातों के क्षतिकारी प्रभावों से घरेलू उद्योग की स्थिति पर सभी ज्ञात कारणों के प्रभावों की ठीक से पहचान की गई तथा उन्हें अलग-अलग किया गया है तो यह निष्कर्ष दिया जाता है कि ऐसे अन्य कारकों से यह तथ्य उलट नहीं हो जाता है कि वास्तविक क्षति कारण पाटित आयात रहे हैं।

85. अतः यह निष्कर्ष लिया जाता है कि संबद्ध देशों के उद्भव के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जो पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के आशय के भीतर आता है।

झ. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

86. पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतया ऐसे पाटन को समग्र करना होता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही हो और भारतीय बाजार में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनर्स्थापित करना है जोकि देश के सामान्य हित में हो।

87. प्राधिकारी यह बात स्वीकार करता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध माल अथवा संबद्ध माल के प्रयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत-स्तरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकेगा और इसके

परिणामस्वरूप, इन उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ सकेगा। किन्तु, पाटनरोधी उपाय किए जाने से भारतीय बाजार पर उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों के फलस्वरूप पाटन पद्धतियों द्वारा अर्जित अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग में आ रही गिरावट रूक सकेगी और संबद्ध माल के उपभोक्ताओं को बेहतर चुनाव की उपलब्धता कायम रखने में सहायता मिलेगी। अनुप्रवाही उद्योग पर प्रभाव को न्यूनतम किए जाने के उद्देश्य से प्राधिकारी ने यह यथोचित माना है कि पाटन तथा क्षति मार्जिन से भी कम स्तर पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाए। प्राधिकारी नोट करता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध देश से होने वाले आयात किसी भी प्रकार से सीमित नहीं होंगे और इसीलिए उपभोक्ताओं का इस उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

निष्कर्ष

88. प्राधिकारी उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि
- (क) संबद्ध देशों से संबद्ध माल का भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से भी कम मूल्य पर किया गया है;
 - (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;
 - (ग) संबद्ध देशों से पाटित आयातों द्वारा संचयी आधार पर क्षति हुई है।

ट. सिफारिशें

89. प्राधिकारी नोट करता है कि जांच प्रारंभ की गई और इसे सभी इच्छुक पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सरकारात्मक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। निर्धारित नियमावली के अनुसार पाटन, क्षति और पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में पाटनरोधी संबंधी अन्तिम जांच करने और संबद्ध देश के विरुद्ध सरकारात्मक पाटन मार्जिन साबित होने के साथ-साथ ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति निश्चित रूप से स्थापित करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन तथा क्षति को कम किए जाने के उद्देश्य से निश्चयात्मक शुल्क लगाया जाना अपेक्षित है।

90. अतः प्राधिकारी यह जरूरी समझता है कि संबद्ध देश से संबद्ध माल के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क नीचे वर्णित रूप तथा तरीके में लगाए जाने की सिफारिश की जाए।

91. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए अपेक्षातया कम शुल्क वाले नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन से भी कम राशि के बराबर राशि के निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है ताकि घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त किया जा सके। इस प्रयोजनार्थ आयातों का लैण्डेड मूल्य वह आकलनीय मूल्य होगा जैसा कि सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के तहत सीमाशुल्क द्वारा और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख 9 तथा 9क के तहत आने वाले शुल्कों से इतर सीमाशुल्क के सभी शुल्क द्वारा यथानिर्धारित हो। तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के सभी निर्यातों जो कि सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण अधिनियम, 1975 के अध्याय 40 के तहत आते हों, पर नीचे दी गई सारणी के कालम 9 में उल्लिखित राशि तथा आयातों के लैण्डेड मूल्य के बीच के अन्तर की बराबर राशि के निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है।

क्र.सं.	टैरिफ़ मद	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्भव का देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	माप की ईकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	40131020	बसों तथा लारियों के रबड़ की आंतरिक ट्यूब्स	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू टायर कां.लि.	कोई	10.06	प्रति नग	अम.डॉ.
2	40129049	बसों तथा लारियों के लिए रबड़ के टायर फ्लैप्स	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू टायर कां.लि.	कोई	3.92	प्रति नग	अम.डॉ.
3	40112090	16" से अधिक नॉमिनल रिम डायर कोड़ वाले रबड़ के नये/ अप्रयुक्त न्यूमैटिक नौन रेडियल बायस टायर	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू टायर कां.लि.	कोई	121.67	प्रति नग	अम.डॉ.
4	40131020	बसों तथा लारियों के रबड़ की आंतरिक ट्यूब्स	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू से इतर कोई अन्य	कोई	10.06	प्रति नग	अम.डॉ.
5	40129049	बसों तथा लारियों के लिए रबड़ के टायर फ्लैप्स	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू से इतर कोई अन्य	कोई	3.92	प्रति नग	अम.डॉ.
6	40112090	16" से अधिक नॉमिनल रिम डायर कोड़ वाले रबड़ के नये/ अप्रयुक्त न्यूमैटिक नौन रेडियल बायस टायर	कोई	चीन जन. गण.	कोई	सैन्डोग जियू से इतर कोई अन्य	कोई	121.67	प्रति नग	अम.डॉ.
7	40131020	बसों तथा लारियों के रबड़ की	थाईलैंड से इतर कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	10.06	प्रति नग	अम.डॉ.

		आंतरिक ट्यूब्स								
8	40129049	बसों तथा लॉरियों के लिए रबड़ के टायर फ्लैप्स	कोई	थाईलैंड से इतर कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	3.92	प्रति नग	अम.डॉ.
9	40112090	16" से अधिक नॉमिनल रिम डायर कोड वाले रबड़ के नये/ अप्रयुक्त न्यूमैटिक नौन रेडियल बायस टायर	कोई	थाईलैंड से इतर कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	121.67	प्रति नग	अम.डॉ.
10	40131020	बसों तथा लॉरियों के रबड़ की आंतरिक ट्यूब्स	कोई	थाईलैंड	कोई	कोई	कोई	10.06	प्रति नग	अम.डॉ.
11	40129049	बसों तथा लॉरियों के लिए रबड़ के टायर फ्लैप्स	कोई	थाईलैंड	कोई	कोई	कोई	3.92	प्रति नग	अम.डॉ.
12	40112090	16" से अधिक नॉमिनल रिम डायर कोड वाले रबड़ के नये/ अप्रयुक्त न्यूमैटिक नौन रेडियल बायस टायर	कोई	थाईलैंड	कोई	कोई	कोई	121.67	प्रति नग	अम.डॉ.
13	40131020	बसों तथा लॉरियों के रबड़ की आंतरिक ट्यूब्स	कोई	चीन के इतर कोई अन्य	थाईलैंड	कोई	कोई	10.06	प्रति नग	अम.डॉ.
14	40129049	बसों तथा लॉरियों के लिए रबड़ के टायर फ्लैप्स	कोई	चीन के इतर कोई अन्य	थाईलैंड	कोई	कोई	3.92	प्रति नग	अम.डॉ.
15	40112090	16" से अधिक	कोई	चीन के इतर	थाईलैंड	कोई	कोई	121.67	प्रति नग	अम.डॉ.

		नॉमिनल रिम डाया कोड वाले रबड़ के नये/ अप्रयुक्त न्यूमैटिक नौन रेडियल बायस टायर		कोई अन्य						
--	--	--	--	-------------	--	--	--	--	--	--

टायरों, ट्यूबों तथा फ्लैपों के संयोजन से हुए आयातों के संबंध में सन्दर्भ कीमत उस संयोजन के हिस्सों की संदर्भ कीमत की राशि होगी।

92. उपरोक्त के अध्यक्षीन प्राधिकारी दिनांक 31 जुलाई, 2006 को सं० 14/9/2005-डीजीएडी द्वारा जारी अनन्तिम जांच निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

93. इस सिफारिश के परिणामस्वरूप होने वाले केन्द्रीय सरकार के आदेशों के विरुद्ध अपील उक्त अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकारण के समक्ष की जा सकेगी।

94. प्राधिकारी इसमें यथा अनुशंसित निश्चयात्मक उपायों को जारी रखे जाने, उसमें संशोधन किए जाने अथवा उन्हें समाप्त किए जाने की आवश्यकता संबंधी पुनरीक्षा समय-सीमा पर कर सकेगा जो उक्त अधिनियम में संगत उपबंधों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार किया जा सकेगा। प्राधिकारी द्वारा ऐसी पुनरीक्षा के लिए तब तक किसी भी अनुरोध पर विचार नहीं किया जाएगा। जब तक कि इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के अनुसार किसी इच्छुक पक्षकार द्वारा उसे दायर नहीं किया जाता।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th June, 2007

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-Dumping investigation concerning Imports of Bias Tyres originating in or exported from China PR and Thailand.

No. 14/09/2005-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. WHEREAS Automotive Tyre Manufacturer Association (herein after referred to as the Applicant) filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred to as the Rules), alleging dumping of new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes and flaps of rubber used in buses and lorries/trucks (herein after referred to as subject goods), originating in or exported from China PR and Thailand (herein after referred to as subject countries) and requested for initiation of anti dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods. The Authority notified the Embassy of China PR and Thailand about the receipt of dumping allegation in accordance with sub rule 5(5) of Rules.

3. WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 30th Dec., 2005 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries in

accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping.

4. And whereas the Designated Authority notified preliminary findings vide notification No. 14/09/2005-DGAD dated 31st July 2006 and recommended imposition of anti-dumping duty concerning imports of subject goods originating in or exported from China PR and Thailand.

A. PROCEDURE:

5. The procedure described below has been followed:

(i) On 30th December 2005, the Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, issued an initiation notification published in the Gazette of India, initiating an anti dumping investigation with regard to imports of Bias Tyres originating in or exported from China PR and Thailand, (hereinafter referred as subject countries). The Anti dumping proceeding was initiated following an application received from Automotive Tyre Manufacturer Association (ATMA), (hereinafter referred as applicant) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The application contained evidence of dumping of the said product and material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

(ii) The Authority notified the Embassy of China PR and Thailand in India about the receipt of fully documented application made by the applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.

(iii) According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said initiation notification to the known exporters, importers, industry associations, embassies of the subject countries and to the applicant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(iv) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of non confidential version the application to all the known exporters in subject countries and Embassy of China PR and Thailand in India. As per Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassy of China PR and Thailand in India. The Embassy of China PR and Thailand in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and were requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters and producers were also sent to the respective embassies along with the name and address of the exporters.

(v) The applicant requested the Authority to treat China as a non-market economy country for the purpose of present investigations. For the purpose of initiation, the normal value in China PR was considered based on the price of the subject goods in Sri Lanka after treating Sri Lanka as an appropriate third market economy country as per the information submitted by applicant. The Authority informed the known exporters from China that it proposed to examine the claim of the applicant in the light of para (7) & (8) of Annexure-I of the Anti-Dumping Rules as amended. The concerned exporters / producers of the subject goods from China PR were therefore advised to furnish necessary information/sufficient evidence, as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Designated Authority to consider whether market economy treatment should be granted to cooperating exporters/producers who could demonstrate that they satisfy the criteria stipulated in the said paragraph. A questionnaire for according market economy treatment was forwarded to all the known exporters/producers in China and the Embassy of the Peoples' Republic of China.

(vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from China PR and Thailand.

China

1. Yellow Sea Tyres
Dong Hai Road, Qingdao, China
2. Shangdong Hongsheng Rubber Co., Ltd
Dawang Industry Zone, Guangrao,
Shandong, China P.C 257 335
3. Qingdao Doublestar Tire Industrial Co.,
No, 95 Qingdao Road, Jiaonan Development Area,
China
4. Qingdao Tengjiang Tyre co., Ltd
No 425 Building C, Qingdao World Trade Center,
H. K Middle Road, Qingdao, China 266 071
5. Shandong Chengshan Tire Co.,
11, Rong' an Rongcheng City, Shandong Province,
China
6. Chaoyang Long March Tyre Co., Ltd
No 1, Xiangyang Road, Longcheng District,
Chaoyang City, Liaoning Province, China
7. Triangle Tyre Co., Ltd
No 56, Qingdao Middle Road, Weihai, Shangdong,
China

8. Shandong Jinyu Tyre Co., Ltd
1504 Qilimansion, No 2 Nanjing Road, Qingdao,
Shandong, China
9. Qingdao Yellow Sea Rubber Group co.,
Qingdao Rubber Industry Park, Hong Tan,
Cheng Yang Distt, Qingdao, China
10. Shandong Yongtai Chemical Group Co., Ltd
Dawang Rubber Industry Area, Guangrao, Dongying,
Shandong, P.R. China
11. Shandong Linglong Rubber Ltd
No 170 Jincheng Road , Zhaoyuan, City , Shandong,
China- 265400
12. Guangzhou Pearl River Rubber Tyre Ltd
Tanbu, Huadu, Guangzhou 510828, China
13. Henan Tyre Co Ltd
48 Jiaodong South Road, Jiaozuo, Henan, China

Thailand

1. Hihero Co., Ltd.
408/63-64 Phaholyothin Road,
Samsennai, Phayathai, District, BKK 10400
Thailand
2. Thai Bridgestone Co., Ltd.
14/3 Phaholyothin Rd., T. Klongnueng,
A. Klong Luang, Pathumthani
Thailand 12120
3. Otani Tire Co., Ltd.
55 Mu 7, Petchkasem KM.37 Rd.,
T. Klongmai, A. Sampran, Nakornpathom
Thailand

(vii) In response to the above notification, none of the exporters responded to the questionnaire within the prescribed time limits. From China, M/s. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. (Jinyu) filed its first response on 21st June, 2006, which was grossly deficient. Additional information was provided on 21st July, 2006, which was also incomplete as detailed in the Preliminary Findings. Subsequent to the preliminary findings, they filed response removing the deficiencies to a reasonable extent on the basis of which Authority decided to conduct on the spot verification. Even though the response was significantly after the time limits, the Authority considered it appropriate to examine the same. From Thailand, Thai

Bridgestone Co., Ltd, informed that they had not exported subject goods to India during POI. No other exporter responded from Thailand.

(viii) A copy of initiation notification along with the importers questionnaire was also sent to the following known importers and users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

Importers

M/s Chadha Tyre Traders
M/s Kaks & Bills Pvt Ltd
M/s Anirudha Industries
M/s Vikas Road Carriers
M/s International Trader
M/s AAA Impex
M/s Jamnadas and Brothers

Users

M/s Tata Motors Ltd
M/s Volvo India Pvt Ltd
M/s Ashok Leyland Ltd
M/s Eicher Motors Ltd

(ix) In response to the above notification, only M/s Tata Motors, one of the users of subject product, has responded. But the company has not filed any questionnaire response, nor have they imported the subject product from subject countries. In addition to Tata Motors, Automotive Tyre Importers Association (ATIA), All India Tyre Dealers Federation (AITDA), All India Confederation of Goods Vehicle Owner's Association (ACOGOA) have filed their submissions. M/s International Trading Corporation, New Delhi, S. K. International New Delhi, M/s Vikas Road Carriers New Delhi M/s Kaks & Bills Pvt Ltd New Delhi importers have filed the information in the questionnaire format. Neither ATIA, AITDA and ACOGOA nor their members except above importers have filed any information in questionnaire format, but have advanced their argument against imposition of anti dumping duties, which have been addressed in these findings. Petitioner however disputed the standing of these associations to participate in the present investigations on the grounds that these associations have not established their locus as an interested party.

(x) The Authority notified preliminary findings vide Notification dated the 31st July, 2006 and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication. Other than the domestic Industry, following parties also responded to the preliminary findings and offered their comments.

- Shandong Jinyu Tyre Co., Ltd, China

- Tata Motors,
- Automotive Tyre Importers Association (ATIA),
- All India Tyre Dealers Federation (AITDF),
- All India Confederation of Goods Vehicle Owner's Association (ACOGOA)
- Thai Bridgestone Co., Ltd. Thailand.

(xi) Subsequent to the provisional finding, the Authority issued a corrigendum dated 19th September, 2006. The Central Govt. imposed the provisional duties vide notification no. 106/2006 dated 9th October, 2006.

(xii) The Authority held a public hearing on 26th September 2006 to hear the interested parties orally, which was attended by a number of interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The Authority in this finding has considered the written submissions thus received from interested parties. The parties were also asked to file rejoinder submissions on views expressed by other interested parties.

(xiii) Arguments raised by interested parties before notifying preliminary findings which have been brought out in the Preliminary Findings have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised after the preliminary findings have been dealt in the present findings. Further, the comments by the interested parties on the present disclosure statement have been appropriately dealt in the Final Findings.

(xiv) The Authority conducted on-the-spot verification of the information provided by the domestic industry, the Chinese exporter and AITDF to the extent considered necessary.

(xv) Additional details regarding injury were sought from the applicant, which were also received.

(xvi) The Authority kept available non-confidential version of the evidences/ submissions presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties.

(xvii) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

(xviii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings have been disclosed to known interested parties on 11th June 2007 and comments received on the same have been considered in the present Final Findings.

(xix) The investigation of dumping covered the period from 1st April 2004 to 30th June 2005 (also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the

period from 1st April 2001 to the end of period of investigation (also called Injury period).

(xx) It was considered necessary to request the central government for six month extension of time to complete the investigation and notifying the final findings under the special circumstances. Six months extension of time to complete the investigations and notify the final findings under the special circumstances was granted by the Central government.

(xxi) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the domestic industry so as to ascertain if anti dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

(xxii) Requests were made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of subject goods in India for the period of investigation and preceding three years. However no response was received from Central Board of Excise and Customs (CBEC).

(xxiii) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded findings on the basis of the facts available.

(xxiv) The Authority has considered data relating to cost of production and selling price of all interested parties as confidential as it would give competitive advantage to their competitors. The other information has not been considered as confidential unless the responding party has given sufficient justification for keeping the information as confidential.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLES.

6. The product under consideration is new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes and flaps of rubber used in buses and lorries/trucks originating in or exported from China PR and Thailand. Bias tyres are technically known as diagonal ply or cross ply tyres. Tyre is used along with one tube and one flap in a vehicle. One tyre, one tube and one flap is together sold as a "tyre set". The term "TTF" is prevalent in the industry to denote a "tyre set". Tyre, tube and flap jointly render the function of "tyre" in a vehicle. Air is filled in the tube inside the tyres and a flap is used in between wheel and tube to avoid tube burst due to its

cohesion with the wheels. Tyre, tube and flap are produced separately by the producers. Sale of tyre, tube and flap are primarily on "TTF" or "tyre set" basis. However, they are sold individually also. Import of the product is also both on TTF basis and as individual units and can be in any combination. Bias tyre, tube and flap used in bus and lorries/trucks constitutes the product under consideration irrespective of whether they are in TTF form or individually as tyre, tube and flap.

7. The scope of the product includes only bias tyres, flap, tube used in buses and lorries/ trucks. Tyres are produced for use in vehicles like truck, bus, lorries, light commercial vehicles, passenger car, jeep, tractor, two wheeler, three wheeler, animal pulled vehicles, earthmover, industrial tyres, air crafts etc. However, the product under consideration is the type that is used only in buses & lorries/trucks. All other types of tyres including radial tyres are beyond the scope of the product under consideration and present investigations.

8. There are two categories of tyres, namely radial and non-radial. The non-radial category is known as bias or diagonal ply tyres. The categorization is based on the load-inflation pressure relationship prescribed by Indian standards. The scope of the product includes only non-radial or bias tyres used in buses and lorries/ trucks.

9. Tyres, Tubes and Flaps are produced separately. However, they are invariably used together in automotive applications. Tyres are classified in Chapter 40 under customs subheading no. 40112090 and tubes and flaps are under 40131020 and 40129049 respectively. However, customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of investigation.

10. Interested parties have filed their comments in respect of product under consideration. It has been argued that

- (a) The product scope has been left very wide as the same includes very distinct sizes. The description of the product is not in conformity with the product being imported. The product includes different types like lug, semi rib, rib etc. and tyres are normally identifiable in terms of its size.
- (b) The information provided by domestic industry does not distinguish between Heavy Commercial Vehicles (HCV) and Light Commercial Vehicles (LCV) though truck and bus tyres include both HCVs and LCVs.
- (c) The imported tyres are inferior in quality and primarily substitute the retreaded tyres.
- (d) The imported tyres are produced using more of clay and retreated rubber.
- (e) The description of product needs to be modified according to sizes.
- (f) There is significant difference between tyres catered to the OEMs and that to the retail market. The segmentation is required to be done while examining the injury to the domestic industry.

11. Domestic Industry has argued as follows: –

- a) The scope of the product under consideration is well defined in the petition and notice of initiation and there can be no confusion in this regard.
- b) While it is true that there are different types of tyres, the same is at best relevant for the purpose of price comparison. In so far as the scope of the product under consideration is concerned, all these different types of tyres are very much within the scope of the product under consideration.
- c) There is no basis for the argument that the scope could be read so as to include even LCV tyres. However, considering the arguments of these parties, the Authority can also specify the size of the tyre along with other parameters in order to ensure that unintended product does not get covered within the scope of the duties.
- d) There is no significant difference between the subject product produced by the domestic producers and the products imported from subject countries. They are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, quality, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods.
- e) The imported and domestic products are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
- f) Tyres meant for bus & lorries and tyres meant for other applications are classified under different customs sub-heading. Such being the case, it is a factually incorrect statement that the imported product was not tyres meant for bus & lorries application.
- g) Production of tyres has certain minimum technical requirements. It is not possible to produce the subject goods with any quantum of retreated tyre or clay.
- h) Test reports of the Chinese tyres clearly show that the claim of the interested parties with regard to composition of tyres is not true.
- i) The Chinese exporter, Shandong Jinyu is exporting tyres to a large number of countries, which includes a number of developed countries such as USA. Their export price to these countries are as high as US\$ 120 per tyre as against US\$ 30-40 at which goods have been exported to India during this period.
- j) The claim of poor quality is not justified.
- k) Domestic industry caters to two market segments i.e. domestic after market and domestic original equipment manufacturers. Applicants submitted that the imports are taking place in the domestic after market which holds almost 77% of tyre sale. Hence, there is a direct competition between imported material and domestic product. Indian Producers either directly or through its dealers compete with these traders/resellers for the same general category of consumers. Significant volume of sales by the applicant companies is also through resellers (almost 77%). All resellers,

whether dealing in the domestic or import product are supplying the product to the same general category of customers. There is no difference in the quality of tyres supplied to OEMs or after market. BIS Certification of tyres is voluntary in nature and hence tyres with or without BIS Certification are being supplied to both OEMs and after markets.

- l) Even though the scope of product under consideration is tyres, tubes & flaps, there is a possibility of some confusion because of the operative para in the preliminary findings. The Authority should therefore clarify the product scope in the final findings.
- m) Product under consideration is defined in the Preliminary Findings as:-

"New/unused pneumatic non radial bias tyres with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks."

This gives impression as if the scope of the product under consideration is only tyres and therefore requires correction

Examination by Authority

12. As regards scope of the product under consideration, the Authority notes that the petition and notice of initiation very clearly specify the scope of the product under consideration. The product under consideration includes different types of Bias Tyres, known as lugs, semi rib, rib, etc. However, these are merely different types of the product under consideration. It is clarified that tyres for LCV are beyond the scope of the product under consideration. Having regard to the arguments of the interested parties, it however appears relevant and necessary to specify the size of tyres also for the purpose of defining scope of the product under consideration. The Authority notes in this regard that tyres of specified size only can be used for a particular application. For instance, nominal rim dia code of 16" tyre can not be used in HCVs and similarly nominal rim dia code of 20" tyre can not be used in LCV.

13. Having regard to the arguments by the interested parties, the Authority in preliminary findings considered it appropriate to include size of the tyres also within the scope of the product under consideration. Accordingly, the product under consideration is defined as *"new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes & flaps with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks"*. The scope of investigation includes tyres, tubes and flaps whether imported individually and/or in any combination thereof. In the Preliminary Findings the duties were also recommended accordingly. As regards the argument that the product meant for OEM and replacement market is different, the Authority notes that there is no evidence provided in support of this claim. Verification at the premises of the domestic industry on the contrary showed that the product meant for OEM and after market is the same.

Like Article**14. Rule 2(d) of AD Rules defines Like Article as:**

"an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

15. Arguments of Domestic Industry-

- a) The applicants have claimed that goods produced by them are like article to the goods originating or exported from China PR and Thailand.
- b) Extensive submissions were made, in quite a confusing manner, with regard to quality of the imported tyres. The parties were not able to even explain to the Designated Authority what they indeed meant by poor quality, nor could these parties demonstrate how the alleged difference in quality could be relevant to the present investigations.
- c) There is no dispute on like articles. Chinese exporter confirmed that there was no dispute on like article. None of the parties have disputed the position. The only argument was made that imported products are of inferior quality and are used in the lower end market.
- d) Tyres meant for bus & lorries and tyres meant for other applications are classified under different customs sub-heading. Such being the case, it is a factually incorrect statement that the imported product was not tyres meant for bus & lorries application

16. Arguments of exporter and other interested parties.

a) Tyres produced by the domestic industry and tyre imported from China are significantly different from each other and the two do not compete. The tyres produced by the domestic industry are used by the Indian trucks (Tata and Ashok Leyland) which are registered for higher load and tyres exported by Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd are smaller in dimension and suitable for lower end application i.e. tractor, trolley application/four wheelers, army disposal trucks and also replacement for retraded tyres. Tyres produced by domestic industry are bigger in dimension than the international tyres and are over engineered to carry over load upto 30 tones against prescribed 8 tones. Accordingly these two tyres are not competing as both are used by different types of consumers/users.

b) The quality of tyres exported by the Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. in particular and other Chinese producers in general is of much lower quality than the tyres produced by domestic industry, product weight is lesser as compared to Indian product and is used by the poor villagers for tractor trailers where the performance of tyre is not very critical. The goods

produced by the domestic industry are of far more superior quality and commands much higher prices than the goods being exported from China PR. Since the quality of Chinese tyres is inferior, the Authority should make adjustment as per Article 2.4 of the Anti Dumping agreement and provisions made under para 6(i) of Annexure-1. The adjustment needs to be made on account of tread wear and tyre life expectancy, load carrying capacity, tyre durability, unconditional warranty and guarantee, terms of sales, retradeability, and price comparison. If necessary Chinese tyre needs to be tested in Government laboratory. The tyres imported from China are used for tractor trolleys and also replacement for retreaded or repaired tyres and are totally placed into different market where domestic producers are neither positioned nor have any stakes.

- c) Tyres produced by the domestic industry in India are highly engineered tyres developed and produced after lot of research and design to perform at a very high speed and to deliver high performance and load carrying capacity. While the tyres imported from China are of poor quality and are designed for usages where performance is not a critical factor such as tractor trailers, or bullock carts or as a replacement of retreaded tyres.
- d) The subject goods are produced by the domestic industry in India by employing special specification using high grade rubber recipe and carcass construction. As the tyres produced by the Domestic industry are designed for carrying extra heavy overloads and perform at a high speed, they primarily uses expensive Natural Rubber in their compound formulations to combat the effect of heat generated due to heavy overloads and high speed. The tyres imported in India from China are produced with value line recipes and carcass construction using low grade cheaper raw material. It uses less amount of natural rubber for cutting its cost to meet demand of above said market where situation are not much demanding and performance is not critical.
- e) The domestic industry for production of tyres uses only high grade natural rubber for its construction while the Chinese producers are using cheaper raw material such as reclaimed rubber, calcium carbonate, reclaimed carbon black and clay fillers to make it cheaper and affordable according to its usage.
- f) Domestic industry spends a lot of money in building their brands and market presence for promoting their products and setting sales and distribution system which further adds to the cost of the subject goods. Moreover all the tyres being manufactured by the domestic industry comes with warranty and replacement guarantees in case it develops any snag which further adds to the cost of subject goods and makes it more expensive. The Chinese companies on the other hand do not incur any

such expenses and offers no warranties or replacement guarantees which further enables them to reduce their cost.

- g) The Designated Authority should look into the issue of quality and must make due adjustment for the quality differences for which necessary information has already made available on record with the Designated Authority.
- h) The Product under consideration is available in market in different weights and models. The price of the domestic industry within same size group differs significantly in the range of 32-50 per cent. Since the imported tyres are of low grades, their comparison with high grade tyres will result in incorrect comparison. The increase in inventory is due to excessive production and over supplied.
- i) The importers' association in their submissions have also claimed that goods imported are of inferior quality.
- j) The import of cross ply trucks/tubes tyres has given option to small transport operators on short hauls and legal loads. This category is of lower end users who have migrated from using used/retraded tyres. The domestic tyre measures mainly produce tyres for over-loading in excess of prescribed axel weight limit.
- k) The imported tyre is sold on cash and carry basis without any warranty for manufacturing defect unlike domestic industry tyre which is over engineered and larger dimension as higher selling distribution and marketing expenses in built in the price and hence costlier in comparison to imported tyres. Lug pattern varies to the extent 20% to 25%. The imported tyres by raw material, manufacturing process and other conversion cost are difference. Even two tyres of same size can vary in cost and price.
- l) AITDF claimed that domestic companies are sourcing tyres from Chinese manufacturers and are exporting to many other countries under their name except India on the plea that outsourcing from China give them significant price advantage.
- m) The Chinese and Indian tyres are two independent products having regard to their features of construction, engineering, dia, width and other technical parameters for the purpose of determining injury to the domestic industry. The law of natural justice and equity should prevail rather than single minded bureaucratic process.
- n) The arguments of the domestic industry are baseless and misleading as regards category of tyres. The tyres imported from China are bus and Lorries tyres and-used for lower end application for transportation of under loaded vehicles.
- o) While Indian tyres are bigger dimensions /heavier/over engineered and meant for 200-400%, overloading Chinese tyres are not so.
- p) There is a news article published in Economic Times dated 25.4.2007 where in the honourable finance minister himself is concerned about the cartelisation in tyre industry.

Examination by the Authority

17. The Authority is required to first identify the "product under consideration", which is specified above. After defining the product under consideration, the Authority is required to identify the like article being produced in India.

The Authority notes that the domestic and imported product contains the same basic physical and chemical characteristics. The two have the same functions and uses. The Authority also notes that Chinese tyres per se can not be stated of the inferior quality as the Chinese exporters have themselves claimed that they are exporting high grade quality tyres to some countries like USA. The Authority also notes that the quality of the tyres depends on the raw material mix which is admitted by all interested parties. Therefore to justify any claim that particular tyre is of inferior quality it should be demonstrated through raw material consumption mix which ultimately results into production of lower quality tyre. This raw material consumption mix can be verified from the plant records and books of account maintained by the producers. This can also be verified from the catalogue of the company which may show various uses and the quality parameters / features of the product.

- a) During spot verification, at the premises of the Chinese exporter namely Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd the issue of inferior quality as claimed was examined with reference to whether the exported goods are different from the goods being produced by the exporter for sale in its own market or third countries and whether these are of inferior quality. To substantiate that the goods produced by the Chinese exporters are of inferior quality / grades, the responding exporter was requested to provide plant records showing the consumption of raw materials mix for the grades exported to India and the grades sold in the domestic market, but no such records were made available. The Chinese exporter therefore could not provide any evidence from the books of accounts or plant records to show that the goods exported to India were of inferior quality. The Chinese exporter has claimed that they are exporting superior quality (Grade-1) tyres to some of the countries like USA and inferior quality tyres (Grade-3) to Asian countries including India. However, the export invoices of exports to India do not show any such grading. During on the spot verification the exporter was requested to show the purchase order from Indian importers to show that the tyres required by Indian importers are of inferior quality, but the company could not provide any such purchase order and stated that entire orders are placed over telephone. These issues were communicated to the exporter after verification and they were requested to comment on the same. However, no specific comments on non production of plant records/ books of accounts were given. It was, however reiterated that the Chinese tyres are of inferior quality. After on the spot verification they have submitted a cost of production statement for tyres sold in domestic market, USA and India which however, could not be verified from the plant records/ books of accounts as these were not made available during the on spot verification. The consumption of raw material and other claims in Appendix 5 to 9 of the exporter's questioner could not be verified during on the spot verification because neither basic records nor backup papers for arriving those figures could be shown. In the absence of these basic records, backup papers / working sheets, it was not possible by the Authority to verify the claims on cost from the books of accounts. The product brochures also do not distinguish between high quality tyres and so claimed inferior quality tyres.

On the contrary, the product broacher of M/s Jinyu inter alia states " the company has advanced manufacturing equipment. They select the best materials combined with latest technology to make JINYU, GOLDEN ROAD JOYKIN brand tires in totally 8 series, 107 sizes, 256 ply ratings & patterns. Regarding quality as life of enterprise, in the last ten years the company has purchased advanced machines from overseas and domestic suppliers, and established complemented quality warranty system. The products have been certified by CCC, quality management system certification ISO 9001:2000 standard, DOT, INMETRO, ECE and other applicable standards. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd has developed on to a modern company which is synchronised with tyre manufacturing, tech R&D and trading. Products have been distributed widely throughout People's republic of China, as well as in overseas market such as South Korea, USA, India, Brazil etc. encompassing more than 60 countries and regions"

- b) Therefore, the claim of the exporter that the tyres exported to India are of inferior Quality could not be substantiated from evidence/ plant records/ books of accounts/ invoices. The claim of inferior quality/no warrantee/ no R&D also could not supported by the product broucher of Jinyu Tyre. No other exporter from China has cooperated in the investigation and provided any evidence on quality front. No other importer/ user organisation has provided evidence in this regard, although it is argued that Chinese Tyres are of inferior quality. During the visit to AITDF, the association claimed that tyres imported from China are of inferior quality, but it could not be substantiated with any documentary evidence. Therefore the Authority is not in a position to conclude that the Chinese tyres are of inferior quality. Regarding the arguments on overloading capacity the Authority notes that the load carrying capacity depends on the raw material consumption mix which could not be substantiated during the on spot verification. During the visit to AITDF, the association claimed that tyres imported from China are of inferior quality, but it could not be substantiated with any documentary evidence..
- c) There is no response from Thailand on like articles. None of the interested parties have advanced any argument/evidence on the quality of imported product from Thailand.
18. After examining the claims, the Authority holds that there is no difference in the subject product imported from China and Thailand and produced by the domestic industry. The imported product is also used by same category of consumers. The same are technically and commercially interchangeable. The product contains the same basic physical and technical characteristics and has the same functions and uses. Accordingly the Authority holds that the subject product produced by the domestic industry and those imported from China PR and Thailand are like articles within Rule 2(d) of AD Rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY

19. Rule 2(b) defines domestic industry as under:

“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry”

20. The application was filed by Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) on behalf of the domestic industry using the information provided by M/s Apollo Tyres Ltd and M/s Ceat Ltd. Application was supported by M/s JK Tyres (JK Industries Ltd.), M/s Birla Tyres (Kesoram Industries Ltd) and M/s MRF Ltd. Following the initiation, the Authority sought injury information from supporting companies also. In response to the same, JK Tyres and Birla Tyres showed their willingness to participate in the investigations and provided information required by the Authority in the form and manner prescribed. In the preliminary finding, the Authority, after examining, determined that the Apollo Tyres, Birla Tyres, Ceat Tyres and JK Tyres constituted domestic Industry within the meaning of the Rule 2(b).

21. After the preliminary findings the Authority requested, following other Indian Producers namely :-

- a) M/s. MRF Ltd. Chennai.
- b) M/s. Goodyear India Ltd.
- c) M/s. Balakrishna Industries Ltd. Mumbai.
- d) M/s. Wear Well, Madhya Pradesh.
- e) M/s. Malhotra Rubbers Ltd. New Delhi.
- f) M/s. Tyre Corporation of India Ltd. (TCIL), Kolkata.

to provide relevant costing & injury information for the subject goods during POI. Attention of these Indian Producers was also drawn to the directions of the Hon'ble Supreme Court in the Reliance Industries case. Their attention was also drawn that in the absence of non filing of complete response the authority shall proceed on the basis of facts available. In response, cost audit report was filed by M/s. MRF Ltd. for the year 03-04 and 04-05. In respect of Goodyear, cost audit reports were collected from the Department of Company Affairs for the year 2004 and 2005. It is however noted that the information provided is grossly insufficient to include these companies as part of domestic industry for the purpose of determination of non injurious price and injury analysis. These companies have provided cost audit report, showing production, sales volumes, cost of production, selling price, profit/loss, etc. However, the Authority is unable to use this information for a number of reasons, which includes the followings-

- a) The cost audit reports contain information for the financial year and the information is not available for the investigation period considered by the Authority and previous years.
 - b) The information is not available separately for the product under consideration.
 - c) All relevant information including the weight of product under consideration for the purpose of non injurious price is not available.
22. The Authority is therefore unable to use the information provided/collected in respect of Goodyear and MRF. Since the information provided is not complete in all respects, the Authority has not used the same.
23. The other Indian producers replied as under:-

M/s. Tyre Corporation of India Ltd. (TCIL), Kolkata replied that they are doing 100% job work for other tyre companies which supply the basic raw material. They further requested that in the light of this their name should be excluded for submission of data required for this anti-dumping investigation.

M/s. Malhotra Rubber Limited, Gautam Budh Nagar (UP) replied that they do not produce new/unused pneumatic non radial bias tyres with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks. They further stated that they are engaged in production of light commercial vehicle tyres, passenger car tyres and two/three wheeler tyres.

M/s. Wearwell Tyre & Tube Industries Pvt. Ltd. Bhopal replied that their company is closed and they are no more in business.

M/S Balakrishna Tyres did not respond to the Authority. However, the domestic industry have submitted a copy of internet information from the company's website which shows that M/s. Balakrishna Tyres are not producing Bias Tyres for truck and bus application, which is the product under consideration. In view of above position, the production of bias truck/bus tyres during POI is as under:-

Name of the company	Production in nos.	Percentage to Indian Production.
Domestic Industry		
Apollo Tyres Ltd.	35,53,599	26.24
J K Industries Ltd.	31,20,654	23.04
Ceat Ltd.	22,47,243	16.59
Birla Tyres	12,54,596	9.26
Total Domestic Industry	101,76,092	75.14
Supporters		
MRF Ltd	28,28,846	20.89
Domestic Industry & Supporters	130,04,938	96.02
Others		

Goodyear India Ltd.	5,38,649	3.98
Total Indian Production	135,43,587	100.00

The Authority notes that (a) production of the four manufacturers i.e. Apollo Tyres Ltd, Ceat Ltd. JK Tyres (JK Industries Ltd.) and Birla Tyres (Kesoram Industries Ltd) constitute a major proportion in Indian production (b) domestic producers expressly supporting the application accounted for more than 50 per cent of the production of the like product produced by the domestic industry, (c) the application was made by or on behalf of the domestic industry,

24. The associations who responded to the Authority have not disputed the fact that the application was filed on behalf of the domestic industry representing a major proportion of domestic producers nor have they disputed that the participating companies constitute domestic industry. Other interested parties however, claimed that

- a) Petitioners are related to the producers/exporter of subject goods from China and this has been concealed by the domestic industry to misguide Designated Authority.
- b) The domestic Industry on the one hand crying foul due to cheap and low price imports from China-PR while on the other hand drawing business strategy to gain advantage of this lower production cost being mastered by Chinese by servicing the subject goods from Chinese producers and also by entering into collaboration with these manufacturers. The website of the domestic industry shows the relationship with the Chinese producers and servicing subject goods and entering into strategic collaboration. The relationship is also noticeable in their annual reports. The domestic industry is enjoying advantage of low cost production for their own benefit to the exclusion of number of users and consumers in India. The logic behind such relationship is lower cost of production in China. The producers in China are cost effective.
- c) The domestic industries have imported the subject goods from China PR. The domestic industry has misdirected the Authority by stating that they have not imported the tyres into India. The Manufacturers are facing problems due to huge over supply situation in the Indian market. At para 70 of the Preliminary finding the Authority has observed that even if the tyre companies has purchased some goods from the market it is not established that these purchases are of imported goods. The annual report of J. K. Industries and Apollo Tyres speaks about business appliances, outsourcing, etc., which clearly implied that these companies purchased Chinese tyres. Attention of the Authority is also drawn to some of the news items wherein the companies which are forming part of domestic industry have spoken about outsourcing of the

subject goods and about their alliances/ future alliances with the Chinese companies. The attention was also drawn to the website of M/s Apollo International Ltd. It mentions that Tyre Tech Global has initiated sourcing of tyres from China. It is also shown that Apollo International Ltd and Jinyu tyre company, Shandong have signed a MOU regarding supplies.

25. Before the preliminary findings, the Authority sought clarifications in this respect from the applicants, who certified that none of the participating companies are related to any parties in the exporting countries. M/s. Apollo International Ltd. also certified that the Company has no business alliance with any manufacturer/ exporter of the product under consideration in China or Thailand for export or import of the product under consideration to the Indian market and that the Company has not imported/ exported the product under consideration either from China or from Thailand to India under any such possible business alliance during the investigation period. Moreover, declarations in this respect were also provided by applicants in respective part of the application itself. It has not been established that those declarations are incorrect.

26. Subsequent to the preliminary findings, the Authority requested the domestic industry to provide detailed factual information on the relationship and imports of goods from China. The domestic industry has clarified the matter as under:-

i) Ceat Ltd inter alia replied that :-

- (a) *We are exploring the possibilities of outsourcing radial tyres from China. This is still at a nascent stage. We further confirm that we have not imported tyres from China. We also confirm that we have not made any financial investments in China.*
- (b) *The company is exploring the possibilities of setting up a Greenfield project in India to produce radial tyres for truck/bus segment. However, the size and cost of the project has not yet been finalised. We also clarify here that the company neither has made nor has any plans to make any investments in China for Bias Tyres.*
- (c) *We once again reiterate that the company has not imported Bias/ radial tyres from China hitherto.*

ii) Apollo Tyres Ltd inter alia replied :-

- (a) *Apollo tyres had earlier in nov-2003 entered in to strategic alliance with Michelin, France for setting up a joint venture for production of radial tyres in India. Entire operations relating to this joint venture were not for production of bus & truck bias tyres.*
- (b) *Pending implementation of the project for production of the radial tyres, Michelin Apollo Tyres Pvt. Ltd. has undertaken import of radial tyres for sale in India. Please note that these imports were of radial tyres.*
- (c) *The news item that appeared in Business Line about acquisition in China refers to efforts of the company to buy tyre manufacturing*

facility in China- either existing or fresh facilities being set up. It is clarified that neither Apollo tyres Ltd nor Apollo International Ltd. nor any company related to these two companies have purchased any tyre manufacturing facilities in China so far. Apollo International Ltd. purchases various kinds of tyres from Chinese market and sells the same in third country markets. None of these Chinese tyres have been imported into India by Apollo Tyres Ltd.

iii) Apollo International Ltd. inter alia replied :-

- (a) The website at "products" refers to "sourcing" of tyres from Apollo Tyres Ltd. and China. None of the goods purchased from China have been imported into India. Various kinds of tyres purchased by the company are sold outside India during period of investigation i.e. April-2004 to June-2005.
- (b) As stated in the website concerning profile of Tyre Tech Global, this is the tyre export division of Apollo International Limited.
- (c) The news item that appeared in Business Line about acquisition in China refers to efforts of the company to buy tyre manufacturing facility in China- either existing or fresh facilities being set up. It is clarified that neither Apollo tyres Ltd nor Apollo International Ltd. nor any company related to these two companies have purchased any tyre manufacturing facilities in China so far. Apollo International purchases various kinds of tyres from Chinese market and sells the same in third country markets. None of these Chinese tyres have been imported into India during POI.
- (d) A minutes of the meeting was earlier signed with ***** the same was for tyres business to export Chinese tyres in third country market. The said minutes refers to (a) purchase of ***** for export of tyres to USA (b) truck and bus radials (c) bias truck tyre exports to third countries.

iv) J K Industries Ltd. inter alia replied :-

- (a) The news item that appeared in business line about tie ups in China refers to efforts of our company or our associates company to buy tyres from Chinese manufacturers. It is clarified that our company/ associates of our company has not made any financial investments in China so far. An associate of our company purchases various kinds of tyres from Chinese manufacturers and sells them in third countries; none of these tyres are brought in to India.
- (b) In order to increase group's export business, our associate company ***** purchased tyres from Chinese manufacturer, which have been sold in international market. This arrangement is in the form of outsourcing arrangement for sale in third country and not for sale in India.
- (c) It is clarified that we have not sold tyres in Chinese domestic market.
- (d) No outsourcing contracts exist from countries other than China.

- (e) Plans to acquire plants to expand capacity-This is a continuous exercise in the normal course of expanding business.
 - (f) Investment of Rs.150 crores was planned to expand plants at its existing locations for truck and passenger line radial tyres.
 - (g) The statements appearing in the balance sheet are more towards expectations of future events likely to take place in the world tyre market. The factual position is thus different from the forward looking statements. The factual position is that there are no imports by J K Industries Ltd or its associates into Indian domestic market. Only six nos bias tyres were imported from China for testing purposes.
- v) Regarding Birla tyres, none of the interested parties have raised any arguments as regards relationship and import issues.

27. Examinations by the Authority

- a) The import statement of DGCI&S was examined transaction by transaction. It was found that there were no imports of the product under consideration by domestic industry. However, on the basis of information provided by the domestic industry, it is found that associates of J K Industries and Apollo Tyres are buying Chinese tyres and selling the same in third countries. It is thus important to determine whether imported goods are entering into the commerce of country. Since only imports into India are relevant for the present purpose, the Authority notes that purchase of Chinese tyres for exports to other countries are not relevant for the present purpose as it is not entering into the commerce of country. In the earlier investigations also wherever the domestic industries have imported subject goods under duty free license under obligation to exports, the Authority has not excluded such companies from the purview of domestic industry purpose as imports are not entering into the commerce of country. Therefore a situation where the goods are procured from a country and directly exported to third countries without importing the same into India can be compared with a situation where the duty free imports are brought into India with an export obligation. In both the situation the goods are not entering into the commerce of the Country.
- b) None of the news items brought to the notice of the Authority establish that any of these companies have been importing Chinese bias tyres in the Indian market. There is no evidence that the Indian Producers have made investments in production facilities in China.
- c) The Authority also notes that the Rules do not provide for automatic exclusion of a company who has itself imported the product or who is related to such a producer. None of the interested parties have established why any of the domestic industry should be excluded from the scope of the domestic industry, assuming that they have imported Chinese tyres.

28. The authority notes that for the purpose of clause 2 (b)
(i) Producers shall be deemed to be related to exporters or importers only if,-

- (a) One of them directly or indirectly controls the other, or
- (b) Both of them are directly or indirectly controlled by a third person, or
- (c) together they directly or indirectly control a third person subject to the condition that are grounds for believing or suspecting that the effects of the relationship is such as to cause the producers to behave differently from non-related producers.

(ii) a producer shall be deemed to control another producer when the former is legally or operationally in a position to exercise restraint or direction over the latter.

29. None of the interested parties has placed any material on record whereby the relationship is established within the above definition. Therefore it could not be established that the Indian producers are related to Chinese or Thailand exporter so as to exclude them from the scope of the domestic industries.

30. In view of the above, the Authority holds that it has not been established that any of the constituents of the domestic industry are required to be excluded on the ground of imports or/ and relationship. The Authority holds that Apollo Tyres, JK Tyres, Ceat Ltd, and Birla tyres constitutes domestic industry within the meaning of the Rule 2(b).

D. DUMPING MARGIN- NORMAL VALUE

Thailand

Claim of the Applicant

29. Applicant claimed that producers from Thailand are dumping subject goods in India. Efforts were made to obtain information about the prices of subject product prevailing in the domestic market in Thailand. However, no reasonable, authentic and accurate information could be obtained about the actual transaction-selling price of subject product (between a producer and wholesaler dealer/distributor) in their domestic market. In view of the same, applicants used estimates of cost of production to determine normal value in Thailand

Response of Exporters/producers

32. Till the time of issuance of preliminary findings, none of the producers/exporters responded. Subsequent to preliminary finding M/s. Thai Bridgestone Co., Ltd., Bangkok inter alia replied that:

It has been alleged that we have exported the said bias tyres to India which is not the case for our company. In response to such allegation, we would like to advise that we have never exported bias tyres for buses and lorries/trucks to India as claimed in the Preliminary Findings. Anyhow, in order to clear the allegation, we are willing to cooperate with you to complete your findings. So, we would appreciate it if you could provide us the evidence of shipping documents and the photos of the goods for our further comments on the captioned matter.

33. The domestic industry was requested to provide evidence showing the export by Thai Bridgestone Co., Ltd. However they showed their inability to provide the same stating that they are not in possession of the relevant information.

34. No other producer/exporter has responded from Thailand.

Examination by Authority

35. Under section 9A (1) (c) normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

36. Applicants claimed that efforts were made to obtain information about the prices of subject product prevailing in the domestic market in Thailand. However, no reasonable, authentic

and accurate information could be obtained about the actual transaction-selling price of subject product (between a producer and wholesaler dealer/distributor) in their domestic market. None of the producers in Thailand except aforesaid have responded to the Authority, or any other information is made available to the Authority with regard to costs or prices in Thailand

37. Designated Authority notes that none of the producer and exporters from Thailand has cooperated in the present investigation. Under such circumstances, Designated Authority can not determine normal value in accordance to Section 9A(1)(c)(i), which requires sufficient information with regard to price of the product in the domestic market in the ordinary course of trade. Also the Authority cannot determine normal value in accordance with section 9A(1)(c)(ii)(a) which requires sufficient information on exports to third country. Under the circumstances, the Authority has determined normal value in Thailand on the basis of estimates of constructed cost of production, duly adjusted to include a profit margin.

CHINA PR

Claims of Applicants

38. Applicants claimed China should be treated as a non-market economy. Applicants suggested consideration of Sri Lanka as a surrogate country. After preliminary findings, petitioners pointed out that

- (a) they found that Sri Lankan company produced and sold different types of product, the calculation were not based upon all types/size of tyre produced and sold.
- (b) The calculation provided was only in respect of tyres and did not include tubes & flaps.
- (c) The information was based on conservative provisional accounts and the accounts were not audited till that point of time.
- (d) The information was based only on 2004-05, whereas the POI is April 2004-June 2005.

In view of the above the petitioner revised their claim of normal value on the basis of Sri Lanka to US\$135.58 compared to US\$94.20 claimed earlier.

39. The domestic industry made following arguments also -

- (a) There is no timely response from China. The exporter from China has taken 4-5 months delay in filing grossly and deficient information. The delayed response should be rejected.
- (b) Normal value determined at the time of Preliminary findings contains errors and need rectification.

- (c) Prices of natural rubber have steeply increased after POI and Indian producers had no option but to increase their price. Now the earlier benchmark recommended is acting as a major deterrent in the price increases by Indian producers.
- (d) Due to delayed response by M/s. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. China, the Authority should not accept their response. In any event they cannot be granted market economy status on the grounds of ownership and state interference by the Government of China in the prices of inputs as also the product itself.
- (e) There was an error in calculating the normal value on the basis of cost or price in Sri Lanka and therefore Designated Authority should review the normal value appropriately. The normal value assessed is grossly on lower side.

The claim of the exporter and other interested parties

40. a) Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. (SJTCL) submitted that the delay on account of filing their submission was due to the reason that they came to know about the initiation at quite a later stage. The company made the option for stating the same and to save itself from the stigma and for contributing in the investigation. However once they decided to participate in the investigation, they have provided full information and were willing to on the spot verification. In view of this, they claimed that they should be granted market economic treatment and individual treatment in terms of para 1-6 of the Annexure of Anti-dumping Rules.
- b) SJTCL further requested that since they have furnished all information, the Designated Authority should fix positive or negative dumping margin for them. The Designated Authority should look into the issue of quality and must make due adjustment for the quality differences for which necessary information has already made available on record with the Designated Authority
- c) It is submitted SJTCL once again reiterates its averments and submissions as true. It is also submitted that the exporter (SJTCL) company is a private limited company free from any state control or interference and operates on the basis of market economy principles.
- d) It has been argued by the petitioners that the cost on account of raw material constitute a major portion of cost of production of tyres. It is submitted that while the same could be true in the case of domestic industry, as they are producing specialty tyres which are over engineered and are beefed up with extra natural rubber to make them more endurable and performance oriented. But the same is not true in the case of China where producer/exporter are producing and exporting tyres made up of lower grade material in order to cut the cost down. The tyres exported by the Chinese producers in general and SJTCL in particular is comparable to old used or retreaded tyre and are used for tractor trolleys etc where performance is not a critical factor.

- e) Indian tyre companies do not use reclaimed rubber in their production of tyres while Chinese heavily uses the same in production of its tyres which further allows them to reduce their prices.
- f) Allegations that Chinese producers are not free to produce rubber are totally baseless, false and devoid of any merits.
- g) The petitioners have alleged that the determination of normal value at the time of preliminary findings was erroneous as it contains some errors but have chosen to conceal what kind of errors they have been referring to.
- h) Data concerning Normal Value as submitted by the petitioner have been interpolated in order to inflate dumping margin of imports from China PR and Thailand. It is submitted that as per the Indian practices duty can be imposed either on dumping margin or injury margin which ever is lower. In view of above it is submitted that the cost of production of the petitioners is much higher due to difference of tyres composition and manufacturing process. Further they incur huge expenses on overheads like administrative, selling and general expenses which further increases their production cost. However, the same is not true for China as they operate on the basis of least cost and do not incur such establishment of distribution network which decreases their cost for the product under consideration.

Comments by associations of users and importers

41. Responding associations have advanced arguments disputing treatment of Sri Lanka as an appropriate surrogate country for the purpose of normal value. They have not provided any material evidence against the applicant's request to accord Non Market Economy treatment to China. It is claimed by the Association that Sri Lanka cannot be treated as appropriate surrogate country for the reasons that there is absence of enough competition in Sri Lankan market and Sri Lankan producer is related to one of the Indian producers. There is a difference in tyres supplied by the domestic industry to OEMs and retail segments. The tyres supplied to OEMs are not comparable to tyres imported from China. It is further claimed that cost of domestic industry in OEM segment need to be taken out while using the data for construction of normal value in case of Thailand.
42. The Authority notes that except Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd., (here in after also referred as Jinyu Tyre) none of the Chinese producers have responded to the Authority. Except Jinyu Tyre, none of the Chinese producers have claimed that they should not be granted market economy status, nor filed their responses in the prescribed questionnaires. Jinyu Tyre claimed that the Company should be granted market economy status. Jinyu Tyre filed its first response on 21st June, 2006, which was grossly deficient. Further, it was found that the response filed was without any appendices forming part of the questionnaire and it was stated that the same were being filed separately. Additional

information was provided on 21st July, 2006, which was also incomplete. Even though the response was significantly after the time limits, the Authority considered it appropriate to examine the same. Examination of the response showed that the same is inadequate and insufficient to allow market economy treatment. Subsequent to the notification of the preliminary finding Jinyu Tyres filed the response claiming that Market economy status may be granted to them. The Authority decided to carry on the spot verification of Jinyu Tyres including their claim the granting of market economy status.

VERIFICATION OF JINYU TYRES

Market economy treatment (MET) questionnaire

43. a) It was explained by the exporter that Shandong Jinyu Tyre Factory was established on ****. At the time of starting of Factory the name was Dong Ying Jinyu Tyre Factory.

b) During the verification visit in order to ascertain the nature of Exporter Company, the Authority called for various records such as source of paid up capital, how the machines were acquired and evidence thereof and evidence of change in structure of the company, if any from time since its incorporation. The company was also asked to provide fixed assets register and other financial documents. No documentary evidence showing the receipt of the money in the accounts of the company on account of capital contribution could be furnished. On the source of capital contribution, no evidence showing the terms and conditions and actual flow of money could be provided. The exporter was asked to clarify how the machines etc. were acquired by them along with documentary evidence. However, no documentary evidence about the acquisition of machines, the procedure followed for acquisition and whether they were acquired at the fair market price could be furnished by them. The company admitted that the name of the company was changed from Dong Ying Jinyu Tyre Factory to Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. and also the company type from collective enterprise to Limited Liability Company. They were asked to clarify the difference between the collective enterprise and Limited Liability Company which neither they could clarify conceptually nor any documentary evidence could be provided. It was also not clarified under what circumstances the type of company was changed and the purpose of changing the company type.

c) The company was also asked to submit books of accounts, financial accounts, balance sheet etc from **** onwards on which they showed their inability to provide the same and therefore the acquisition of fixed assets and procedure followed could not be verified.

d) The year **** capital structure shows that Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. workers union held a paid up capital of **** million RMB which is **** of the paid up capital of **** million RMB. As per the exporter

questionnaire it was claimed to be a private limited company whereas during verification the company provided a list of **** shareholders which are all individual shareholders. However, no documentary evidence and procedure followed including the valuation of shares could be provided by the company. The sources of funds also could not be disclosed. The company was also asked to provide any other government record such as income tax assessment record, VAT return record or any other approval sought from the government which could show the capital structure, type of company, shareholding pattern etc but the company could not provide the same to the satisfaction of the Authority. The company was also asked to furnish its company ID number with Chinese Custom Authorities, which was not furnished. The domestic industry has provided a statement showing export of product under consideration from China to India according to which M/s. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. continues to be collective owned enterprise even in ****. To verify this custom ID number was called from the company which they could not provide. However they denied that they are now collective owned enterprise and stated that as per the business license they are company with limited liability.

e) The Authority notes that the structure of the company, the shareholding pattern, sources of funds of the shareholders, the acquisition of assets by the company, the procedure followed thereupon, whether the acquisition price reflect the market price etc could not be substantiated with documentary evidence during verification visit.

Related party transactions

f.) During the verification visit it was also observed by the Authority that the exporter company has some undisclosed related party transaction with regard to procurement of raw materials. Since, the related party transaction could not be disclosed in the exporters response the reasonableness of the transaction could not be verified. The company was also asked to give the transaction details with such related parties and also the ledger accounts of such related parties, which was not provided.

Sales

g) The company has claimed that they are exporting bias tyres of grade-3 to India and other Asian countries whereas their domestic sales and export to USA is of grade-1. However on perusal of the domestic invoices as well as the export invoices to India and other Asian countries, it was found that the grade is not mentioned and therefore the claim of the exporter with regard to different grade exported to India vis-à-vis domestic market and exports to USA could not be established. This claim of the exporter is therefore not supported with evidence. The company has

claimed that quality of product exported to India is of inferior grade. The company was requested to provide the plant records showing the consumption of raw material for the grades exported to India and the grades sold in the domestic market but no such record were made available. Therefore, it could not be established that grade-1 and grade-3 as claimed by the company are different products. It was also observed that during the POI the prices of the product have almost remained constant whereas according to the exporter's questionnaire response, the prices are charged according to the fluctuation in the cost of production. However, nothing could be substantiated in the regard whereas there were fluctuations in the raw material prices. This shows that the prices charged are not in accordance with the cost production and may not reflect the cost. The only explanation given by the company was whenever there is a change in the raw material price they change raw material mix in such a way that they always make profit. Catalogue of the company shows that these are standard products and therefore in the common parlance there cannot be a variation in the raw material consumption pattern. However, the company maintained that they are doing it but could not substantiate this with documents. The company was also asked to provide the copies of shipping bills of exports which the company claimed that they do not have. However, they provided the copy of invoices of exports to India and to other Asian countries.

Accounting issues

h) Company was asked to provide the complete set of their annual accounts showing the Directors' Report and various schedules to the annual accounts along with cash flow statement. However, the company maintained that whatever was available with them they had already provided in the exporters response. On perusal of the annual accounts, it was pointed out that it shows the total business receipts, total business expenses and profits without any break-up of the expenses into its various components such as raw material consumption, labours, utility, factory overheads selling expenses etc. The company could not provide any detail. Therefore the allocation of expenses of various activities could not be verified in the absence of such break-up and revealing of new activities which were not disclosed prior to the verification visit. Up to date fixed assets register was also not provided. The company was asked to clarify about the appointment of auditors and they stated that they are appointed by the management. However, they could not provide any minutes of the board meeting in the record. On perusal of the Chinese company law it was pointed out that the auditors need to be appointed by the shareholders. However, it was replied that they are not aware of any such provision and it could be appointed by the shareholders as well. No satisfactory answer along with documentary evidence was given in this regard. The exporter's questionnaire specifically requires that the position of the managerial persons prior to their current position need to be disclosed. However the same is not provided in the response and was also not provided during the verification. Even the list of Directors was not provided during the verification. The company was asked to elaborate this

transaction which they could not. The terms and amount appearing under the heads indivisible assets, land utilisation rights appearing in the balance sheet were not explained.

i) The company was asked to clarify whether the exchange rate is fixed or varies according to the market situation. The company clarified that throughout the POI it was equal to 1 US to 8.28 RMB and was not subject to fluctuation indicating the market signals.

VERIFICATION OF COSTING INFORMATION APPENDIX-5 to 9

j) The company could not furnish basic financial records. Even the back up paper to arrive at the figures shown in the appendix could not be provided. In the absence of these back up papers /working sheets, it was not possible to verify the claims made in the appendix. When asked whether the information given in the appendix flows from the books of accounts, it was clarified that they have estimated the per unit amount and shown in the appendix.

44. Subsequent to the verification the verification report was sent to the exporter for their comments. They submitted some additional information on their domestic sales, quotation of freight, statement of cost of tyres sold in domestic market, USA and India. However none of this information submitted by them could be verified, as they did not submit these before and during the verification visit.

Examination by the Authority

45. The exporter was given advanced notice about conducting the on the spot verification. The exporter was advised to keep ready and made available the books of accounts, documents working sheets etc during verification. As provided in the Rules, the main purpose of on the spot verification is to verify information provided or to obtain further details. As detailed above, although the exporter has made claims on granting of Market economy status, quality, sales price in the domestic market, reflection of market price of inputs etc. But none of the claim could be substantiated during the verification visit. It was specifically observed that the structure of the company, the shareholding pattern, sources of funds of the shareholders, acquisition of assets by the company, the procedure followed thereupon, whether the acquisition price reflect the market price etc could not be substantiated with documentary evidence and therefore the Authority is not in a position to grant market economy status. Accordingly the Authority has proceeded treating the exporter operating under non market economy condition. Under the circumstances, the Authority is not in a position to apply para 8 of Annexure 1 to the Rules to any of the Chinese companies and has to proceed in accordance with para 7 of Annexure-I to the Rules

46. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis: -

- a) on the basis of the price in a market economy third country, or
- b) the constructed value in a market economy third country, or
- c) the price from such a third country to other countries, including India.
- d) If the normal value cannot be determined on the basis of the alternatives mentioned above, the Designated Authority may determine the normal value on any other reasonable basis including the price actually paid or payable in India for the like product duly adjusted to include reasonable profit margin.

47. At the time of notifying the preliminary findings applicant's proposal for consideration of Sri Lanka as an appropriate surrogate country for determination of normal value in China was examined by the Authority. It was found that there was not sufficient evidence to reject the claim of applicants that Sri Lanka is an appropriate third country to determine the normal value in case of China. In fact, it was noted that the consideration of price payable in India, duly adjusted to include a profit margin would have resulted in determination of higher normal value. Having considered the evidence on record, the Authority considered it appropriate to determine normal value for the purpose of preliminary findings on the basis of constructed value in Sri Lanka as submitted by applicant (which was lowest among the alternatives given). Subsequent to the preliminary findings the applicant revised their normal value claim as earlier explained.

48. The reason for adopting Sri Lanka as a surrogate country in the preliminary findings was that the normal value claimed was lower when compared to Indian prices/ cost. In view of the upward revision of the normal value based on Sri Lanka as surrogate country and non availability of sufficient substantiated information during the verification visit at the exporter's premises, the Authority examined the selection of appropriate surrogate country. On the basis of further information submitted by the applicant on Sri Lanka, Sri Lanka was not considered an appropriate surrogate country due to the following reasons.

- (a) The Sri Lankan company (Ceat Kelani) has very low level of domestic sales. Production and sale volume of the company is about 71000 no of tyres in POI.
- (b) Petitioner has significantly revised their claim of normal value to about \$ **** as against about \$ **** determined by Authority (against \$ **** claimed by Domestic Industry) earlier per TTF i.e. set of tyre, tube and flap. Even if the claim of the petitioner is justified, it would be seen that selection of Sri Lanka would be more disadvantageous to the Chinese producers as compared to India.
- (c) The interested parties have objected to consideration of Sri Lanka as an appropriate market economy third country as Ceat Kelani who has provided data from Sri Lanka is related to petitioner i.e. Ceat Limited..

- (d) There is only one producer in Sri Lanka. Scale of that company is also quite small (71000 no) as compared to Indian Producers and is below 1% of Indian Production. This may also be small in comparison to Chinese producers (the exact production is not known, but it should be substantial as the single producer who responded has capacity to produce 1 million tyre).
49. Thailand does not appear appropriate for the following reasons:—
- (a) Thai producers have not responded to the Authority. Thus, Normal value in case of Thailand in any case is based on constructed cost of production.
- (b) Imports from Thailand are significantly lower than imports from China.
50. Accordingly the Authority sent a letter dated 19th January, 2007 to all the interested parties and expressed his opinion that the cost of production in India duly adjusted would be most appropriate basis for determination of normal value of subject goods in China. In terms of para 7 of Annexure 1 to the ADD Rules all interested parties were requested to make their comments for the consideration of the Authority.
51. In response to the letter the interested parties have replied as under :
- a) Cost/pricing of tyres by the Indian manufactures is attributed to opportunistic pricing and not based on the actual increases in the input or other manufacturing cost. Therefore the normal value based on prices payable in India is not correct. Since duty for tyre, tube and flap was separate in provisional finding how the applicant can claim that cost of tube and flap was left out.
- b) The claim of revision of normal value at the fag end of the investigation is not justified and the same is to mislead the Authority to achieve its objective by wrongful means. Since the data relating to 2004-05 must have been audited before submitting it to the Authority it raises serious doubt on the reliability of data.
- c) Ceat Kelani is a related company of one of the domestic Industry, since domestic industry had provided data on the basis of tyre, tube and flap it cannot be believed that Ceat Kelani has left cost of tube and flap. It is highly improper on the part of the Authority that they have not pointed out such discrepancy during the provisional finding and the case was initiated on the basis of unauthentic and unverified information without having a copy of certification.

Examination by the Authority

52. In the preliminary finding, the reason for adopting normal value on the basis of Sri Lanka as a surrogate country was that it was lower than the Indian price/ cost. The petitioner has revised the value admitting that

there was an error. As aforesaid, in case the normal value is adopted on the revised claim normal value it shall be to the disadvantage of the Chinese producers and shall result into higher dumping margin. While disputing the claims of the domestic industry, none of the interested parties have, however, suggested an appropriate surrogate third country. The Authority considers it appropriate to determine normal value in China PR on the basis of Cost of production in India duly adjusted to include a profit margin.

E. EXPORT PRICE

53. Association of users and importers argued that the Authority should not have accepted the import information as per IBIS for the quarter April 05-June 05. It was claimed that the imports under the heading 4012090 include certain other tyres also which should also be excluded.

54. The applicants in their application stated that the transaction wise imports information provided by DGCI&S was not available for the period April 05 to June 05 at the time of application and therefore, the applicants had relied upon IBIS data for this period. Applicants further argued that the Authority had in a number of investigations considered information provided by IBIS for the purpose of determination of volume and value of imported material, nor any reason have been advanced by the responding parties why the information provided by IBIS may be incorrect and unreliable. The Authority notes that when DGCI&S data is not available for the complete period, it does not appear inappropriate to use IBIS information.

55. Subsequent to initiation, imports information on transaction by transaction basis was made available by the DGCI&S for the complete period of investigation. Accordingly, the import volumes and export prices have been determined on this basis. The Authority notes that barring response by Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd., there is no cooperation from any of the subject exporters, nor any other information has been filed before the Authority in this regard. In response to disclosure statement, the domestic industry has argued that the export prices taken into account by the Authority is different from the transaction wise data gathered by them and information culled out by them from market intelligence. The comments have been examined and it is noted that the DGCI&S data does not give information with regards to exporters name in their transaction wise information. It is further confirmed that export price of the cooperating exporter has been taken into account after verifying their export details by the Authority.

CIF export price in respect of co-operating exporter Shangdong Jinyu Tyre company is determined on the basis of export data submitted by them. Export price in case of non-cooperating exporters from China PR has been determined by deducting volume and value of exports made by the cooperating exporter from the transaction wise data for the POI

received from DGCI&S. The export prices so determined are proposed to be adjusted for ocean freight and marine insurance to determine ex-factory export price of cooperating exporter. For non cooperating exporters, net export price has been arrived after deducting the expenses on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses, bank charges, indirect taxes and credit cost as claimed by the petitioner. After adjustments, the net export price is determined at US\$**** per TTF in respect of co-operating exporter and at US\$**** per TTF in respect of non co-operating exporter from China PR.

F. DUMPING MARGIN

56. Authority notes that the comparison of normal value and export price made must be a fair comparison at the same level of trade. Authority has determined both the normal value and export price at ex-factory level. It is noted that the product is imported as set of tyre, tube & flap (TTF), or as a set of tyre & tube (TT), or only as tyre. The Authority has determined separate normal value and export price in respect of different product combinations in which imports have been made and compared the same. Both the normal value and export price pertains to the same period. There are no known differences in the conditions and terms of sale. Both the prices are free of taxes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and export price determined as detailed above, dumping margin has been determined, which comes as under:-

	Dumping margin %
China	
Jinyu	233%
Others	294%
Thailand	291%

G. INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

Cumulative Assessment

57. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that (a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is more than three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of

the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

58. The Authority considered whether it would be appropriate to cumulatively assess injury to the domestic industry. Authority, in view of the reasons mentioned below, holds that it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from China and Thailand:-

- i) The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed,
- ii) The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed,
- iii) Cumulative assessment is appropriate in view of the following factors :-
 - a) The goods involved are like articles and are competing in the same market;
 - b) The imported products are being sold through the comparable channel of distribution and to comparable category of customers;
 - c) Products from both the countries are undercutting the prices of the domestic industry in the market.
 - d) Imports from both the countries are increasing.

Assessment of demand

59. Authority has defined, for the purpose of the present investigation, demand or consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below:-

Source	2001-02	2002-03	2003-04	In Numbers	
				POI Actual	POI Annualized
Imports					
Imports (Subject Countries)	3,589	16,755	77,538	216,851	173,481
Imports (Other countries)	8	14,378	8,697	12,570	10,056
Sales of Domestic Industry	4,582,954	5,757,989	6,250,818	7,903,699	6,322,959
Sales of other Domestic producers	1,916,719	1,671,535	1,991,419	2,651,725	2,121,380
Total Demand	6,503,270	7,460,657	8,328,472	10,784,845	8,627,876

Trend	100.00	114.72	128.07	132.67	132.67
-------	--------	--------	--------	--------	--------

The Authority holds that the demand for the product shows an increasing positive trend.

60. In terms of Rule 11(2) and annexure referred therein a determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the affect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products.

While examining the volume of dumped imports, the Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regards to the effect of the dumped imports on prices, the Authority considered whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like products in India, or whether the effect of such imports was otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.

Import volumes and market share

61. The volume of dumped imports of subject product from subject countries and the share of the same in relation to market sales in India is given in the table below.

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
Imports						
From Subject Countries	Nos	3,589	16,755	77,538	216,851	173,481
From Other countries		8	14,378	8,697	12,570	10,056
Total Imports	Nos	3,597	31,133	86,235	229,421	183,537
Share of Imports from Subject Country in Total Imports	%	99.78	53.82	89.91	94.52	94.52
Total Demand In Domestic Market	Nos	6,503,270	7,460,657	8,328,472	10,784,845	8,627,876
Share in imports						
• Subject countries	%	99.78	53.82	89.91	94.52	94.52
• Other countries	%	0.22	46.18	10.09	5.48	5.48
Market Share in demand						

• Domestic Industry	%	70.47	77.18	75.05	73.29	73.29
• Other Indian Industry	%	29.47	22.40	23.91	24.59	24.59
• Total for Indian Industry	%	99.94	99.58	98.96	97.87	97.87
• Import from Subject Country	%	0.06	0.22	0.93	2.01	2.01
• Imports from other countries	%	0.00	0.19	0.10	0.12	0.12
Total	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00

The Authority notes that

- (a) imports from subject countries increased in absolute terms over the injury period
- (b) imports from subject countries increased in relation to imports into India
- (c) imports from subject countries increased in relation to total demand in India.

The Authority holds that the imports have shown significant increase during the injury period. The increase in absolute volume of imports resulted in increase in market share of dumped imports and decline in the market share of the domestic industry over the injury period.

The Authority concludes that the dumped imports show adverse volume effect.

Price effect of imports

62. Net sales realization of the domestic industry has been arrived at by considering selling price, excluding taxes & duties. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The trend of various prices is as given in the table below:-

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
CIF export price-Subject Countries	Rs./Set	2,414	1,758	1,720	1,990
Landed price of imports-Subject country	Rs./Set	3,145	2,291	2,067	2,366
Net Sales Realization	Rs./Set	****	****	****	****
Indexed	Trend	100.00	101.23	104.79	111.10
Price undercutting Subject Countries	Rs./Set	****	****	****	****
Undercutting	Range %				55 to 60
Non Injurious	Rs./Set				****

price					
Underselling	Rs./Set				****
Underselling	Range %				60 to 65

It is noted that

- a) CIF export price from subject countries showed declines over the base year i.e. 2001-02. Even though there was an increase in price during the POI as compared to preceding two years, the prices were below the levels of 2001-02. It is noted that the increase in prices in investigation period as compared to previous year is in line with the increase in prices by the domestic industry over the same period and is reflective of the increase in input costs. Further, throughout the injury period, the import prices were at very low levels.
- b) Landed price of imports from subject countries were significantly below the selling price and non injurious price of domestic industry, resulting in significant price undercutting and price underselling.
- c) Even though there was an increase in price during the POI as compared to preceding years, which is partially reflective of increases in the input prices, price undercutting continued to be significant.

The Authority holds that imports are preventing the price increases that would have otherwise occurred in the absence of imports.

Considering the above, the Authority concludes that the effect of dumped imports on the prices in the domestic market has been adverse.

Economic Parameters relating to the Domestic Industry

63. The applicants have claimed that dumping of subject product from subject countries became significant in the year 2003-04 and during the POI and comparison of different parameters with the base year alone i.e. 2001-02 with the POI would neither be appropriate nor would reflect the actual impact of dumped imports on the domestic industry. Given significant surge in automobile production and consequent positive impact on the domestic industry, applicants claimed that certain parameters relating to the performance of the domestic industry showed improvements over this period. It is pointed out that increase in automobile production by one unit increases sales of the subject goods between 7 to 23 units. It was added by the domestic industry that it would be necessary to examine the performance of the domestic industry on year to year basis, having regard to the significant surge in demand of the product and low level of imports in the first two years.

64. The Authority has examined the contentions of all interested parties. Evaluation of all relevant economic factors to assess the situation of the industry in terms of actual and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of

capacity, factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments are discussed herein below.

Production, capacity and capacity utilization

65. Actual production, capacity and capacity utilization of the domestic industry over the years is shown in the table below. The Authority notes that the capacity for production of the subject goods can be utilized to produce other types of tyres also. Therefore, it would not be appropriate to determine capacity and capacity utilization considering only the product under consideration. The Authority has determined capacity and capacity utilization considering different types of tyres produced and sold by the domestic industry for which the capacity has been interchangeably used, having regard to the provisions of Annexure-II to the Rules.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
Plant Capacity (Nos)	13,713,639	15,255,648	16,988,208	23,967,866	19,174,293
Indexed	100.00	111.24	123.88	139.82	139.82
Production of all types of tyres (Nos)	10,710,055	13,405,333	14,867,149	20,497,771	16,398,217
Indexed	100.00	125.17	138.81	153.11	153.11
Plant utilization (%)	78.10	87.87	87.51	85.52	85.52
Indexed	100.00	112.51	112.06	109.51	109.51
Production of subject goods (Nos)	5,462,164	7,196,124	7,968,892	10,176,092	8,140,874
Indexed	100.00	131.74	145.89	149.04	149.04
Domestic Sales (Nos)	4,582,954	5,757,989	6,250,818	7,903,699	6,322,959
Indexed	100.00	125.64	136.39	137.97	137.97
Inventories	213,310	203,029	318,700	343,584	343,584
Index	100.00	95.18	149.41	161.07	161.07

The Authority note that;

a) Plant Capacity, production of all goods, production of subject goods sale of subject goods in domestic market and plant utilization showed a growth of 39.82%, 53.11%, 49.04%, 37.97% and 9.51% respectively over the period.

b) Production and sale of domestic industry increased over the injury period. However, capacity utilization declined after increasing.

c) Even though production and sales in POI shows increase as compared to preceding year, but inventories increased and capacity utilization declined. It is also noted that the domestic industry lost market share in the investigation period.

d) Increase in production of other types of tyres is more than increase in production of the subject goods. This shows that the domestic industry utilized the capacities more for non subject goods.

Profits and return on investment

66. Profits and return on investment of the domestic industry over the years are given below.

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
Selling Price	Rs./Set	****	****	****	****	****
Indexed	Trend	100.00	101.19	105.15	110.96	110.96
Cost of Production	Rs./Set	****	****	****	****	****
Indexed	Trend	100.00	99.53	105.63	111.33	111.33
Profit/loss per unit	Rs./Set	****	****	****	****	****
Indexed	Trend	100.00	140.88	93.78	102.13	102.13
Return on capital employed	%	****	****	****	****	****
Indexed	Index	100	99	70	75	75

It is observed that:-

- Selling price and cost of production of the domestic industry increased over the injury period. Whereas the domestic industry was able to increase its prices in 2002-03 and increase its profits by reducing its conversion & fixed costs, the domestic industry was faced with a situation where the cost increases were significantly more than the price increases thereafter.
- Whereas profitability of the domestic industry improved between 2001-02 and 2002-03, the same declined thereafter. Profitability per unit of the domestic industry in the investigation period were significantly below 2002-03 levels, in spite of significant increase in the sales volumes.
- Return on capital employed declined in POI as compared to the base year and 2002-03. Thus, in spite of higher production and sales volumes there was a declining trend in returns to the domestic industry.

d) The domestic industry has been able to increase its profits by reducing its conversion and fixed costs per unit of tyres. It is noted that the increase in selling prices throughout the injury period were less than increase in input costs. It is also noted that had the domestic industry not succeeded in reducing its conversion and fixed cost incidence per unit of tyres, it would have been forced in a situation of financial losses in the investigation period.

e) In their comments to disclosure statement, the domestic industry pointed out that the Authority has not disclosed the fact that the contribution margin of the domestic industry continually declined. The Authority examined the information provided by the domestic industry and noted that while raw material costs increased on account of raw materials prices increasing, the domestic industry was able to substantially curtail the incidence of conversion costs per unit of production, as would be seen from the table below. It has been noted that the contribution margin, (difference between selling price and costs (raw material and utilities) declined significantly.

Figures are in Rs/Set

Domestic Industry	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Selling price	Rs./set	****	****	****	****
Trend	Index	100	101	105	111
Raw materials	Rs./set	****	****	****	****
Trend	Index	100	106	118	129
Utility	Rs./set	****	****	****	****
Trend	Index	100	109	112	110
Contribution	Rs./set	****	****	****	****
Trend	Index	100	93	85	84
Increase over Base year	Rs./set		-152	-312	-322

There is a continued decline in the contribution of domestic industry over the injury period. The decline in the contribution per set has been Rs **** over base year. From the above table, it is noted that profit of the domestic industry has marginally improved over the base year mainly due to higher sales volumes and ability of the domestic industry to restrict the incidence of conversion and fixed costs incidence per unit of tyres.

Changes in market share of Indian Industry

67. Market share of Indian industry and in that of imports is given in the table below:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Domestic Industry	%	70.47	77.18	75.05	73.29
Other Indian Industry	%	29.47	22.40	23.91	24.59
Indian producers	%	99.94	99.58	98.96	97.87
Subject Countries	%	0.06	0.22	0.93	2.01
Other Countries	%	0.00	0.19	0.10	0.12
Total	%	100.00	100.00	100.00	100.00

It is observed from the above that:

- The share of domestic industry after marginal improvement declined steadily during the rest of injury period. The share of Indian industry declined.
- The market share of dumped imports which was negligible at 0.06% during the period 2001-02 reached to a significant level of 2.03% by the POI.
- There is a co-relation between increase in share of dumped imports and loss of market share by domestic industry.

Employment

68. Employment situation of the domestic industry is given in the table given below:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
No. of employees	Nos	15,521	17,839	18,232	18,274	18,274
Indexed	Indexed	100	115	117	118	118

It is observed that:

- The number of employees with the domestic industry showed increases over the injury period.
- The increase in number of employees is the result of increase in capacity and production.

Wages

69. Wages and impact of the same on cost of production are given in the table below. Even when wage paid per unit of production has

declined, profits have declined. Further, wages paid per employee have declined after increasing upto 2003-04

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
Wages	Rs. Lacs	8,915.88	12,946.30	14,125.69	17,097.31	13,677.85
Indexed	Index	100	145	158	153	153
Wages Per unit of Production	Rs./Set					
		170	187	184	177	177
Indexed	Index	100	110	109	104	104

It is observed that wages increased over the injury period.

The above shows that faced with increasing costs and declining profits, the domestic industry is making efforts to restrain all increases. Whereas the wages paid per employee should have increased, the same has declined in the POI.

Productivity

70. Productivity of the domestic industry over the periods is given in the table below.

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
No. of employees	Nos	15,521	17,839	18,232	18,274	18,274
Indexed	Index	100	115	117	118	118
Production	Nos	5,462,164	7,196,124	7,968,892	10,176,092	8,140,874
Indexed	Index	100.00	131.74	145.89	149.04	149.04
Production per employee	Nos	352	403	437	445	445
Indexed	Index	100	115	124	127	127

The Authority notes that productivity of the domestic industry shows improvements. However, in spite of increase in productivity, the profits of the domestic industry have declined after showing improvements.

71. Factors affecting domestic prices

The imports from subject countries are resulting in significant price undercutting and price underselling in the Indian market. The

landed price of imports is significantly below the selling price of the domestic industry. The situation in this respect is given in the table below:

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Price Undercutting					
• China	Range %	35 to 45	50 to 60	55 to 65	55 to 65
• Thailand	Range %		50 to 60	55 to 65	55 to 65
• Subject Countries	Range %	35 to 45	50 to 60	55 to 65	55 to 65

- 72 The Authority determined the extent of price underselling by comparing the non injurious price with the landed price of imports. The comparison shows as follows:-

Range during POI	
China	55 to 65%
Thailand	55 to 65%
Subject Countries	55 to 65%

It is noted that

- Landed price of imports from China and Thailand has been significantly below the selling price of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.
- Landed price of imports from China and Thailand has been significantly below the non injurious price of the domestic industry, resulting in significant price underselling.

The Authority notes that the domestic industry has not been able to increase its prices in proportion to the increase in the input prices, as would be seen from the table below:

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Raw materials cost	****	****	****	****
Index	100	106	118	129
Selling price	****	****	****	****
Index	100	101	105	111
Increase over base year				
Raw materials cost		192	559	890
Selling price		64	279	594

Figures are Rs/Set

With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Rules provide that the

Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred, to a significant degree. The Authority notes that in the present case, imports are preventing price increases as would have occurred because of increase in input prices.

Inventories

73 Inventories of finished goods with the domestic industry have shown the following trend.

	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Inventories (Nos)	213,309	203,028	318,699	343,584
Indexed	100	95	149	161

It is noted that Inventories with the domestic industry increased over the period. This increase in inventories is in spite of decline in capacity utilization. It is also seen that increase in inventories started in 2003-04 with increase in imports. It is seen that the increase in inventories is indeed less than increase in imports. Whereas the inventories increased by 130275 nos. over the injury period, the imports increased by 169892 nos. over the same period. In other words, in the absence of imports, the domestic industry would have been able to rather reduce the inventories. It should also be noted that substantial production is sold through dealers. Therefore, production can not be against orders. Substantial part of the production has to be against anticipated sales.

Ability to raise investments

74 The domestic industry claimed that should the dumping continue persistently, they would have difficulty in raising capital, which is quite important particularly in a situation where the constituents of the domestic industry are planning significant investments.

Cash flow

75 Cash flow and cash profit situation of the domestic industry showed the following trend:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI	POI Annualized
Cash Profit	Rs.Lacs	*****	*****	*****	*****	*****
Index	Trend	100.00	164.29	131.12	135.38	135.38
Cash profit per unit of	Rs./Set	*****	*****	*****	*****	*****

sales						
Indexed	Trend	100.00	130.76	96.14	98.13	98.13

Cash profits per unit of sales increased upto 2002-03 and thereafter declined even below the levels achieved in 2001-02. Resultantly, total cash profits increased in 2002-03 and declined thereafter.

Growth

76 Growth over the year of domestic industry considering various parameters were analyzed and the trends were found as under:

Source	Unit	2002-03	2003-04	POI Annualized
Growth in Sales	%	25.64	8.56	1.15
Growth in Production	%	31.74	10.74	2.16
Growth in capacity Utilisation	%	9.77	(0.36)	(4.08)
Growth in Selling Price	%	1.19	3.92	5.52
Growth in Cost of Production	%	(0.47)	6.12	5.40
Growth in Production	%	31.74	10.74	2.16
Growth in Profit (PBT)	%	40.88	(33.43)	8.90
Growth in cash Profit	%	64.29	(20.19)	3.25
Growth in Return on capital employed	%	(0.23)	(4.68)	0.83

Even though volume parameters such as production & sales volumes show positive growth, it is found that the rate of growth is declining.

Arguments against injury to the domestic industry

77 Following arguments have been advanced by the responding associations of users, Chinese exporter and importers stating that the domestic industry has not suffered injury

- a) It has been submitted that the domestic industry has not suffered any material injury. The domestic industry showed improvements in almost all the parameters. The imports from subject countries remained very insignificant over the years. There is no injury to the domestic industry as

their production, capacity utilization, sales, return on investment, selling price, market share, employment, wages and profit have increased.

- b) Applicant deliberately took 15 months POI in which two peak seasons are involved. It was submitted by the domestic industry itself that the period between February and June marks maximum consumption of the product. Situation during such season are factored in and then annualized to give totally incorrect projections.
- c) Differentiation needs to be done for products for OEM segment and after market as the product for OEM segment is totally different from that to the after market.
- d) Tyre imported from subject countries cannot be compared to domestic products in terms of quality as the imported products are inferior in quality and they are in no way competing with the domestic product. Hence, there is no causal link between injury suffered by the industry, if any, and imports from subject countries. The product under consideration is available in market in different weights and models. The price of the domestic industry within same size group differs significantly in the range of 32-50 percent. Since the imported tyres are of low grades, their comparison with high grade tyres will result in misleading comparison.
- e) There is cut throat competition between domestic producers.
- f) Radialization in other countries provided good export opportunities for the domestic producers of bias tyres. The growth in the output of the Tyre industry has not kept pace with the growth in the bus and truck segment. The growth rate of tyre export has been sustained in 2004-05 and is increasing. Growth in exports is reducing the availability of tyres for domestic OEM and replacement markets.
- g) Tyre manufacturers have resorted to five price increases with Tata Motors in the last two years. Large portion of the increase can be attributed to opportunistic pricing. Further M/s TATA Motors faced erratic supplies by domestic industry. Although the domestic industry has claimed significant price undercutting, yet the same has not affected the selling price of the domestic industry. In spite of price undercutting, the domestic industry has been able to raise its price.
- h) Truck tyre price has an impact on the movement of goods in the Country. As truck transport is the major transport system, it is important to keep it cheaper to keep the price of the goods affordable. After diesel, cost of tyres constitutes the major cost for transporters.
- i) The applicants claimed confidentiality to all the information without any reasoning. Applicant has not provided the indexed version of costing information. Certain critical questions like purchase policy, sales policy, store accountings, quality control and testing conveniently neglected by domestic industry in their application.

2954 GI/07-14

- j) No threat of material injury visible to the Indian producers.
- k) There is no discriminatory price for India as Foreign Producers are exporting at the same price to other third countries.
- l) Segment results of Apollo is in clear contradiction with the proforma IV-A. The Apollo annual report for 2004-05 mentioned decline in demand for the product whereas proforma showed increase in demand.
- m) There is no price suppression for Apollo. Cost increases are passed on to the customers by the domestic industry.
- n) The domestic industry has not provided their injury information in respect of companies who have provided their data after their initiation.
- o) Annual reports /Directors Reports of the companies are being considered to be the authentic evidences and material on record regarding the operations of the companies before the Authority for the purposes of the investigation. Final findings of the Authority, without considering or selectively considering the contents of the authentic material on record (Annual Reports) have been considered as erroneous by the Honorable CESTAT its judgment. Andhra Petrochemicals Ltd. Vs. Designated Authority, 2006 (201) E.L.T. 481 (Tri. Del.). Important facts emanating from the extracts of the annual reports cannot be overlooked and the impact of such facts is required to be comprehended by the Authority in its Findings. Apollo Tyres Ltd. JK Tyres, Ceat Tyres, and Birla Tyres in their respective annual reports have shown excellent results in the segment (Truck/Bus Tyres).
- p) The domestic industry has suffered no injury, leave alone material injury and there is no need for imposition of anti-dumping duty and the present investigation should be terminated with immediate effect.
- q) The Authority should take in to account the data of total industry for calculating non injurious price.
- r) It is admitted by the domestic industry that loss in revenue on account of sales to the OEM is compensated by replacement market only. Lower realization from OEM is considered by them as investment or advertisement cost. Therefore it is clear by their self admission that the overall lower profitability of the domestic industry is primarily on account of the fact that the prices charged from OEM are lower than the prices charged from replacement market sales. On the other hand, Authority notes that domestic industry has argued that the OEM and replacement market need not be segmented and quoted WTO panel report in this regard. Domestic Industry has also stated that no separate accounting records/cost records are maintained for replacement market and OEM separately and therefore the domestic industry has stated that they are not in a position to prepare separate information with regards to cost of

production, selling price and profit/loss with regards to OEM and replacement market.

- s) The imports are just 2% of the total production of the subject goods of domestic industry and around 1% of the production of the Indian producers. This minuscule imports cannot cause material injury to the domestic industry in a situation where domestic and imported tyres have different customer base altogether.
- t) The selling price of the domestic industry is similar to the non-injurious price determined by the Designated Authority for the period of investigation. If the Domestic industry is able to realize the non-injurious price how it can be concluded that the domestic industry is injured by the alleged dumped imports during the period of investigation.
- u) The behavior of the landed value of the imports from the subject countries and selling price of the domestic industry does not show any correlation. Hence, it cannot be concluded that the imports of the subject goods from subject countries are dictating the prices of the domestic industry. The two prices are behaving independently.
- v) The domestic industry has provided incorrect production data with regard to the production of all types of tyres produced by them. In fact the capacity utilization has improved significantly during POI.
- w) The excellent growth during post investigation period of the Indian producers including the domestic industry would not have been possible without the increase in the prices by them and this clearly establish that there exists no impact of imports on the domestic prices. Both are moving independently. Moreover, there has been a significant change since the beginning of first quarter of F.Y. (05-06) (part of POI).

Examination by the Authority

78 The Authority examined these submissions of the interested parties and notes that :-

- a) The petition was examined for accuracy and adequacy prior to initiation. The investigations were initiated only after such an examination which showed that the domestic industry has prima facie suffered injury.
- b) It is true that the imports are primarily taking place in the after market segment. However, this has not distorted the injury analysis. On the contrary, if the sales volumes of the domestic industry in the after market are considered, it, at best shows higher extent of injury suffered by domestic industry in terms of volume. The Authority determined price undercutting considering weighted average selling price in OEM and replacement market. If the price undercutting be determined considering replacement market only, the extent of price undercutting may increase.

- c) It has not been established that the quality of imported product and that of the domestic product are significantly different that the domestic product is not a like product to the imported product. Evidence shows that whereas sales of the domestic industry in the replacement market have declined, imports have increased. After preliminary findings, the Designated Authority examined in particular whether the quality of tyres sold by the responding Chinese exporter was inferior. The exporter could not substantiate from plant records that the product is of inferior quality. This has already been dealt with elsewhere.
- d) The POI considered is not inconsistent with the practices adopted by the Directorate to keep the POI as close to the date of initiation. In any case, inclusion of two seasons at best has shown lower extent of injury to the domestic industry.
- e) There is no significant difference either in the product or in the factory cost of production for OEM segment and after market segment as the product for OEM and replacement market is not different and is produced in the same production line.
- f) It is noted that existence of competition amongst the Indian producers does not mean no injury from dumped imports. It was found that in spite of internal competition, the domestic industry was able to improve between 2001-02 and 2002-03. Situation started deteriorating from 2003-04, when imports started hitting the market. The operational profitability deteriorated further in the POI when dumped imports increased.
- g) It is found that export volumes of the domestic industry have shown an increase. However, given that the capacity utilization of the domestic industry declined, in the absence of any evidence, it could not be established that domestic industry was not able to increase its production in spite of increase in demand (in fact, it is found that the imports are primarily in after market and entire OEM demand was met by the Indian Producers) or availability of the product in the market got reduced (inventories with the domestic industry have in fact increased).
- h) It is found that the domestic industry has increased its prices during the period of investigation. However, it is found that the profits of the domestic industry have declined in spite of increase in selling prices. The increase in the cost of production has been far higher than increase in selling prices. In other words, the domestic industry has not been able to increase its prices proportionate to the increase in materials costs on account of increase in input prices.
- i) The argument of erratic supplies has not been established with evidence. It is also found that the inventories increased over the injury period.
- j) The applicant have given justification for claiming confidentiality, which was examined by the Authority and it was found that the applicant has claimed confidentiality in accordance with the Rules.

- k) Even if the tyre companies have purchased the goods from the market, it is not established that these purchases were of the imported goods. The investigation has not shown that any of the constituents of the domestic industry have imported the subject goods during the investigation period.
- l) Injury to the domestic industry is required to be seen "for domestic industry as a whole" and not for individual companies. Analysis of data of domestic industry as a whole shows that the domestic industry has suffered injury from dumped imports. As provided under the rules and held by Hon'ble Supreme Court, injury to the domestic industry cannot be seen in isolation for individual companies forming part of the domestic industry. It is also noted that none of the interested parties have established that Apollo Tyres has not suffered injury.
- m) On the argument that the authority should take into account the data of total industry for calculating non injurious price, the Authority has already dealt the matter in detail under the heading "Domestic Industry". In view of insufficient co-operation from MRF Ltd. and Goodyear India Ltd, the Authority has used best available information and used the weighted average data of Apollo Tyres Ltd, J K Industries Ltd., Birla Tyres and Ceat Ltd for calculating non injurious price.
- n) No evidence is placed on record by any interested parties that imports are taking place in OEM market, which implies that imports are taking place in replacement market only. It is also admitted by the domestic industry that sales price to OEM is lower than the replacement market. However, cost of sales in replacement market is higher which is one of the reason for higher price in replacement market. However, in an anti dumping investigations, the Authority is required to examine the injury for the "product under consideration" and to the "domestic industry as a whole". Accordingly the present investigation is for the subject goods and for the domestic industry as a whole and not for one part, sector, or segment of the domestic industry. It is also not demonstrated by any interested party that imported goods cannot be used in OEM sector. In view of this the Authority has not segregated OEM and replacement market. The authority also notes that in the preliminary finding the OEM and replacement market was segregated for showing volume effect of imports as the argument of interested parties was that the imports are taking place in replacement market only.
- o) Investigation has shown that the imports have increased significantly in absolute terms as also relative to production/ consumption in India. Further, the rate of increase of import has also been significant not only over the injury period, but also within the investigation period. The import volumes are therefore not insignificant.
- p) The Authority notes that there is a difference between non-injurious price and net sales realization of the domestic industry.

- q) It would not be appropriate to see the landed value and selling price in isolation. Volume of import, landed price, selling price and cost of production are seen together. The investigation has shown that the landed price of imports declined in 2002-03 and 2003-04, leading to increase in import volumes. The decline in landed price of imports and already low landed price of imports were preventing the domestic industry from raising their prices to the extent of increase in the cost of production and the domestic industry was underselling the subject goods.
- r) Regarding incorrect data of production and capacity utilisation in preliminary findings, the Authority has now used verified data/capacity data from the annual accounts and other evidence of the domestic industry. The discrepancy in preliminary findings in this regard is now corrected which shows that capacity utilisation has declined after improvement.
- s) The Authority notes that post period of investigation developments are not relevant to the present investigations. The domestic industry argued that the volume of import in the post investigation period was significantly higher. The Authority, however, notes that consideration of any development in relation to post investigation period would require complete information with regard to various parameters, which would in itself lead to full investigation.

Conclusions on Injury

79 In view of the foregoing it is considered that there has been significant increase in the volume of dumped imports from the subject countries in absolute terms as also in relation to total imports and demand of the subject goods in India. It is also determined that the quantum of dumped imports of subject goods from the subject country have also increased in relation to domestic production in India. Landed price of imports from subject countries were significantly below the selling price and non-injurious price of domestic industry, resulting in significant price undercutting and price underselling. The landed prices of the dumped subject goods from the subject countries have shown a consistent decline (except during POI) in spite of the increase in the cost of production of the domestic industry and has caused price suppression. The effect of the significant increase in the volume of the subject goods along with significant price under cutting and price underselling has impacted the domestic industry adversely. It is noted that the domestic industry's market share has declined steadily after improving from base year to 2002-03. Even the market share of Indian industry has shown consistent decline during the injury investigation period. Even though parameters such as sales and production have not shown any decline, the capacity utilization has shown a decline after improvement. The dumping margin as determined from the subject countries is considered significant. Further, in spite of increase in production and sales, profits of the domestic industry per unit of sales declined in the POI after increasing in 2002-03. As a result of deterioration in profits, cash profits and return on

capital employed declined. On the basis of above, it is determined that the domestic industry has suffered material injury on account of dumped imports from subject countries.

H. CAUSAL LINK AND ANALYSIS OF OTHER FACTORS

Arguments of interested parties on absence of causal link.

80. The following factors suggest absence of causal link.

- a) Imports are not competing with the tyres produced by the domestic industry. The imports from subject countries have neither affected sales nor market share of the domestic industry. It has also not effected any reduction in the selling price which on the contrary has gone up intermittently. The tyres imported from China are used for tractors trailers and substitute for retraded tyres while the tyres produced and sold by the domestic industry are used by OEM and replacement of old tyres.
- b) The fact that domestic industry has been able to increase its sales and market share without dropping or cutting its prices clearly shows that there is no nexus between the alleged injury claimed by the domestic industry and tyres imported from China PR. The same is also further corroborated by the fact that domestic industry has not only able to sustain it dominant position in Indian market but also intermittently kept increasing price of subject goods.
- c) The sales of the domestic industry increased despite increased importation of subject goods compared to previous year.
- d) Though the volume of imports increased as compared to previous year, however, it continues to remain insignificant as compared to total production and total demand in India.
- e) The state of the balance sheet of companies in the domestic market shows that the alleged injury is due to competition, non availability of raw material and rapid increase in its price, export of natural rubber by domestic producers and imposition of anti dumping duties on the major raw material imported by the domestic industry. There was an oversupply in the market which might have caused alleged injury. There is an absence of dumping/injury & causal link.
- f) The Indian consumers have been shifting to radial tyres as they are best suited for highways and express ways. Indian producers have also identified the huge opportunities which radial tyres offer in Indian market and are also switching over to production of radial tyres. The consumers are switching over to radial tyres and demand of the same has been increasing. Indian producers are also shifting their production to the radial tyres and expanding their capacities for the production of radial

tyres. Thus there is a switch over from bias tyre to radial tyre which may be a cause of injury to domestic industry.

Examination by the authority.

81. a) The authority notes that used or retreaded pneumatic tyres of rubber fall under customs classification 4012, whereas new pneumatic tyres of rubber fall under customs classification 4011. The goods were reported for clearance under 4011 and not under 4012. The investigation has not shown that the imported product was meant for tractor trailer application or as a substitute for retreaded tyres. It is noted that the imported tyres were reported under classification meant for "new pneumatic tyres of rubber of a kind used in buses or lorries".
- b) As earlier analysed, it is incorrect to state that the domestic industry has been able to increase its market share. On the contrary, it is found that the market share of the domestic industry declined, whereas that of imports increased. The investigation has shown that the imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry, which led to decline in their market share, increase in inventories, imports preventing price increases, decline in profit/loss, return on investment and cash profits.
- c) Increase in the prices does not mean "no injury due to imports". On the contrary, the Rules clearly require the Authority to examine whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred, to a significant degree.
- d) Increase in sales despite dumping does not mean "no injury or no causal link". On the contrary, the Rules require the Authority to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Further, the Authority is required to examine whether the actual or potential sales or market share of the domestic industry declined. Thus, decline in market share in a situation where total sales are increasing implies injury being caused to the domestic industry.
- e) Though it is true that the volume of dumped imports were not very high as compared to production or consumption in India. It should be noted in this regard that rate of increase in imports was quite significant.
- f) Whether the injury has been caused by other factors or dumped imports, the Authority notes that there is no substantive evidence provided by interested parties to establish that other factors other than dumping have caused injury to the domestic industry. As regards the increase in the prices of inputs is

concerned, it is noted from available information that these input price increases were universal. As regards internal competition, it is noted that with the similar internal competition, the domestic industry was able to increase its profits earlier.

g) The Authority notes that the demand and sales of bias tyres over the period is increasing. Therefore even if the demand of radial tyre might have increased, it has not been established that radial tyres have affected the demand/sales of bias tyre.

82 Authority examined whether other parameters could have contributed to injury to the domestic industry. Following parameters were analyzed.

a) Imports from Third Countries:- Imports of subject goods from other countries are either negligible (de minimis) or the export price is significantly high. Imports from other countries do not appear to have caused injury to the domestic industry.

b) Contraction in Demand:- The demand for the subject goods has increased. Possible contraction in demand does not appear to have caused injury to the domestic industry.

c) Pattern of consumption:- No significant change in the pattern of consumption has been noticed. The product supplied by the domestic industry is directly competing with that of imported material from subject countries. Demand for the product under consideration has shown an increase and it does not appear that the pattern of consumption has caused injury to the domestic industry.

d) Conditions of competition:- No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices having caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of the Authority.

e) Developments in technology:- There appears to be no significant change in technology over the injury period which could have caused injury to the domestic industry, nor any evidence of developments in technology having caused injury to the domestic industry have been brought to the notice of the Authority.

f) Export performance of the domestic industry:- Export performance of the applicant has not deteriorated. In fact, export volumes of the domestic industry shows an increase. With regards to profits, export performance of the domestic industry has been segregated and only domestic performance considered while assessing injury for product concerned in the domestic market.

g) Productivity: - Productivity of the domestic industry has increased as a result of increase in production. Possible deterioration in productivity is therefore not a possible reason for injury to the domestic industry.

Conclusions on the Causal Link

83 Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated due to dumped imports from subject countries. This is established by the following:-

a) Landed price of imports from the subject countries were significantly below the selling price and cost of production of domestic industry causing significant price undercutting. As a direct consequence, the domestic industry was unable to achieve sales realization to the extent of necessary to reflect cost increases.

b) The positive price undercutting and consequent price suppression faced by the domestic industry resulted in deterioration in profits, cash flow and return on investments.

c) Significant positive price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject countries. As a direct consequence, while the market share of dumped imports in demand in India increased, that of domestic industry declined.

d) Existence of significant price undercutting and consequent decline in market share of the domestic industry resulted in a situation where the domestic industry was unable to increase its sales and production volumes in spite of higher market demand.

84 Given the above analysis which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

85 It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I. Indian Industry's interest & Other Issues

86 The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-

establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

87 The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the subject goods or the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. With a view to minimize the impact on the downstream industry, the Authority has considered it appropriate to recommend anti dumping duty based on the lower of the dumping and injury margins. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

J. Conclusions

88 The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a) The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
- b) The domestic industry has suffered material injury;
- c) The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from subject countries.

K. Recommendations

89 The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted a final investigation into dumping, injury and causal link between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having definitively established positive dumping margin against the subject country, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive duty is required to offset dumping and injury.

90. Therefore, Authority considers it necessary to recommend definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder.

91. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975. Accordingly, definitive antidumping duty equal to the difference between the amount mentioned in Col. 9 of the table below and landed value of imports is recommended from the date of imposition of provisional duty, on all imports of subject goods falling under chapter 40 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from the subject countries.

S. No	Tariff Item	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Reference price	Unit of measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	China PR	Any	Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.	Any	10.06	Per piece	US\$
2	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	China PR	Any	Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.	Any	3.92	Per piece	US\$
3	40112090	New/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	China PR	Any	Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.	Any	121.67	Per piece	US\$
4	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	China PR	Any	Any other than Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.	Any	10.06	Per piece	US\$
5	40129049	Tyre flaps of rubber	Any	China PR	Any	Any other than	Any	3.92	Per piece	US\$

		for buses and lorries				Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.				
6	40112090	New/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	China PR	Any	Any other than Shandong Jinyu Tyre Co Ltd.	Any	121.67	Per piece	US\$
7	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Any excluding Thailand	China PR	Any	Any	10.06	Per piece	US\$
8	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Any excluding Thailand	China PR	Any	Any	3.92	Per piece	US\$
9	40112090	New/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	Any excluding Thailand	China PR	Any	Any	121.67	Per piece	US\$
10	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Thailand	Any	Any	Any	10.06	Per piece	US\$
11	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Thailand	Any	Any	Any	3.92	Per piece	US\$
12	40112090	New/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	Thailand	Any	Any	Any	121.67	Per piece	US\$
13	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Any excluding China PR	Thailand	Any	Any	10.06	Per piece	US\$
14	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Any excluding China PR	Thailand	Any	Any	3.92	Per piece	US\$
15	40112090	New/unused	Any	Any	Thailand	Any	Any	121.67	Per	US\$

		pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"		excluding China PR					piece	
--	--	---	--	-----------------------	--	--	--	--	-------	--

For imports made in a combination of tyres, tubes and flaps, the reference price shall be the sum of the reference price of the parts of the combination.

92 Subject to the above, the Authority confirms preliminary findings vide Notification dated the 31st July 2006 vide 14/9/2005-DGAD.

93 An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

94 The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority